Fortnightly per copy Rs. 4/-

ओ३म्

18th September 2022

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org   Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

निज़ाम से मुक्ति के ७५वे वर्ष के संदर्भ में आज़ादी के आंदोलन में प्राणों की बलि देने वाले अमर वीरों को शत-शत प्रणाम

निज़ाम के अत्याचारों के शिकार शहीद दत्तात्रेय (उमरी), राधाकृष्ण जी (निज़ामाबाद), श्यामलाल जी (वीदर), शिवचन्द्र जी (हुमनाबाद), विश्वभगवान जी (लातुर), वेद प्रकाश जी (गुंजोटी)

जब निज़ाम ने सिर झुकाया

-पं. नरेन्द्रजी

निज़ाम सरकार की ओर से जब राज्य में राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक सुधारों की घोषणा १९ जुलाई को की गई तो 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' ने शीघ्र इस बात का आदेश दिया कि सत्याग्रही जन्थे जिन-जिन स्थानों पर हो नहीं ठहर जाएँ, यदि आवश्यकता हुई तो पुनः उन्हें सत्याग्रह के लिए आदेश दिया जाएगा।

आर्य समाज की ओर से आयोजित इस व्यापक सत्याग्रह को सफल बनाने में मध्य भारत के स्पीकर और 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली' के प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। उन्होंने समस्त भारत में भ्रमण कर लोगों को हैदराबाद राज्य की हिन्दू तथा आर्य जनता पर हो रहे निज़ामी शासन के शोषण तथा अत्याचारों से अवगत कराया। इसी प्रकार हैदराबाद तथा भारत के विभिन्न स्थानों में श्री भाई बन्सीलाल जी वकील ने भ्रमण करके जन-जागृति उत्पन्न की तथा लोगों को साहस व उत्साह के साथ संगठित किया। फलतः नवयुवक आगे आए और सत्यागरह में भाग लेकर जेल गए।

'सत्या ग्रह रक्षा-समिति' के संचालक लोहपुरुष पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज थे। अपने समस्त भारत का भ्रमण कर जनता एवं कांग्रेसी नेताओं को भी आर्य समाज के सत्याग्रह से परिचित कराया। आपके कुशल नेतृत्व से आर्य सत्याग्रह नियन्त्रण में अग्रसर हो सका। आपकी योग्यता ओर निष्ठा के परिणामस्वरूप सत्याग्रह सफलता को प्राप्त कर सका।

बारह हज़ार सत्याग्रही जेल में

हैदराबाद राज्य में नए सुधारों का मुसलमानों तथा उनके राजनैतिक संगठन 'मजलिसे इत्तेहादुल मुसलमीन' की ओर से पूरा विरोध किया गया और इन सुधारों को मुसलमानों के लिए अपर्याप्त, सीमित अपितु हानिकारक सिद्ध करने के लिए विभिन्न प्रदर्शन किए गए। आर्य समाज के सत्याग्रह से शासन अत्यन्त घबराया हुआ था। पिछले पच्चीस-तीस वर्ष के मध्य राज्य के पुलिस तता धर्मस्व-विभाग ने हैदराबद में आर्य समाजियों पर अत्याचार करके इन्हें मिटा देना का असफल प्रयत्न किया था। जब स्थिति गम्भीर हो गई तो आर्य समाज ने अन्ततः विवश होकर सत्याग्रह के अहिंसात्मक शस्त्र से शासन को पराजित करने का संकल्प कर लिया। इस समय तक, जबकि सुधारों की घोषणा हुई, बारह हज़ार सत्याग्रहियों से निज़ाम के जेल खाने भर चुके थे। इसके अतिरिक्त दो हज़ार सत्याग्रही श्री पंडित विनायकराव विद्यालंकार के नेतृत्व में सत्याग्रह करने की प्रतीक्षा में थे।

ब्रिटिश संसद् में

ब्रिटिस संसद् में 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह' से सम्बन्धित प्रश्न किए गए और लनदन में 'हैदराबाद सिविल लिबर्टीज़ कमेटी' स्थापित की गई, जिसके अध्यक्ष श्री सुब्बराव तथा मन्त्री श्री पी.डी. थामनकर थे। यह कमेटी हैदराबाद की नागरिक स्वतन्त्रताओं के लिए संघर्ष करती रही और प्रसिद्ध समाचार पत्र। मानचेस्टर गार्जियन' ने भी आर्य सत्याग्रह के प्रति रुचि व्यक्त की। कर्नल वेजुडवेन ने संसद् में यह प्रश्न उठाया कि हैदराबाद राज्य में सामाजिक स्वतन्त्रताओं पर क्या प्रतिबन्ध है तथा कितने सत्याग्रहियों को अब तक पकड़ा गया है? २६ जून को भारत मन्त्री ने इन प्रश्नों का उत्तर दिया जो एकदम मिथ्यापूर्ण था। इस सम्बन्ध में 'सार्वदेशिक सभा' ने भारत-मन्त्री लॉर्ड जेटलैण्ड तथा कर्नल वेजुडवेन को समुद्री तार द्वारा आर्य सत्याग्रह तथा निज़ाम सरकार की पाबन्दियों से सम्बन्धित सारी वस्तुस्थिति से अवगत कराया। ११ जुलाई १९३९ को श्री डी.आर. ग्रेनफ़ोल ने संसद् में सरकार से इस बात की माँग की कि हैदराबाद की स्थिति की खुली जाँच कराई जाए। किन्तु, भारत मन्त्री ने ऐसी कोई कार्यवाही करने की माँग को अस्वीकार कर दिया। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह से सम्बन्धित बहुत-सी बातें यूरोप तक पहुँच गई। भारत के विभिन्न जातियों के कुछ नेतागण एवं कई राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने निज़ाम के शासन के पक्षपात तथा उसकी सांप्रदायिकता का उल्लेख करते हुए इस बात पर बल दिया कि वर्तमान उन्नति के युग में धार्मिक तता सामाजिक स्वतन्त्रताओं पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं लगया जा सकता तथा इन स्वतन्त्रताओं को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज सत्याग्रह का जो आन्दोलन चला रहा है, वह सर्वथा उचित है।

सत्याग्रह का प्रभाव 'मजलिस' पर

आर्य समाज के सत्याग्रह से जहाँ निज़ाम सरकार को चिन्तित होना पड़ा, वहाँ 'मजलिसे इत्तहादुल मुसलमीन' पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। सुधारों को लागू करने का विरोध इसलिए किया गया जिससे कि 'मजलिस' को पहले की तरह आर्य समाज को पीछे करके इस्लामी तबलीग़ (प्रचार) का अवसर प्राप्त हो सके। उन्हें इस बात का भय था कि धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक स्वतन्त्रताओं के साथ हिन्दुओं को अपने उचित अधिकारों तथा ध्येय की सुरक्षा के लिए सुविधाएं प्राप्त हो जाएंगी। इन सुधारों के विरोध में 'मजलिस' तथा मुस्लिम पत्रों ने एंड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया और उनका निरन्तर प्रयत्न यही रहा कि आर्य समाज को उसके मूलभूत अधिकार प्राप्त न हो सकें। निज़ाम सरकार स्वयं यह नहीं चाहती थी कि आर्य समाज को आगे बढ़ने का अवसर मिले, पर सत्याग्रह की शक्ति व प्रभाव से वह विवश हो चुकी थी और उसके लिए अब कोई चारा नहीं रहा गया था। इसलिए उसे 'मजलिस' तथा मुसलमानों के विरोध को रद्द कर देना पड़ा। सत्याग्रह के बारे में पहले-पहले निज़ाम सरकार तथा 'मजलिसे इत्तेहादुल मुसलमीन' का यह विचार था कि इसे शक्ति तथा दबाव से विफल बनाया जा सकता है। इसलिए पुलिस की ओर से सत्याग्रह के बीच सत्याग्रहियों को भड़काने था उन्हें हिंसा पर उभारने का प्रयत्न किया जाता रहा जिससे कि अहिंसा की इस लड़ाई पर एक ज़बर्दस्त चोट लगाई जाए, किन्तु 'सार्वदेशिक सभा'

-शेष पृ. ३६ पर

हैदराबाद राज्य का राजनीतिक परिवेश और आर्य समाज

उन्नीस सौ के उपरांत, उन्नीस सौ से १९४० तक के दशकों में हैदराबाद राज्य में राजनीतिक उथल-पुथल होती रही। यद्यपि देश में, विशेष रूप से उत्तर भारत में, अंग्रेज़ों तथा उनकी सरकार के विरुद्ध आंदोलन हो रहे थे, किन्तु हैदराबाद में इस प्रकार का न तो कोई आंदोलन ही था और न ही किसी प्रकार की जागृति - सब खामोश तमाशाई थे। हाँ निज़ाम सरकार के विरुद्ध आर्य समाज के आंदोलन का श्रीगणेश हो चुका था। हैदराबाद के मुसलमान यह समझते थे कि हैदराबाद राज्य भारत का एकमात्र 'मुसलमान राज्य' है। क्योंकि यह राज्य तलवार के बल पर स्थापित किया गया था। आपको याद होगा कि प्रथम अफ़ज़ाह नवाब मीर कमरुद्दीन खान ने, जो दक्कन में मुगल सरकार के सुबेदार थे, दूरर्शिता का परचिय देते हुए दक्कन में अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी थी, क्योंकि मुगल साम्राज्य का पतन आरंभ हो चुका था, अंग्रेज़ अपने कदम जमा चुके थे और उत्तर भारत में नवाब का कोई भविष्य दिखाई नहीं दे रहा था। कमरुद्दीन खान निज़ाम उल्मुल्क ने शकरखेड़ा के युद्ध में यहाँ के सूबेदार मुबारिक खान को पराजित किया था। १८२४ में 'आसफ़िया साम्राज्य' की नींव डाली। इस परिवेश में हैदराबाद में मुसलमानों का यह सोचना कि हैदराबाद एक मुसलमान राज्य है, बड़ी हद तक वाजिब था। हिंदू, जो बहुमत में थे, इस राजनीतिक फेरबदल से दूर रहे, क्योंकि उनकी आवाज़ दबा दी गई थी। वह बेबस थे राजनीतिक रूप से कमज़ोर तथा सामाजिक रूप से निःसहाय। इसमें कोई शक नहीं कि हिंदू समाज का मध्यमवर्ग निज़ाम शासन के समर्थन में नहीं था और वह भी देश की स्वतंत्रता के सपने देख रहा था और इस दिशा में कुछ न कुछ अप्रत्यक्ष प्रयत्न भी कर रहे थे। आर्य समाज की स्थापना, 'आर्य प्रतिनिधि सभा, निज़ाम राज्य' के रूप में हो चुकी था। 'हैदराबाद स्टेट कांग्रेस' का आन्ध्र महासभा व कम्यूनिस्ट पार्टी १९३८ में उदय हो चुका था, 'महासभा' की ओर से बौठकों रहे थी फिर भी खामोश तमाशाई कुछ न कुछ क्रियात्मक कार्य करने की ओर अग्रसर था।

१९२७ में 'मजलिस इत्तेहाद -उल-मुसलमीन' का गठन हुआ। आरंभ में तो यह एक सामाजिक संगठन के रूप में कार्य करती रहा, किन्तु कुछ ही वर्षों में यह 'मुस्लिम लीग' के समान एक कट्टर पंथी संस्था के रूप में उभरा। इसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम सांप्रदायिकता को हवा देना था। वह हैदराबाद के मुसलमानों में यह विचार तथा चेतना पैदा करती रहा कि हैदराबाद राज्य मुसलमानों की जागीर है, उनकी धरोहर है। इस कारण वह स्वतंत्र रहेगा चाहे देश आज़ाद ही क्यों नहीं हो जाता। मजलिस इतनी शक्तिशाली हो गई थी कि उसका प्रभाव तथा दबाव निज़ाम पर भी पड़ने लगा था। राज्य के हर निर्णय में उनका हस्तक्षेप, उनकी मर्जी तथा आदेश अनिवार्य हो गया था। १५ अगस्त १९४७ को जब देश ने अपनी गुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ फेंका, तब भारत में फैले सैंकड़ों छोटे-बड़े राज्य रजवाड़े अपने भविष्य का सही निर्णय लेने लगे। विभाजन के उपरांत देश के लगभग सभी राज्य स्वतंत्र भारत संघ में शामिल हो गए और इस प्रकार उन तमाम राज्यों की अपनी-अपनी स्वतंत्रता एवं स्थिति समाप्त हो गई और वह देश की इस नई मुख्य धारा का सम्मानित एवं व्यावहारिक भाग बन गये। समस्या उत्पन्न हुई, केवल दो राज्यों से हैदराबाद तथा जुनागढ़। यह दोनों मुस्लिम राज्य थे और इन दोनों राज्यों के मुसलमान शासकों ने भारत संघ में सम्मिलित होने में कोई रुचि नहीं दिखलाई। मुस्लिम राज्य होने के कारण इनका कुछ इरादा अपनी अखंडता तथा स्वतंत्रता को कायम रखना था, अर्थात वह एक स्वतंत्र देश में एक स्वतंत्र राज्य की हैसियत से रहना चाहते थे, या फिर उनका झुकाव पाकिस्तान की ओर था। दराबाद के लिए यह समस्या जटिल थी, क्योंकि यह एक हिंदू बहुमत का प्रदेश था तथा इसकी भौगोलिक स्थिति इस पक्ष में नहीं थी। बात गंभीर थी तथा समस्या का समाधान शीघ्र ही संभव नहीं था। इस बीच जुनागढ़ को भारत संघ में शामिल कर लिया गया, अब केवल हैदराबाद एक ही राज्य था, जो भारत सरकार की हलक का काँटा बन गया था। ऐसी परिस्थिति में हैदराबाद राज्य में आर्य समाज की स्थापना और इस संगठन द्वारा चलाए गए आंदोलन की चर्चा अनिवार्य है।

युग पुरुष दयानंद सरस्वती ने बुधवार १० अप्रैल १८७५ को बंबई (आज के मुंबई में) में 'आर्य समाज' की स्थापना की थी। इस संगठन का लक्ष्य था सामाजिक कुरीतियों तथा धर्म के आडंबरपूर्ण कर्मकांडों के विरुद्ध जनजागृति उत्पन्न करना तथा पूरे देश में वैदिक मूल्यों के आधार पर एक जागरूक एकता स्थापित करना। लेकिन हैदराबाद में इस संगठन ने राष्ट्र की अस्मिता तथा धर्म की रक्षा के लिए जिस बलिदानी संघर्ष का उदाहरण प्रस्तुत किया, वह देश के सामाजिक इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने वाला एक अध्याय है।

हैदराबाद राज्य के धारूर गाँव (ज़िला बीड़) में सन १८९० ई. में आर्य समाज की स्थापना हुई। तत्पश्चत हैदराबाद शहर में आर्य समाज की स्थापना मार्च १८९२ में 'आर्य समाज सुल्तान बाजार' के नाम से हुई। यह क्षेत्र उस समय रेजिडेंसी की सीमा

में था। धारूर की अपेक्षा अधिक अनुकूल परिस्थितियां होने के कारण यहां आर्य समाज के बीज को अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित होने में अधिक सुविधा हुई। आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य हैदराबाद राज्य की जनता में सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक जागरूकता पैदा करना था। 'आर्य समाज, सुल्तान बाज़ार' के प्रथम अध्यक्ष पंडित कामता प्रसाद जी मिश्र थे। श्री लक्ष्मणदास जी प्रथम मंत्री चुने गये एवं पंडित विश्वंभरनाथ जी उपाध्यक्ष तथा श्रीनरसिमलु जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। पंडित आदिपुडि सोमनाथ राव जी और पंडित हरिहर देव जी उपदेशक नियुक्त हुए। पंडित आदिपुडि सोमनाथ राव जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' का तेलुगु में अनुवाद किया ।

आर्य समाज के कार्यों को चलाने के लिए पुतली बावली रोड पर एक मकान पांच रुपये किराये पर लिया गया। यह मकान सेठ जमनादास जी का था। इसके बाद हैदराबाद में सबसे पहले प्रकाशित होने वाला दैनिक समाचार पत्र 'मुशर-ए-दकन' के संपादक किशनराव जी ने हश्मतगंज में अपना घर छः रुपये किराये पर दिया, जहां समाज के साप्ताहिक सत्संग होते थे। उसी समय हैदराबाद के प्रसिद्ध वकील राय कुंवर बहादुर जी, आर्य समाज में सम्मिलित हुए और वैदिक सिद्धांतों के सहज अनुयायी बन गए।

१८९३ के आरंभ में आर्य समाज सुल्तान बाजार का प्रथम वार्षिकोत्सव 'राजा कंदास्वामी' के बाग में मनाया गया। इस अधिवेशन में आर्य समाज, बंबई के मंत्री सेवक लाल जी, पंडित बालकृष्ण जी शर्मा, उपदेशक स्वामी आत्मानंद सरस्वती सम्मिलित थे। समाज के पदाधिकारियों में पंडित कामता प्रसाद जी मिश्र और नरहर देवजी मंत्री चुने गऐ।

पंडित शिव शर्मा जी तथा पंडित बालकृष्ण जी शर्मा ने हैदराबाद में चार महीने वैदिक धर्म का प्रचार किया, जिसके फलस्वरूप सनातनियों में एक हलचल मच उठी और एक ज्योतिषि पंडित हरिकेशव जी पंचपक्षी ने सनातन धर्म की आड़ लेकर 'पुरुषोत्तम समाज' की स्थापना की। आर्य समाजियों तथा सनातन धर्मियों में अपने-अपने सिद्धांतों तथा आदर्शों को ही सही मनवाने की होड़ लग गयी। सनातन धर्मियों ने सनातन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान पंडित गोकुल प्रसाद जी हस्तजवां को आर्य समाजियों से शास्त्रार्थ करने हैदराबाद आमंत्रित किया।

पहला शास्त्रार्थ :- सनातन धर्मियों से पहला शास्त्रार्थ राजा शिवराज धर्मवंत बहादुर की अध्यक्षता में उन्हीं के निवास स्थान पर हुआ। पंडित गोकुल प्रसाद जी की आर्य समाज पर टीका-टिप्पणी के उपरांत जब पंडित बालकृष्ण जी शर्मा उत्तर देने लगे, तो अध्यक्ष महोदय ने पक्षपात से काम लिया और उन्होंने इसकी अनुमति नहीं दी। परिणाम स्वरूप यह शास्त्रार्थ किसी निर्णय के बिना ही हुल्लड़ के साथ समाप्त हो गया। इसके उपरांत ११-९-१८९४ को राजा मुरली मनोहर बहादुर ने दोनों दलों के बीच एक शास्त्रार्थ कराने का प्रयत्न किया। आर्य समाज की ओर से स्वामी विश्वेश्वरानंद जी और स्वामी नित्यानंद जी महाराज को आमंत्रित किया गया। इन दोनों के व्याख्यानों का सनातनी विद्वानों तथा मुसलमानों दोनों ने घोर विरोध किया और निज़ाम के पास शिकायत भी की, जिसके फलस्वरूप दोनों स्वामी को हैदराबाद नगर से चले जाने का आदेश दिया गया। इस आदेश के विरोध में लाला लाजपत राय, महाराजा बडोदा, महाराजा शाहपुरा, महाराजा ईडर आदि ने निज़ाम को तार दिया, परंतु निज़ाम की सरकार ने इस विरोध की कोई परवाह न की।

दूसरा शास्त्रार्थ :- पंडित ज्वाला प्रसाद जी शर्मा, उत्तर प्रदेश, पंडित पूर्णानंद जी, पंजाब, आर्य समाज के ११वें अधिवेशन पर पधारे थे। उस समय हैदराबाद में अच्युत स्वामी के साथ यज्ञ में 'पशुबलि वेद-विरुद्ध है' विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज के पंडितों ने वेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों के प्रमाणों से सिद्ध किया कि यज्ञ में पशु-हिंसा निषिद्ध है। इस शास्त्रार्थ का जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

तीसरा शास्त्रार्थ :- आर्य समाज रेज़िडेंसी (वर्तमान आर्य समाज मंदिर, सुल्तान बाजार) के १२वें अधिवेशन पर अधिकारियों को इस बात का पता चला कि कृष्णा नदी के तट पर सोम यज्ञ हो रहा है, जिसमें बकरे की आहुति दिए जाने का निश्चय किया गया है। यह जानकर आर्य समाज ने पंडित सोमनाथ राव जी को वहां भेजा। इस यज्ञ के ब्रह्म अच्युत स्वामी जी से राज नरसिंह गिरिजी की कोठी में शास्त्रार्थ होना निश्चय हुआ। पं. तुलसीराम जी, पं. ज्वाला प्रसाद जी, पं. आर्य मुनि जी, पं. रुद्रदेव जी तथा पं. पूर्णानंद जी आदि विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया गया। एक मास तक वाद-विवाद चलता रहा। किंतु शास्त्रार्थ आगे न हो सका।

इसी बीच १८९४ में स्वामी नित्यानंद हैदराबाद पधारे। उन्होंने आर्य समाज से संबंध रखने वाले विभिन्न विषयों पर ३० व्याख्यान दिए। स्वामी जी के ये व्याख्यान प्रायः हैदराबाद नगर के शिक्षित एवं सुप्रसिद्ध, उच्च पदों पर कार्यरत, प्रतिष्ठित व्यक्तियों की अध्यक्षता में होते थे। इनमें अधिक व्यक्ति मुसलमान भी थे, जैसे नवाब जफरजंग बहादुर, नवाब इमादुल्मुल्क, नवाब सैय्यद हुसैन बिलगिरानी आदि। स्वामी जी तथा दूसरे विद्वानों के भाषणों से प्रभावित होकर अमीर-ए-पायगाह नवाब जफरजंग बहादुर ने इन विद्वानों को अपने यहां आमंत्रित किया, दावत दी और इन्हें ५०० रुपये का पारितोषिक भेंट किया।

शास्त्रार्थ में अपनी बात न मनवा सकने के कारण सनातनधर्मियों तथा पौराणिक पंडितों ने मुसलमानों के उच्च अधिकारियों तथा मुस्लिम मतावलंबियों को सत्यार्थ प्रकाश दिखाकर भड़काना एवं बहकाना शुरू कर दिया। इन पंडितों के विद्वेषपूर्ण प्रचार का प्रभाव यह हुआ कि शासन की ओर से निज़ाम राज्य की सीमा में आर्य समाज स्थापित न करने का आदेश दिया गया। आर्य समाज के विरुद्ध निज़ाम सरकार का यह प्रथम और हल्का प्रहार था।

सन् १८९७ में जिन सज्जनों ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अधिक सेवाएं दीं, उनमें महात्मा बेनी माधव जी, पं. योगानंद जी, पं. केशवराव जी कोरटकर, वकील हाईकोर्ट, राजा गोविंद प्रसाद जी, श्री इंद्रजीत जी और भवानी शंकर जी के नाम उल्लेखनीय हैं। 'समाज' के जीवन के सातवें वर्ष राय कुंवर बहादुर प्रधान और पं. कामता प्रसाद जी मंत्री चुने गये। १९०० ई. में सदस्यों की भर्ती का कार्य संतोषजनक रहा। गोस्वामी ज्ञानगीर जी नरसिंह गीरजी की कोठी (वर्तमान प्रतापगीरी जी की कोठी - ई.एन.टी. अस्पताल) में समाज के उत्सव किये जाने लगे।

हरिजनों का सुधार :- आर्य समाज ने ऊँच-नीच एवं जात-पात के बंधनों को समाप्त करने का बीड़ा उठाया। हैदराबाद में दलित जातियों की अत्यंत दयनीय स्थिति को आर्य समाज ने महसूस किया तथा हरिजनों के सुधार का रचनात्मक कार्य आरंभ किया गया।

आर्य समाज की लोकप्रियता :- १८९२ से १९०० तक ८-९ वर्ष की अवधि में आर्य समाज की जड़ें मजबूत हो चुकी थीं। उसका उद्देश्य हिन्दू समाज का सुधार करके उसे वैदिक धर्म के सीधे रास्ते पर चलाना तथा बिना किसी भेदभाव के सबकी सेवा करना था। आर्य समाज की मानव कल्याण एवं सेवा भावना सक्रिय रूप से शनैः शनैः स्पष्ट होने लगी।

स्त्रियों में जागृति हेतु महिला सभा की स्थापना की ओर भी ध्यान दिया गया। समाज की ओर से आर्य कन्या पाठशालाएं एवं रात्रि पाठशालाएं स्थापित की गयीं। पहला विद्यालय देवीदीन बाग में स्थापित किया गया। १९०१ में 'स्त्री समाज' के नाम से एक महिला सभा स्थापित की गयी। १९०१ में सिकंदराबाद में आर्य समाज की स्थापना की गयी। इस कार्य को पूरा करने में श्री आदिपूडि सोमनाथ राव जी श्याम राव जी, वासुदेव राव जी, मुदलियार के नाम उल्लेखनीय हैं। मुंशीराम जी ने समाज-मंदिर के निर्माण के लिए २५ हजार रुपये की भूमि दान की। आज यहां जो एक सुंदर भवन दिखायी दे रहा है, उसके निर्माण में सर्वश्री वी.वी. गुरुमूर्ति जी, राम रखा जी, पं. मनोहरलाल जी तथा बी.आर. लक्ष्मैया जी का विशेष सहयोग प्राप्त रहा।

पिछले युग में आर्य समाज की स्थापना के साथ जिन प्रसिद्ध व महान पुरुषों का संबंध रहा, उनमें स्व. दामोदर सातवलेकर जी, पं. धारेश्वर जी, पं. नरदेव जी शास्त्री, पं. गया प्रसाद जी आर्य, कामता प्रसाद जी तथा चंदूलाल जी के नाम विशेपकर उल्लेखनीय हैं, जो अपना ऐतिहासिक महत्व रखते हैं।

१८९२ में ही केशवराव कोरटकर आर्य समाज, सुल्तान बाजार के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और १९३२ ई. में मृत्युपर्यंत इसके प्रधान तथा प्राण बने रहे। 'आर्य प्रतिनिधि सभा' ने तेलुगु में 'सत्यार्थ प्रकाश' का अनुवाद करवाया, जो १९१६ से आरंभ होकर ४-४-१९३१ तक चलता रहा।

हैदराबाद राज्य के विभिन्न स्थानों में आर्य समाज स्थापित करने का अभियान शुरू हुआ। १९२५ में गुलबर्गा में आर्य समाज स्थापित हुआ। १९२९ में नलगोंडा में आर्य समाज स्थापित हुआ। १९२७ में महाराजगंज नामक आर्य समाज नामपल्ली रेलवे स्टेशन के निकट स्थापित हुआ। १९३० में एक अन्य समाज धूलपेट (ध्रुवपेट) में स्थापित किया गया। इसके प्रधान कार्यकर्ता ठाकुर उमराव सिंह जी और ठाकुर सूरज सिंह थे। १९३० में ही श्रीमंगल देव और कतिपय उत्साही व्यक्तियों के प्रयत्न से राज्य के विभिन्न जिलों और ताल्लुकों में आर्य समाज की २५-३० शाखाएं स्थापित हो गयीं। १९३३ में रायचूर तथा लातूर में आर्य समाज की शाखाएं स्थापित हुईं। १९३४ में काचीगुड़ा में एक आर्य समाज स्थापित हुआ। १९३५ में बीदर जिले में साकोल गांव में एक समाज की स्थापना हुई।

७-१२-१९३४ से आर्य समाज के उर्दू साप्ताहिक पत्र, 'वैदिक आदर्श' का प्रकाशन आरंभ हुआ, जिसके सम्पादक श्री चन्दुलाल जी थे, तथा सम्पादन पं. नरेंद्र के जिम्मे था। वैदिक आदर्श का प्रकाशन राज्य की मुस्लिम पत्रकारिता के लिए चैलेंज था एवं दुःख तथा शोक का कारण भी। रहबर-ए-दकन, सुबह-ए-दक्कन तथा अलआज़म जैसे सांप्रदायिक समाचारों के हिन्दुओं पर अश्लील आक्षेपों का उत्तर गंभीरता पूर्वक वैदिक आदर्श देता था।

द्वितीय युग :- ४ अप्रैल १९३१ को हैदराबाद राज्य के आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना के साथ इस प्रदेश के इतिहास में आर्य समाज के दूसरे युग का श्रीगणेश होता है। इसी वर्ष संपन्न चुनाव में अध्यक्ष होईकोर्ट के जज केशव राव, मंत्री चंदूलाल आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री विनायक राव विद्यालंकार चुने गए।

इस दौर (अवधि) में कई स्थानों पर आर्य समाज की शाखाएं स्थापित की गयीं। १९४० में सूर्यपेट तथा खम्मम में तथा वरंगल में १-१०-१९४० को बंसीलाल तथा श्यामलाल सदृश कर्मठ कार्यकर्ताओं और प्रचारकों के प्रयत्न का ही यह परिणाम था कि १९४१ तक हैदराबाद राज्य में १४५ आर्य समाज स्थापित हो गये थे।

तीसरा युग :- १९४० से १९४८ तक आर्य समाज की प्रगति का तीसरा युग था। इस युग में न केवल आर्य समाज का और विस्तार हुआ, अपितु हैदराबाद के स्वतंत्रता संग्राम में समाज ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, इस युग का मुख्य योगदान 'सत्याग्रह' था। हैदराबाद में सत्याग्रह शुरू करवाने का श्रेय श्री बंशीलाल को दिया जाता है। वह हैदराबाद को निज़ाम सरकार की नादिरशाही धार्मिक पाबन्दियों की ओर सार्वदेशिक सभा का ध्यान निरन्तर आकृष्ट करते रहे। श्री बंसीलाल के अनुज श्यामलाल आर्य समाज के धर्म प्रचार के मूर्तिमान आदर्श थे। आर्य समाज का सत्याग्रह आंदोलन हैदराबाद के मुक्तिसंग्राम का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। निज़ाम सरकार तथा पुलिस के जुल्म, रज़ाकारों के अमानवीय अत्याचारों और कासिम रजवी के विषैले भाषणों के विरुद्ध सत्याग्रहियों ने कमर कस ली थी। उन्होंने अपने भाई बधुओं की हत्या देखी, अपने घरों व जायदादों को

जलता देखा। अपनी माओं, बहनों तथा बेटियों की बेबसी तथा अनादर देखा, किन्तु वह अपने मार्ग पर डंटे रहे। अपने धर्म क्षेत्र तथा कर्मभूमि को कभी न त्यागा निरन्तर आग्रह और अनुरोध करने पर भी निज़ाम सरकार ने जब आर्य समाज की गतिविधियों व धार्मिक कार्यों में हस्तक्षेप करना बंद नहीं किया और समाज की मांग को मानने से सर्वथा उपेक्षा की तो विवश होकर आर्य समाज को सत्याग्रह का मार्ग अपनाना पड़ा। सत्याग्रह आरम्भ करने से पूर्व राज्य सरकार की सेवा में १४ मांगे प्रस्तुत की गई-जैसे पाठशालाओं पर रोक लगाने वाले आदेश की समाप्ति, धार्मिक त्यौहारों पर प्रतिबंध वापिस लेने की मांग, आर्य समाजी समाचारपत्रों के प्रकाशन पर रोक न लगाना, हवन कुंडों की अनुमति, तथा राजकीय सेवा में आर्य समाज पर जुल्म आदि।

हैदराबाद में स्थानीय सत्याग्रह २९ अक्टूबर १९३८ को आरंभ हुआ जिसे आर्य रक्षा समिति ने शुरू किया था। प्रथम सत्याग्रह जत्थे के नेता श्री पं. देवीलालजी थे। उनके नेतृत्व में सर्व मुन्नालाल मिश्र, मदनमोहन, एन.देवैया, सदाशिव राव एवं राजैया ने सत्याग्रह में भाग लिया। देखते ही देखते राज्य के विभिन्न स्थानों पर सत्याग्रह आग की तरह फैल गया और कुल मिला कर सात सौ सत्याग्रही राज्यभर में सत्याग्रह कर कारावास को अपना आवास बना चुके थे। इसी संदर्भ में अब सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान पूज्य महात्मा नारायण स्वामी ने जनता से सत्याग्रह के बारे में मत लेने के लिए शोलापुर आर्य-सम्मेलन आयोजित किया गया, जो २३-१२-१९३८ को संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में १३ प्रस्ताव पारित किए गए, जिसमें राज्य सरकार से कई मांगे की गई। इसी सम्मेलन में घोषणा की गई कि हैदराबाद में आर्य समाज की वर्तमान लड़ाई न तो राजनैतिक है और न साम्प्रदायिक अपितु वह केवल नागरिकों की धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति तक ही सीमित है। आर्य सम्मेलन के इस निर्णय के साथ समस्त भारत के कोने-कोने से हैदराबाद को सत्याग्रहियों के जत्थे भेजने की तैयारियां आरंभ होने लगी और देश के कोने-कोने में उत्साह की लहरें उमड़ने लगी। निज़ाम सरकार यदि चाहती तो वह आर्य समाज की शिकायतों पर विचार कर सकती थी, किंतु यह दुर्भाग्य तथा खेद की बात है कि सरकार ने अपने घमंड तथा हठधर्मी के कारण मांगों को अस्वीकार कर दिया। इस निर्णय से निराश होकर आर्य समाज ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए बड़े स्तर पर सत्याग्रह का संकल्प लिया।

आर्य समाज के इस सत्याग्रह आंदोलन पर भारत के महान नेताओं ने अपने विचार प्रकट किए। विश्वकवि रविंद्रनाथ ठाकुर ने अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा- **'आर्य समाज की मांगें वास्तविकता पर आधारित हैं। मैं हैदराबाद राज्य सरकार से आशा करता हूं कि वह इन लोगों की मांगों को स्वीकार कर सत्याग्रह को समाप्त करने की दिशा में कदम उठायेगी।'**

महात्मा गांधी ने इस सत्याग्रह के बारे में कहा, 'हैदराबाद में आर्य समाज का संघर्ष केवल धार्मिक रूप रखता है।'' पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी सम्मति इस प्रकार दी, 'हैदराबाद में धार्मिक पाबन्दियां समाप्त की जानी चाहिए। हर एक को धार्मिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। 'वीर सावरकर ने कहा, 'आर्य समाज का सत्याग्रह वास्तविकता पर आधारित है। समस्त हिंदुओं को इसमें भाग लेकर निज़ाम सरकार से टक्कर लेनी चाहिए।' मौलाना आजाद का विचार था, 'हैदराबाद में आर्य समाज का सत्याग्रह एक मजहबी हैसियत रखता है। मैं उन लोगों से हमदर्दी रखता हूं जो अपने हकों को हासिल करने के लिए जुल्म सह रहे हैं।' ऐसे ही विचार आचार्य कृपलानी तथा श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय ने भी व्यक्त किए। इस प्रकार आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह को सारे भारत का नैतिक समर्थन प्राप्त था।

सत्याग्रह के प्रथम अधिनायक थे महात्मा नारायण स्वामी जी तथा इनके साथ थे गुरुकुल के ३५ ब्रह्मचारी। फरवरी १९३९ के पहले सप्ताह में आर्य समाज, सुल्तान बाजार में सत्याग्रह किया गया। सरकार ने ८ फरवरी को इन सत्याग्रहियों को छः महीने के कठोर कारवास का दंड दिया।

दूसरे अधिनायक थे राजस्थान के आर्य समाजी तथा नेता श्री कुँवर चाँदकरण शारदा। आपको भी सत्याग्रह के जुर्म में १३ महीने कारावास का दंड दिया गया। तीसरे अधिनायक थे लाला खुशाल चंद (आनंद स्वामी सरस्वती) चौथे अधिनायक उत्तर प्रदेश के राजगुरु धुरेंद्र शास्त्री थे। २२ अप्रैल को आपने एक स्पेशल ट्रेन द्वारा अपने ५३१ साथियों के साथ गुलबर्गा पहुँचकर सत्याग्रह करने की घोषणा की। उसी दिन आपको पकड़ लिया गया और इन सबको दो वर्ष की कठोर कारावास की सज़ा दी गई।

पांचवें अधिनायक के रूप में बिहार आर्य समाज के प्रधान श्री वेदव्रत उर्फ स्वा स्वामी अभेदानंद को नियुक्त किया गया। आपने ५३४ सत्याग्रहियों के साथ सत्याग्रह में भाग लिया आपको और आपके साथियों को भी २ वर्ष के कारावास का कठोर दंड दिया।

छठे अधिनायक बने 'प्रताप' दैनिक के संचालक महाशय कृष्णजी, जो औरंगाबाद पहुंचे। आपके साथ विभिन्न प्रांतों के लगभग १००० सत्याग्रही थे। ६ जून १९३९ को औरंगाबाद में सत्याग्रह करते हुए पुलिस ने इन सबको पकड़ा तथा वहीं कारावास का दंड दिया गया।

२३ जून १९३९ को सत्याग्रह के सातवें अधिनायक गुजरात के पं. ज्ञानेन्द्र जी ने अपने १७० साथियों के साथ सत्याग्रह किया।

२ जुलाई को हैदराबाद के पं. विनायकराव जी विद्यालंकार ने आठवें अधिनायक की जिम्मेदारी उठाई।

सत्याग्रह रक्षा-समिति के संचालक लोह पुरुष पूज्य स्वामी स्वतंत्रानंद जी महाराज ने समस्त भारत का भ्रमण कर जनता को आर्य समाज के सत्याग्रह से परिचित करवाया। आपकी योग्यता तथा निष्ठा के परिणामस्वरूप सत्याग्रह सफलता को प्राप्त कर सका। सत्याग्रह के फलस्वरूप बारह

हजार सत्याग्रहियों से निज़ाम के जेलखाने भर चुके थे, इसके अतिरिक्त २ हजार और सत्याग्रही जेल जाने के लिए तैयार थे।

ब्रिटिश संसद में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह से संबंधित प्रश्न किये गए। संसद के कई सदस्यों ने राज्य में सामाजिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने, सत्याग्रहियों की संख्या, निज़ाम सरकार की पाबन्दियों तथा राज्य के बिगडते हुए राजनीतिक हालात पर खुली जांच करवाने की मांग की।

आर्य समाज के सत्याग्रह से जहां निज़ाम सरकार को चिन्तित होना पड़ा, वहीं 'मजलिस-इत्तेहादुल मुस्लमीन' पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। आर्य समाज के 'सुधारों' का मजलिस ने कड़ा विरोध किया। आर्य समाज की ओर से जिन मांगों की ओर निज़ाम का ध्यान आकर्षित किया गया उनमें आर्य समाज के प्रचार पर रोक न लगाने, हवन कुंडों तथा यज्ञशालाओं का निर्माण, आर्य समाज के जलसों तथा जुलूसों पर से प्रतिबंध उठाना, धार्मिक तथा सांस्कृतिक भाषणों पर कोई प्रतिबंध न हो... आदि शामिल थी। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य जनता का लगभग दस लाख रुपया व्यय हुआ। इस पूरी राशि को श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त हैदराबाद शासन से वसूल करना चाहते थे। उन्होंने २६ जून १९३९ को महात्मा गांधी से भेंट की और सारे मामले से अवगत करवाया। महात्माजी संतुष्ट हुए तथा एक पत्र हैदराबाद के प्रधानमंत्री सर अकबर हैदरी को लिखा जिसमें आर्य समाज की जायज मांगों को मान लेने तथा दस पंद्रह लाख रुपए देने की बात लिखी गयी। इसके परिणाम स्वरूप हैदराबाद सरकार को झुकना पड़ा-लगभग १५ लाख रुपया आर्य समाज को दिया गया और कई मांगों को मानते हुए हजारों सत्याग्रहियों तथा आर्य बन्दियों को मुक्त किया गया।

१९३८-३९ में, प्रदेश की जनता पर, विशेषकर हिन्दु जनता पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ और जनता के नागरिक व धार्मिक अधिकारों के लिए चलाए गए आर्य सत्याग्रह आंदोलन के सफलता पूर्वक समाप्त होने के बाद आर्य समाज ने दूरदृष्टि से व राजनैतिक जागृति पैदा करने के उद्देश्य से राष्ट्रभाषा हिंदी को प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाकर जस्टिस केशवराव कोरटकर की स्मृति में नारायणगुडा केशव मेमोरियल पाठशाला की स्थापना की। प्रांत भर में कई पाठशालाएं, रात्री पाठशालाओं तथा व्यायामशालाओं को स्थापित किया। दूसरी ओर जनता में विजय की भावना के साथ आंदोलन का उत्साह बने रहे इसके लिए विजय के रूप में १९३९ से दशहरे के दिन विजयोत्सव जुलूस निकालना प्रारंभ किया। १९३८-३९ के आर्य सत्याग्रह में सरकार ने आर्य समाज की सारी मांगो को मान लेने के बावजूद जनता पर जुल्म ढाना बंद नहीं किया साथ ही धीरे-धीरे 'मजलिस इत्तेहादुल मुस्लमीन के नेता बहादुर यार जंग के नेतृत्व में मुसलमानों को लाम बंद करने के लिए तथा कमजोर बर्ग के हिन्दुओं को (विशेष कर दलितों को) मुसलमान बनाकर अपनी शक्ति बढाने के लिए प्रयास शुरू कर दिए। निज़ाम ने व उसके प्रशासन ने इस बात पर पूरा जोर दिया कि हर मुसलमान अपने-आपको 'अनअल मलिक' (हम यहाँ के बादशाह हैं) की भावना से पीछे न हटे और आगे-आगे एक स्वतंत्र, सशक्त मुस्लिम राज्य कायम हो जाए।

इस सारे परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज ने राजनीतिक जागृति पैदा करने के लिए अत्याचारों के खिलाफ अपने हक़ों की लडाई के नाम पर हर वर्ष बड़े-बड़े सम्मेलनों को आयोजित करने का फैसला लिया। १९४०-४१ के दौरान हुकूमत ने मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन को परोक्ष रूप से हिन्दु जनता के खिलाफ द्वेष पूर्ण उत्तेजक भाषण देने की पूरी छूट दे दी। सरकार के इस पक्षपात पूर्ण व्यवहार से मुस्लिम के गुंडो ने आर्य समाजियों पर खुल्लम खुल्ला आक्रमण करना प्रारंभ कर दिया। बाहर से प्रकाशित होने वाले आर्य समाजी पत्रों का प्रवेश बंद कर दिया। सभा के पत्र 'दिग्विजय' को छापने से रोका गया। हुकूमत का अत्याचार पुनः चरम अवस्था तक जाने लगा । औराद शाहजनी जिला बीदर में कुछ धर्मान्ध मुसलमानों ने दंगा आरंभ किया। बाजार में गोलियां चलाई गई और दुकानों में आग लगा दी। एक हिन्दू की हत्या भी कर दी गई। बहुत सारे घायल हुए। वहां के प्रमुख कार्यकर्ता श्री देश बंधुजी व उनके साथियों को गिरफ्तार किया गया तथा कईयों को लम्बी सजाएं दी गई । परिणाम स्वरूप प्रतिरोध के लिए आज़ादी के नारे को बुलंद करते आर्य समाजियों ने १९४२ में पंडित विनायक राव जी की अध्यक्षता में उदगीर में प्रथम आर्य सम्मेलन मनाने का निश्चय किया। १२, १३ फरवरी १९४२ को आयोजित इस सम्मेलन में २६ प्रस्ताव स्वीकृत हुए। इनमें से कुछ प्रस्तावों द्वारा कुछ मांगों को दुहराते हुए हुकूमत पर इस बात का दबाव डाला गया कि सत्याग्रह के बाद किए गए समझौते का उल्लंघन हो रहा है अतः अत्याचार और-प्रतिबंधों को समाप्त किया जाए और मांगों के पूरी न होने पर आंदोलन को तीव्र किया जाएगा। सरकार ने उपेक्षा ज़ारी रखी। परिणाम स्वरूप १० दिसंबर को गुलबर्गा में मुसलमानों ने हिन्दुओं की दुकानों व गोदामों को लूट लिया। नागर कर्नूल और हिंगोली में आक्रमण हुए पर पुलिस ने उल्टे आर्य समाजियों पर अभियोग चलाए। जोगीपेट तथा तेरखेडा में दंगे हुए तथा ३ मार्च १९४२ को हुमनाबाद में होली जुलूस के दिन आर्य समाज के क्रांतिकारी कार्यकर्ता श्री शिवचंद्र की हत्या कर दी और उनके साथ और चार युवकों को भून डाला। लूट मार और अग्निकांड भी हुआ। आर्य समाजियों ने इन सबका डंटकर मुकाबला किया और जनता के आक्रोश को देखते हुए उन्हें राजनीतिक ढंग से आंदोलन के लिए लामबंद करने हेतु १९४३ में निज़ामाबाद मे दूसरे आर्य सम्मेलन के आयोजन की घोषणा कर दी। पंडित गणपत शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन में २५००० आर्य स्वंय सेवकों की सेना तैयार करने का निर्णय लिया गया तथा जन समर्थन को राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल करने के लिए एक सौ रात्री पाठशालाएं खोलने का निर्णय भी लिया

गया। गुरुकुल घटकेश्वर में एक उपदेशक मंडल केन्द्र तथा राज्यभर में ३६ उत्सव और अनेकों स्थानों पर बैठकों का आयोजन कर आंदोलन में गरमाहट पैदा की गई। आंदोलन की गति को दिन प्रतिदिन तेज करते हुए १९४४ में नारायण पेट में तृतीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में सरकार ने जुलूस की अनुमति नहीं दी पर जन समूह ने सरकारी आदेशों की अवहेलना की और हज़ारों की संख्या में लोग जुलूस में शामिल हुए। जिधर देखो उधर जन समूह ही जन समूह उमड़ पड़ा था। गांवों के गांव इसमें शामिल होने के लिए आए थे। इस सम्मेलन से आंदोलन की पकड़ मज़बूत हुई और सरकार घबराहट महसूस करने लगी। इन्हीं दिनों 'सिन्ध' की मुस्लिम लीग सरकार ने 'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबंध लगाया जिसके परिणाम स्वरूप हैदराबाद राज्य में भी रोष और खलबली मची। आंदोलन चलता रहा। इसी साल अर्थात १९४४में निज़ामाबाद में साम्प्रदायिक दंगा हुआ और मुसलमान गुंडों ने कर्मठ आर्य समाजी कार्यकर्ता श्री राधाकृष्ण मोदाणी की हत्या कर दी। इसी प्रकार गुंजोटी में वेद प्रकाश की, बसवकल्याण में धर्म प्रकाश की भाई श्यामलाल जी की तथा विष्णु भगवंता की हत्या की? परिणाम स्वरूप आंदोलन उग्र और तीव्र होता गया

१९४५ में नलगोंडा में उपदेशक विद्यालय की स्थापना की गई। पं. महेन्द्र देव जी ने निज़ाम की हुकूमत की साम्प्रदायिक नीति और पुलिस अत्याचारों को आर्य समाज में जनता के सम्मुख ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया कि जनता में जान आ गई और लोग एक आदेश पर प्राणों को न्यौछावर करने के लिए तैयार हो गए। इस सबके कारण निज़ाम की पुलिस ने आर्य समाजियों से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर मौका तलाशना शुरू कर दिया। इन्हीं दिनों आर्य समाजियों ने नारायणलाल पित्ती की अध्यक्षता में गुलबर्गा में चतुर्थ आर्य महासम्मेलन के आयोजन की घोषणा की। २२ से २४ अप्रैल १९४५ के दिनों में गुलबर्गा में संपन्न हुए इस सम्मेलन में पुलिस ने भीषण दंगा पैदा कर दिया। नाना प्रकार के उपद्रव खड़े किये गये। उपद्रवों से तंग आकर सम्मेलन के कार्यकर्ता पंडाल से बाहर जब पुलिस अधिकारियों से बात कर रहे थे, तो अधिकारियों की उपस्थिति में आर्य नेता पं. नरेंद्र जी, पं. गणपत शास्त्री व पंडित विनायक रावजी को इतनी बेरहमी से पीटा कि नरेन्द्र जी की पैर की हड्डी टूट गई। पं. गणपत शास्त्री और हीरालाल जी बुरी तरह से घायल हुए। सरों से खून बहने लगा फिर क्या था समाचार शहर में आग की तरह फैला फिर शहर भर में दंगे शुरू हो गए। जहाँ देखो वहाँ रक्तपात, रात भर अशांति, बड़ी भयंकर व नाज़ुक हालत से जनता वहाँ से निकल पाई। इस घटना से हुकूमत की काफी बदनामी हुई। पं. नरेंद्र जी अस्पताल में ही थे पर उन पर भाषणबंदी का हुक्म लगा दिया गया और शहर न छोड़ने के आदेश जारी हुए ऐसी विकट परिस्थितियों में जनता का धैर्य न टूटे और पूरा जोश-खरोश बनाए रखने के लिए हौसला कायम रखने के लिए १९४६ में वरंगल में पाँचवा महासम्मेलन मनाए जाने की घोषणा की गई। इस सम्मेलन के बाद सरकार को पता चला कि आर्य समाज और उसके आंदोलन को दरकिनार नहीं किया जा सकता अतः सरकार ने पंडित नरेन्द्र जी समेत अन्य नेताओं पर से प्रतिबंध हटा लिया। इन ६-७ वर्षों के पूरे अंतराल में दशहरे के अवसर पर निकलने वाले जुलूसों को रोकने के लिए बहुतेरी कोशिश होती रही पर सरकार के हर जोर-जुल्म से टक्कर लेती हुई जनता इस जुलूस में हजारों-हजारों की संख्या में उपस्थित होकर अपनी शक्ति का, अपनी आजादी की आकांक्षा को प्रदर्शित करती रही, इसके साथ ही दिन व दिन संगठन को मजबूत कर आंदोलन को १९४६ में आर्य भानु पत्रिका आरंभ कर दी गई। देश के आज़ादी के दिन जैसे-जैसे नजदीक आने लगे वैसे निज़ाम की हुकूमत एक निरंकुश फासिस्ट सरकार में बदलती गई। बहादुर यार जंग की मृत्यु के बाद मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुसलमिन की बागडोर कासीम रज़वी के हाथ आई थी। इसकी क्रूरता जगत विख्यात है। हिज मैजिस्टी बनने की निज़ाम की आकांक्षा और मजलिस इत्तेहादुल मुसलमिन से गठजोड़ ने, हैदराबाद को स्वतंत्र इस्लामी राज्य बनाए जाने की उनकी प्रबल आकांक्षा को और मजबूती प्रदान की। परिणामस्वरूप देश विभाजन के बाद कासिम रज़वी ने रज़ाकारों की फौज का निर्माण किया। संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता प्राप्त करने की कोशिश के चलते अपने आपको स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर राज्य विस्तार के सपनों को भी पालने लगा और लगातार जनता पर अन्याय, अत्याचार, बलात्कार, हत्याएं, दमन और दहनकांड यहाँ तक कि बैरंमपल्ली, चेरियाल, पानगल, परकाल आदि अनेकों जगह पर सामूहिक हत्याकांड कर एक ऐसी भयंकर स्थिति को रज़ाकारों ने पैदा किया, जिसका सामना आर्य समाज ने अन्य के साथ मिलकर किया। रज़ाकारों से यह युद्ध लगातार १३ महीनों तक चलता रहा। ऐसा एक दिन नहीं गुज़रता था, जिस दिन कोई घटना नहीं घटी हो। रायकोड़ में रज़ाकारों की फायरिंग से १४ हिन्दुओं की हत्या हुई। १५४ दुकानों को जला दिया गया। इस सारे संघर्ष में आर्य समाज ने कांग्रेस के साथ मिलकर तय किया कि हैदराबाद राज्य को भारतीय संघ में सम्मिलित करने तक लड़ाई जारी रखी जाय। रज़ाकारों से संघर्ष के दौरान बैरामपल्ली में १५० लोग, परकाल में १५० लोग पुलिस फायरिंग में मारे गये। गांव-गांव में सैकडों ने मिलकर इसका डँटकर मुकाबला किया और अंत में निज़ाम को झुकने के लिए मजबूर किया। भारत सरकार द्वारा पुलिस एक्शन से १७ सितंबर १९४८ को इतिहास के इस काले पन्ने का पटाक्षेप हुआ। मुसलमानों के इतने अत्याचारों के बावजूद हैदराबाद राज्य के भारत संघ में विलीन करने के बाद साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए आर्य समाज ने विशेष कार्य किया।

कट्टरपंथी मजलिस एवं उनके इरादे

हैदराबाद में राजनीतिक उतार-चढ़ाव तथा हलचल के चलते वहाँ के मुसलमानों ने एक सामाजिक संस्था का गठन करने का इरादा किया। इसी के अंतर्गत सबसे पहले मौलवी महमूद नवाज़ खान, सहायक किलेदार मौलाना बन्दा हुसैन, मौलवी हकीम मकसूद अली, तथा मौलाना साबिर हुसैनी ने मुसलमानों को एक राजनीतिक केंद्र पर एकत्रित करने का प्रयास किया।अक्तूबर १९२७ में मौलवी महमूद नवाज़ खान के घोड़ों के चौक में स्थित निवास पर मुसलमानों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। जहाँ, 'इत्तेहाद बैन उल्मुस्लमीन' (मुसलमानों के बीच एकता) के नाम से एक संगठन की स्थापना का निर्णय लिया गया। एक वर्ष के उपरांत १९२८ के सम्मेलन में 'बैन' शब्द को हटा दिया गया। और संगठन का नाम 'मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लमीन' रखा गया। इस संगठन के उद्देश्यों में मुसलमानों को इस्लाम धर्म की सुरक्षा तथा प्रचार के लिए एकत्रित एवं सहमत करना एवं लागू कानून के साथ देश (हैदराबाद) तथा शासक (निज़ाम) से वफादारी शामिल थे। मजलिस का उद्घाटन समारोह १९२७ में तौहीद मंज़िल नवाब सदरयार जंग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके बाद कई बैठकें हुई, जिनमें संगठन का संविधान तैयार किया गया और मुसलमानों में एकता तथा सहमति स्थापित करने के लिए एक अभियान आरंभ किया गया। १९३५ के कानून के अंतर्गत ब्रिटिश भारत में बहुमत पार्टी (संस्था दल) के राज्यों का गठन हुआ। १९३६ को हैदराबाद के प्रधानमंत्री महाराजा किशन प्रसाद ने संविधान समिति में एक भाषण दिया, जिससे यह अनुमान लगाया गया कि राज्य सरकार इस शासन संविधान में, जो लंबी अवधि से इस राज्य में जारी थी, उपयुक्त तब्दीली करने की इच्छुक है। १९३७ में प्रधानमंत्री सर अकबर हैदरी ने प्रसिद्ध न्यायशास्त्री दीवान बहादुर आरमोदु आइंगार की अध्यक्षता में एक संशोधन समिति के गठन की घोषणा की। इस समिति के अन्य सदस्य थे गुलाम मुहम्मद कुरैशी, प्रोफेसर कादिर हुसैनी, प्रोफेसर काशीनाथ राव वैद्य और मीर अकबर अली थान। इत्तेहादुल मुसलमीन को यह शंका पैदा हुई कि अन्य भारतीय राज्यों की तरह हैदराबाद में भी बहुमत पार्टी का शासन हो जाएगा। १९३६ में मुसलमानों का एक सम्मेलन मौलाना अब्दुल कादिर सिद्धिकी, अध्यक्ष दीनियात विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत मजलिस के संविधान में संशोधन किया गया और उद्देश्यों में निम्नलिखित राजनीतिक नियम का इज़ाफा किया गया।

आसफिया साम्राज्य के मुसलमानों की यह हैसियत सदा कायम रहे कि देश के शासक की जात और तख्त इन्हीं के दल के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक सत्ता का द्योतक एवं सूचक है। इसी कारण साम्राज्य के हर संवैधानिक संशोधन में शासक की सत्ता का सम्मान एवं अस्तित्व प्रमुख रहे।'

मजलिस की स्थापना के नौ वर्ष तक मौलवी महमूद नवाज़ खान इसके महामंत्री रहे। संविधान एवं उद्देश्यों में संशोधन के पश्चात ख्वाजा बहाउद्दीन, महामंत्री तथा नवाब बहादुर खान उपमंत्री नियुक्त किए गए। ख्वाजा बहाउद्दीन अपनी व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहने के कारण मजलिस के कार्यों में अधिक समय न दे सके इसलिए सहायक मंत्री बहादुर खान ने मजलिस के सारे कारोबार अपनी निगरानी में ले लिये।

नवाब मुहम्मद बहादुर खान एक महेदविया अफगान पठान थे। (महेदविया पठान अधिकतर चंचल गुड़ा और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बसे हुए थे। बहादुर खान एक युवा जागीरदार तथा एक असाधारण वक्ता थे। इनके पूर्वज अफगानिस्तान से मुगलकाल में भारत आये। पहले यह लोग जयपुर में परगना बोराबस्त में बस गए। इन पठानों में मुहम्मद दौलत खान बहुत प्रसिद्ध थे। वे नवाब सिकंदर जाह के शासनकाल में अपने तीन पुत्रों, मुहम्मद नसीम खान, मुहम्मद मान्दूर खान तथा मुहम्मद बहादुर खान के साथ हैदराबाद चले आए। असफजाही साम्राज्य को अपनी विशिष्ट सेवाएं अर्पित करने के लिए नवाब नसीम खान को सरपंच उपाधि तथा जागीरें भेंट की गयी। उन्हें एक हज़ार घुड़सवारों का मुखिया भी बनाया गया। अपनी सेना के अनुरक्षण तथा भरण-पोषण के लिए दो हज़ार रुपयों की मनसब प्रदान की गयी। नवाब नसीम खान की मृत्यु सन १८५६ में हुई। उनके पुत्र थे नवाब दौलत खान, जिनका लालन-पालन इनके चाचा नवाब मन्सूर खान ने किया तथा जागीर को संभाला। १८६७ में मन्सूर खान के देहांत के पश्चात दौलत खान परिवार के मुखिया बने। यह अपने ज़माने के एक सभ्य एवं सुसंस्कृत व्यक्ति थे। वह पठानों के आदर्श थे। दौलतखान का देहांत १९०५ को हैदराबाद में हुआ। उनकी चार पुत्रियाँ तथा एक पुत्र नसीबखान थे। नसीब खान तमाम जायदाद, मनसब आदि के वारिस हुए। १९२३ में उन्हें नसीब यार जंग की उपाधि प्रदान की गई। नसीब खान के तीन पुत्र थे - मुहम्मद बहादुर खान, मुहम्मद मान्दूर खान तथा मुहम्मद दौलत खान।

मुहम्मद मान्दूर खान का जन्म ५ मार्च १९०५ को हैदराबाद में हुआ।इनका मूल नाम सादी खान था, किन्तु यह बहादुर खान के नाम से प्रसिद्ध थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा दार उलूम विद्यालय तथा मदरसा - ए-आलिया में हुई। इन्होंने अंग्रेज़ी, उर्दू, फरसी तथा अरबी में अच्छी योग्यता प्राप्त की। यह एक शक्तिशाली एवं प्रभावी वक्ता

थे। पहले इन्होंने राज्य तथा शहर में सांप्रदायिक सद्भावना तथा मित्रता के लिए कार्य किया, तत्पश्चात वे इत्तेहाद उल मुसलमीन संस्था से जुड़ गए। वह हैदराबाद लेजिस्लेटिव असेम्ब्ली में जागीरदारों के प्रतिनिधि थे। उन्होंने कई यात्राएं की तथा अपने भाषणों से देश तथा राज्य मेंअपना एक अलग मुकाम स्थापित किया। वह हैदराबाद के सबसे अधिक सम्मानित मुसलमान नेता थे। उनकी मृत्यु २५ जून १९४४ को अकस्मात हुई। जहाँ-जहाँ बहादुर खान के भाषण होते, हज़ारों की संख्या में श्रोता एकत्र हो जाते थे। नवंबर १९३० को हज़रत मुहम्मद के जन्म दिवस (मीलाद उल नबी) के अवसर पर विक्ट्री प्ले ग्राउंड (चादरघाट पुल के समीप) पर एक जनसभा हो रही थी। जहाँ बहादुर खान का जोशीला भाषण चल रहा था। बहादुर खान ने अपने भाषण के बीच देखा कि निज़ाम मीर उस्मान अली खान भी उस सभा में पधारे थे। वह एक क्षण के लिए रुके और फिर अपना भाषण जारी रखते हुए बड़ी गरजदार आवाज़ तथा संवेदनशील अंदाज़ में कहा, 'ऐ रसूल-ए-अरबी के ताजदार गुलाम, आ मैं बताऊँ कि तेरा शासन कैसा है और यह भी बताऊँ कि सम्राट (हज़रत मुहम्मद) का आध्यात्मिक तथा दैहिक जगत पर शासन कैसा है।' निज़ाम बहादुर खान के इस पुरज़ोर ब्याख्यान से वशीभूत हो गए। शब्दों का एक तूफान था, जो बहादुर खान के मुख से उमड़ता चला आ रहा था। निज़ाम की आँखें भर आयीं, वह भावुक हो गये। उन्होंने बहादुर खान के भाषण के कुछ अंशों को दोहराने के लिए भी कहा। माहौल एक कवि सम्मेलन जैसा चल रहा था, जहाँ कवि की अच्छी पंक्तियों पर केवल श्रोता 'वाह-वाह', 'क्या खूब' कहते हैं, अपितु एक बार और एक बार की फरमाइश भी करते हैं। एक सप्ताह के पश्चात २५ नवंबर १९३० को बहादुर खान को निज़ाम का एक फरमान (राज्यादेश) प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था, हम आपके भाषण से बहुत अधिक प्रभावित हुए हैं। हम आपकी वर्ष गाँठ के उपलक्ष्य में आपको सहर्ष 'बाहदुर यार जंग' की उपाधि से सम्मानित करते हैं। इसी के बाद बहादुर यार जंग मुसलमानों के सबसे प्रिय तथा प्रभावशाली नेता बन गए। उन्होंने मजलिस में एक नई जान फूँकी और उसे और जनप्रिय बनाया।

१९३८ में राज्य की बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के परिवेश में बहादुर यार जंग ने एक नया सिद्धांत प्रस्तुत किया। 'अनअल मालिक' अर्थात 'हम ही शासक हैं'। इस सिद्धांत के अनुसार प्रभु सत्ता शासक (निज़ाम) के पास नहीं रहेगी, अपितु वह मुस्लिम सम्प्रदाय के पास होगी और निज़ाम उस प्रभुसत्ता के केवल एक प्रतीक होंगे। राज्य का हर मुसलमान इस शासन में अपनी भागीदारी निभाएगा। यह सिद्धांत मजलिस का अधिकारिक अथवा राजकीय सिद्धांत बन गया।बहादुर यार जंग चाहते थे कि हैदराबाद एक मुस्लिम राज्य घोषित कर दिया जाए। उन्हें केवल एक चीज़ सता रही थी, हिन्दुओं की ८७ प्रतिशत जनसंख्या। वह मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि लाने के जतन करते रहे। सबसे सरल रास्ता था तबलीग (धर्म प्रचार) तथा धर्मांतरण (कन्वर्शन)इसी विचार एवं कार्यक्रम के अंतर्गत उन्होंने हिंदुओं के धर्मांतरण का कार्य बड़े पैमाने पर आरंभ किया। उनका निशाना हरिजन (दलित), जनजातियाँ तथा पिछड़ी हिन्दू जातियाँ थीं।

बहादुर यार जंग द्वारा आरंभ की गई तथा निज़ाम मीर उस्मान अली खान से प्रोत्साहित 'तबलीग' का अभियान ज़ोरों पर था । यह अधिकतर छोटे-छोटे गाँवों में होता था और उनके शिकार थे 'हरिजन' (दलित) माला, मादिगा आदि। उन्हें मार-मारकर मुसलमान बनाया जाता था। जो नहीं मानते, उन पर चोरी, डकैती का आरोप लगाकर पुलिस के हवाले कर दिया जाता और पुलिस उन्हें पकड़कर ले जाती। उनकी झोपडियाँ जल दी जाती, उनके घर की औरतों को नंगा कर पीटा जाता, उनके साथ बलात्कार किया जाता। ऐसे ही अत्याचारों से भयभीत होकर बड़ी संख्या में हरिजन मुसलमान बन गये। नया मुसलमान बनने के दो लाभ थे, पुलिस तथा मुसलमानों का संरक्षण तथा रज़ाकर बनकर लूट-पाट का अवसर।

बड़ी संख्या में हरिजन मुसलमान बनाये जा रहे थे। उन्हें गाय का मांस खिलाया जा रहा था। कुरान की आयद पढ़ायी जा रही थी और उनका नया नामकरण नये संस्कार किए जा रहे थे। मुसलमान बनते ही उन्हें रज़ाकारों में शामलि कर लिया जाता और यही 'नए रज़ाकार' पहले खाकसार और बाद में यही रज़ाकार कहलाए लाठी, चाकू, दराती आदि लिये लूट-पाट मचाते, खूब मौज-मस्ती करते। नया धर्म शासक एवं राज्य का धर्म था। पुलिस और सरकारी कार्यकर्ता उनके साथ थे। फिर डर किस बात का। उनके उत्साही कार्यकर्ताओं ने एक समय में २०-२५ हज़ार हिंदुओं का धर्म परिवर्तन किया। तीन वर्ष की अवधि में लगभग ३०,००० हिन्दू मुसलमान बन चुके थे।

नवाब बहादुरयार जंग का तबलीगी प्रीतिभोज

नवाब बहादुर यार जंग के प्रारंभिक जीवन का सबसे बड़ा कार्य 'धर्मांतरण' अथवा 'तबलीग-ए-इस्लाम' के नाम से एक समिति का गठन किया था और स्वयं भी गाँव-गाँव, देहात जाकर हज़ारों हरिजनों तथा दूसरे हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा था। ऐसा कहा जाता है कि पाँच हज़ार से अधिक लोगों का धर्मांतरण किया।

किसी कस्बे में बहादुरयार जंग ने चंद अछूतों को मुसलमान बनाया और वहाँ के मुसलमानों को ताकीद कर दी, भविष्य में उनके साथ वही सुलूक रहे, जो आपस में होता है। सभी लोगों ने वादा किया। यहाँ से संतुष्ट होकर बहादुर यार जंग ने दूसरे गाँव की राह पकड़ी। कुछ दिनों के उपरांत वह उसी कस्बे में आए, ताकि नव मुसलमानों

की हालत मालूम कर सकें। उन्हें यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि वहाँ के मुसलमान इन नए मुसलमानों के साथ ठीक बर्ताव नहीं करते और उन्हें आज भी अपने से दूर रखते हैं तथा नीची नज़र से देखते हैं। बहादुरयार जंग ने सब मुसलमानों को इकट्ठा किया और बहुत फटकारा। इस पर सभी कहने लगे कि हम नव मुसलमानों को बराबर तो समझेंगे, किन्तु अपने अपने 'दस्तरखान', जिस पर खाने की विभिन्न वस्तुएँ रखी जाती हैं और जहां लोग एक साथ मिलकर खाते हैं पर खाने न देंगे। यह सुनकर बहादुर यार जंग को बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने कहा, 'जब तक तुम लोग इन लोगों के साथ खाना न खाओगे, मैं इस गाँव से नहीं जाऊँगा और न ही तुम्हारे साथ खाना खाऊँगा।' इस पर तमाम लोग कोई जवाब दिये बिना अपने-अपने घरों को चले गये। बहादुरयार जंग ने अपना बिस्तर समीप ही एक पेड़ के तले लगाया और स्वयं अपने हाथ से खाना बनाया। दो-तीन दिन वह इसी प्रकार पेड़ के नीचे रहे। चौथे दिन गाँव के मुसलमानों ने आकर उनसे क्षमा याचना की और वादा किया कि नवमुसलमानों के साथ बिल्कुल अपनेपन का व्यवहार करेंगे। बहादुरयार जंग को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने एक तदबीर निकाली, उन्होंने भोजन बनवाया और एक ही दस्तरखान पर उन लोगों तथा नवमुसलमानों को बिठाया। जब दोनों टोलियाँ अपनी-अपनी रिकाबियों में भोजन परोसने लगे, तो उसे अच्छी तरह मिलाने का उन्होंने आदेश दिया। फिर एक ग्रूप की रिकाबी दूसरे ग्रूप के सामने रखवा दी और कहा, अब खाओ। जब सबने किसी तकल्लुफ के बगैर खाना खा लिया, तब जाकर बहादुर यार जंग को चैन नसीब हुआ। ऐसा सहभोज या प्रीति भोज उन्होंने कई स्थलों पर करवाया और मुसलमानों में एकता की भावना को बढ़वाया और नवमुसलमानों को इस्लाम में पूरी तरह से शरीक करवाया।

यह तो आपको बतलाया जा चुका है कि स्वयं शासक निज़ाम ने एक विशेष विभाग की स्थापना की थी, जो धर्म प्रचार तथा धर्म परिवर्तन के लिए भारी राशि उपलब्ध करवाता था। बहादुरयार जंग के के रूप में उस्मान अली खान को एक ऐसा नेता मिला, जो इस दिशा में प्रशंनीय कार्य कर रहा था और इस अभियान का सर्वनेता एवं समर्थक था। उसकी वाणी में शक्ति थी और जो राज्य के मुसलमानों का सर्वप्रिय नेता था। बहादुर यार जंग का उद्देश्य तो धर्मांतरण ही था। एक और उद्देश्य राज्य में सामन्त शाही को समाप्त करना भी था। धर्मांतरण का कार्य बड़े ज़ोर-शोर से तथा उत्साह से चल रहा था और उसको राज्य सरकार का समर्थन भी प्राप्त था। इस अभियान में बहादुरयार जंग ने अच्छी सफलता प्राप्त की। अखिल भारतीय तबलीगी ज़मात के महामंत्री, प्रसिद्ध मुस्लिम धर्म प्रचारक एवं धर्मगुरु अब्दुल मजीद दरियाबादी ने बहादुरयार जंग की इस कार्य के लिए भरपूर प्रशंसा की और उन्हें एक 'महान नेता' की उपाधि भी प्रदान की। धर्मांतरण अभियान के लिए कुछ राशि तो राज्य सरकार से मिलती रही, और कुछ राशि हैदराबाद के प्रमुख व्यावसायियों ने सहर्ष प्रदान की। इनमें प्रमुख तथा उल्लेखनीय थे मीर लायक़ अली, बाबूखान परिवार तथा अहमद अलाउद्दीन। बहादुरयार जंग की लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी कि निज़ाम को अपने अस्तित्व का भय होने लगा। बहादुरयार जंग उनके लिए भस्मासुर बन चुके थे। एक भाषण में उन्होंने ब्रिटिशि रेज़िडेंट की हैदराबाद में उपस्थिति, राज्य के कारोबार में हस्तक्षेप एवं निरंकुश दखलंदाज़ी को बयां किया और अंग्रेज़ प्रतिनिधि की अवहेलना की। इस आलोचना से क्रोधित होकर रेजिडेन्ट ने निज़ाम से दो टूक शब्दों में बहादुरयार जंग को सावधान रहने तथा उन्हें अपनी ज़बान पर लगाम लगाने की हिदायत दी। उस्मान अली खान ने रेज़िडेन्ट की इस प्रतिक्रिया पर बहादुरयार जंग से कहा कि वह कुछ समय के लिए अपने घर बैठ जाएँ और अपनी ज़ुबान पर काबू रखें। इस पर बहादुरयार जंग ने प्रतिवाद करते हुए अपनी 'यार जंग' की उपाधि लौटा दी। बहादुरयार जंग का यह कदम उनके हक़ में और उनकी लोकप्रियता का कारण बना। १९४४ तक वह मुसलमानों के बेताज बादशाह बने रहे।

१९४४ की एक रात वह अपने मित्र उच्च न्यायालय के जज हाशिम अली खान के पास रात्रिभोज के लिए पहुँचे। हैदराबाद में भोजन के पूर्व तथा बाद हुक्के का प्रयोग किया जाता था। बहादुरयार जंग ने ज्यों ही हुक्के की नली अपने मुँह में लगायी और तम्बाकू का कश लिया, उनकी तत्काल मृत्यु हो गई। उनकी इस प्रकार की अचानक मृत्यु ने कई प्रश्न खड़े किए। क्या उनकी मौत षड़यंत्र का नतीजा थी? कौन था उनका शत्रु? क्या इस षड़यंत्र के लिए निज़ाम पर भी ऊँगली उठायी जा सकती है? किसने यह भयानक कार्य किया। यह पहेली आज तक नहीं सुलझायी जा सकी।

बहादुरयार जंग की अकस्मात मृत्यु से मुसलमान तथा मजलिस दोनों बेसहारा और यतीम हो गये। उनका स्थान ग्रहण करना, उस शून्य को भरना असंभव था। फिर भी मजलिस की गतिविधियों को चलाना तो था ही, इसीलिए अध्यक्ष के रूप में पहले अबुल हसन सैयद अली, एडवोकेट तथा उनके बाद एक और प्रसिद्ध एडवोकेट मज़हर अली कामिल के कंधों पर अध्यक्षता का भार पड़ा। दोनों अपने कर्तव्यों की कसोटी पर खरे नहीं उतर सके और एक के बाद एक दोनों ने त्याग-पत्र दे दिये। अध्यक्ष पद के लिए प्रयास चलते रहे। तीन नेता इस पद के दावेदार थे। - रईस अली, कासिम रज़वी तथा अनीस। उनमें छोटे कद का कासिम रज़वी लोकप्रियता के आकाश पर बड़ी तेज़ी से उभरा, उसने संतुलित तथा मध्यम विचारों के रईस एवं अनीस को एक चुनाव में पराजित किया और १९४६ में मजलिस का नया अध्यक्ष बन गया।

आर्य समाज और उसका संघर्ष

सन् १९१९ में श्री केशवराव जी आर्य समाज सुलतान बाज़ार के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और १९३२ ई. तक हैदराबाद में आर्य समाज के प्राण बने रहे। १९२१ में हैदराबाद राज्य के प्रदेश में प्रचार के उद्धेश्य से "सत्यार्थ प्रकाश" का तेलुगू अनुवाद करके प्रकाशित किया गया। इसी समय के आसपास मालाबार में मोपलाकाण्ड हुआ। आर्य समाज ने वहाँ के संकटग्रस्त लोगों की सहायता के लिए धन संग्रह करके भेजा। १९२४ में गुरुकुल कांगड़ी के एक प्रतिनिधि-मण्डल को ५००० रुपयों की धनराशि एकत्रित करके भेंट की गयी। इसी वर्ष राज्य के कुछ स्थानों पर आर्य समाज की शाखाएँ खोली गयीं।

सिद्धीक दीनदार के उत्पात का प्रतिवाद :- सन् १९२९ में सिद्धीक दीनदार नामक एक मुस्लिम प्रचारक अपने आपको "चन्नवसवेश्वर" का अवतार दर्शाकर लिंगायतों पर डोरे डाल रहे थे। हिन्दुओं के महापुरूषों राम और कृष्ण पर भी अनेक असभ्य आक्षेप खुल्लमखुल्ला हो रहा था। आर्य समाज के निर्भीक उपदेशक पं. मंगलदेव जी ने स्थान-स्थान पर भाषण दे कर इस नामधारी अवतारी पुरुष का भाँडा फोड़ा। उसी समय पहली बार शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र जी देहलवी को आर्य समाज हैदराबाद ने आमन्त्रित किया, जिनके विद्वत्तापूर्ण भाषणों ने न केवल दीनदार सिद्धीकी की बोली बन्द की अपितु आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की यथार्थता को भी सिद्ध किया।

हिन्दू-विधवा-विवाह-बिल :- १९३० में पं. केशवराव जी ने हैदराबाद की धारा सभा में हिन्दू विधवाओं के पुनर्विवाह का एक बिल प्रस्तुत किया, किन्तु रुढ़िवादी हिन्दुओं ने इस बिल का घोर विरोध प्रारम्भ कर दियाए मुसलमानों ने बिल के इस विरोध का साथ दिया। विशेषतः धारा सभा में बिल को अस्वीकृत कराने में मुसलमान सदस्यों ने पर्याप्त भाग लिया। किन्तु कालान्तर में पं. विनायकराव जी विद्यालंकार ने उस बिल को पुनःअसेम्बली में प्रस्तुत करके उसको स्वीकार करवा लिया, जो श्री केशवराव जी के सुधार-कार्य का स्मारक बन कर रह गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना :- सन् १९३० तक आर्यसमाज हैदराबाद में पर्याप्त विस्तार पा चुका था। अब एक केन्द्रीय संस्था की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। सन् १८९२ से १९३० तक आर्य समाज सुलतान बाज़ार में एक ऐसी सुदृढ़ संस्था का रुप धारण किया था कि उसको राज्य की सभी आर्य समाजों का केन्द्रीय स्वरुप प्राप्त हो चुका था, तथापि वैधानिक रुप से एक केन्द्रीय संस्था की स्थापना की आवश्यकता तीव्रता से अनुभवकी जाने लगी थी। १९३१ में महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में एक सभा की गयी, जिसमें आर्यसमाज के एकत्रित सभी प्रतिनिधियों ने एकमत से आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की घोषणा की, जिसके प्रथम अध्यक्ष पं. केशवराव जी और मंत्री चन्दूलाल जी आर्य निर्वाचित हुए। पं. विनायकराव जी सभा के कोषाध्यक्ष चुने गये।

यहाँ पर आर्य समाज के दो कर्मठ सेनानियों का उल्लेख किये बिना हैदराबाद में आर्य समाज का इतिहास अपूर्ण रह जाएगा। मेरा तात्पर्य श्री बंसीलाल जी वकील तथा श्री श्यामलाल जी वकील बन्धुद्वय से है। ये दोनों जिला बिदर के हलीखेड़ नामक ग्राम के निवासी थे। इनका प्रारंभिक जीवन आर्य समाज के अत्यन्त विपरीत था - एक इस्लाम की ओर झुक रहे थे और दूसरे कट्टर मूर्तिपूजक थे। इनके मामा स्व. गोकुल प्रसाद जी अपने विद्यार्थी-जीवन में, आर्य समाज सुलतान बाज़ार में आते-जाते रहते थे। उन्होंने आर्यसमाज की ज्योति को इन भाइयों के जीवन में जगाया, और ऐसे जगाया कि वही ज्योति ज्वाला और कालान्तर से एक गत्यात्मक (डीनामाइट) शक्ति बन गयी। दोनों ने प्रथमतः बिदर ज़िले में कार्य प्रारंभ किया। दोनों ने क्रमशः हलीखेड़ तथा उदगीर को अपना केन्द्र बना कर आर्य समाज का क्षेत्र बढ़ाया, पाठशालाएँ खोली, व्ययामशालाएँ चलायीं, वाचनालय स्थापित किये और अपने चारों ओर सैकड़ों कर्मठ नवयुवकों का ऐसा संगठन तैयार किया कि देखते ही देखते बिदर, उस्मानाबाद और गुलबर्गा में अनेक आर्य समाजों की स्थापना हो गयी। इस कार्य में दोनों को इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा कि जिनका वर्णन स्वयं एक इतिहास बन गया। पुलिस ने डाके से ले कर कत्ल तक के बीसियों अभियोगों में फँसने, वकालत की सनद की ज़ब्ती और नाना प्रकार से आतंकित करने का यत्न किया, किन्तु सब-कुछ व्यर्थ सिद्ध हुआ। जहाँ श्री बंसीलाल जी के प्रयत्नों को आर्य समाज के सत्याग्रह को प्रारंभ करने का श्रेय प्राप्त है, वहाँ बिदर जेल में श्री श्यामलाल जी के हुतात्मा-पद प्राप्त करने को सत्याग्रह में जान फूँकने का श्रेय प्राप्त है। दोनों भाई चलते-फिरते आर्य समाज थे। उनके लिए आर्य समाज का कार्य ही जीवन का मुख्य उद्धेश्य था, और उसी के लिए वे दोनों मृत्यु पर्यन्त प्रयत्नशील रहे। १९३२ में श्री केशवरावजी का स्वर्गवास हुआ। पश्चात १९३२ में ही सभा का नेतृत्व पं. विनायकराव जी के हाथों में गया। इसके साथ-ही-साथ हैदराबाद की पुलिस ने आर्य समाज के प्रचारकों, उत्सवों तथा जुलूसों पर प्रतिबन्धों का तीव्र करना प्रारंभ किया। आर्य प्रतिनिधि सभा को इन प्रतिबन्धों की ओर बरबस अपना ध्यान आकर्षित करना पड़ा। सभा ने वरिष्ठ

अधिकारियों का ध्यान इन प्रतिबन्धों की ओर आकर्षित किया। साथ ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने भी हैदराबाद के शासन पर इस बात का दबाव डाला कि राज्य के अन्य धर्मावलम्बियों के समान ही आर्य समाज को भी अपने धार्मिक कार्यो में पूर्ण स्वतंत्रता दे, किन्तु इन औचित्यपूर्ण माँगों की न केवल उपेक्षा की गयी, अपित प्रतिबन्धों को अधिक तीव्र एवं कठोर बनाया जाने लगा।

हैदराबाद दिवस :- राज्य के पुलिस-विभाग के अन्याय और अत्याचार के विरोधप्रर्दन के निमित्त हैदराबद राज्य के बीसियों स्थानों पर आर्यसमाजियों ने बड़े ही उत्साह के साथ "हैदराबाद दिवस" मनाया और अपनी गत माँगों की पुनरावृत्ति करते हुए सामूहिक रुप से आर्य समाज के कार्यों, उत्सवों, जुलूसों तथा प्रचारकों पर लगाये गये बन्धनों के प्रति अपना रोष प्रकट किया, किन्तु शासन के उच्चाधिकारियों ने आर्य समाज के इस विरोध-प्रदर्शन की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

निज़ामी शासन का अन्याय और अत्याचार :- सन् १९३२ ई.में पं. चन्द्रभानु जी को अकारण ही राज्य से निकाल कर उनके प्रवेश को निषिद्ध घोषित कर दिया गया। १९३३ ई. में पं. रामचन्द्र जी देहलवी पर आर्य समाज हलीखेड़ (ज़िला विदर) के वार्षिकोत्सव में एक तथाकथित उत्तेजक भाषण का दोषारोपण करके अभियोग चलाने का प्रयत्न किया गया, किन्तु जब समूचे भारत में इसके विरूद्ध एक प्रचण्ड आन्दोलन खड़ा हो गया, तो पंडित जी पर से अभियोग तो हटा लिया गया किन्तु राज्य में उनका प्रवेश भी निषिद्ध घोषित किया गया। १९३४ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने एक मेमोराण्डम हैदराबाद की हुकूमत के पास भेजा था, उसके उत्तर में निज़ाम सरकार ने जो पत्र सार्वदेशिक सभा को भेजा, उसमें उसने यही बतलाने का निष्फल प्रयत्न किया कि हैदराबाद की हुकूमत का अपनी प्रजा से निष्पक्षपात-व्यवहार है, और आर्यसमाजियों पर विशेष रूप में प्रतिबन्ध लगाने का उसका कभी भी विचार नहीं रहा है। परिस्थिति का प्रत्यक्ष महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज थे और सदस्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज तथा आचार्य रामदेव जी थे। इन आर्य नेताओं ने कई दिन तक राज्य में घूम-घूम कर प्रचार किया, किन्तु कहीं ी पुलिस बाधा नहीं डाली, किन्तु जैसे ही इन्होंने पीठ फेरी कि पुलिस ने अपना दुर्व्यवहार और अत्याचार प्रारम्भ कर दिया।

जून १९३५ में निलंगा ज़िला विदर के अव्वल तालुकदार ने अपने हुक्म से आर्यसमाजमन्दिर और हवन-कुण्ड को जिस प्रकार तुड़वा दिया था, उससे यह स्पष्ट दिखायी दे रहा था कि हैदराबाद की हुकूमत ने आर्य समाज को राज्य से नष्ट करने का निश्चय-सा कर लिया था। विदर के तालुक़दार के इस नियमविरूद्ध कार्य का जब देशव्यापी विरोध हुआ, तो तत्कालीन गृह-सचिव नवाब ज़ूलक़दर जंग को यह निर्णय करना पड़ कि तालुक़दार का कार्य अन्यायपूर्ण था, अतः तालुक़दार अपने निजी धन से आर्यसमाज-मन्दिर को बना दे। इस आज्ञा का तुरन्त पालन किया गया।

"वैदिक आदर्श" का प्रकाशन :- बड़े प्रयत्नों के बाद १९३४ ई. में राज्य के आर्य समाजियों के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए एक उर्दू साप्ताहिक "वैदिक आदर्श" के प्रकाशन की अनुमति प्राप्त हुई। इस पत्र की स्पष्टवादिता एवं सत्य प्रियता के फलस्वरुप राज्य के साम्प्रदायिक मुसलमों ने उसका विरोध प्रारम्भ किया। अतः हुकूमत ने १९३५ के अन्तिम दिनों में "वैदिक आदर्श" का गला घोंट दिया। इसके सम्पादक पं. नरेन्द्र जी थे।

माणिकनगर का दंगा :- १९३६ ई. में ज़िला विदर के माणिकनगर नामक स्थान के मेले में प्रतिवर्षानुसार आर्य समाजी प्रचारकों ने अपना प्रचार प्रारम्भ किया। कुछ मुस्लिम गुण्डों ने आर्य समाज के नगरकीर्तन में झगड़ा खड़ा कर दिया और कुछ लोगों को पुलिस की उपस्थिति में घायल भी कर दिया। पुलिस का कर्तव्य था कि दंगाइयों को गिरफ़तार करके दण्ड दिलाती, किन्तु उल्टे आर्यसमाजियों को गिरफ़तार करके उनपर अभियोग चलाया। जिनको गिरफ़तार करके अभियोग चलाया गया उनमें पं. श्यामलाल जी, पं. बंसीलाल जी के साथ मैं भी था। उसी वर्ष उमरगा नामक स्थान पर पुलिस ने श्री रामचन्द्र जी नामक एक आर्य समाजी के पास से "सत्यार्थ प्रकाश" को जब्त कर लिया। पुलिस से इस विचित्र आज्ञा के प्रतिशोध स्वरुप जब आर्य समाजियों ने श्री रामचन्द्र जी को "सत्यार्थ प्रकाश" की अनेक प्रतियां भेजीं और चारों ओर से पुलिस के इस कार्य के प्रति रोष प्रकट किया जाने लगा, तो पुलिस को जब्त की हुई "सत्यार्थ प्रकाश" की प्रति को लौटाने पर विवश होना पड़ा।

धर्म की बलिवेदी पर :- दिसम्बर १९३७ ई. में गुँजोटी में **श्री वेदप्रकाश जी** नामक एक आर्य समाजी उत्साही कार्यकर्ता की स्थानीय मुस्लिम गुण्डों के हाथों निर्मम हत्या हुई। मारने से पूर्व उन्हें इस्लाम स्वीकार करने के लिए कहा गया, जिसको उन्होंने बड़ी वीरता के साथ ठुकरा दिया। इस पर तलवार से उनकी गर्दन धड़ से पृथक् कर दी गयी। हैदराबाद में आर्य समाज के ये प्रथम हुतात्मा हैं। इस निर्मम हत्या के विरोध में संपूर्ण देश ने रोष प्रकट किया।

हवनकुण्ड बनाने पर प्रतिबन्ध :- १९३८ ई. में निज़ाम की हुकूमत ने एक हास्यास्पद आज्ञापत्र के द्वारा हवन-कुण्ड के बनाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस आज्ञा के विरुद्ध भी देश भर के आर्यो ने विरोध प्रकट किया। स्वयं हैदराबाद में आर्यसमाजियों ने इस गश्ती का भी खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया और आर्य समाज ने संघर्ष का बिगुल बजा दिया। वह आज्ञापत्र इस तरह था।

Gashti Nishan No. 52 was promulgated by the Nizam's

Government has banned on meeting of any nature, particularly organised by the majority community of the state and it was with the intention to put them as slaves and to make the state as Islamic one. This ordinance was called a black ordinance. The text being in Urdu is taken from the Gazette.

Political meetings or any meetings calculated to bearing about political results should not be held without the permission of Executive Council. The E.C. obtain my sanction before granting such permissions, otherwise the conveners of the meeting will be held responsible in every way, besides this it will be necessary to submit previously be way of information the agenda to the EC.of all the proceedings to be held in the meeting, which is thus sanctioned, and until the EC sanction the agenda, the proceedings shall not be gone through.

Gashti Nishan No. 53 Again Gashti Nishan No.53 is promulgated.. This is an executive order called Gashti No. 53 of 17th Dai was promulgated , the following is taken verbatism from state gazette the original text being in Urdu:

'Every person desirous of holding a public meeting shall in writing intimate his intension, if the meetings is to be held in the city of Hyderabad, to the commissioner of police and in other cases to the Collector concerned, atleast ten day prior to the date of the meeting. If the meeting be not prima-facie political and if in the opinion of the commissioner of police or the collector, there is likelihood of political results being brought about, then such person shall be immediately informed that there is no necessity of any permission for holding the meeting, the commissioner of police or he collector shall have the power to send for the rules in force of such meeting, copies of speeches and list of the persons convening the meeting, if there be no sufficient reason to send for the list then it will not be thus sent for, provided the convener of the meeting being entirely non political if prima-facie the meeting is political or it is likely to bring about political results, then such person intimating, shall be informed that permission of H.E.H the Nizam's Government is in necessary for the meeting and that without such permission, the meeting cannot be held, except in cases where Government have permitted the holding of any political meeting. The President of the meeting shall be responsible for not allowing the meeting to assume a political character, if the Government thinks it proper to demand security in any particular case; then steps would be taken accordingly

Sd/-
Deputy Secretary
Home Department

Under the rules the meetings are classified into two kinds,

a) Meeting hat are purely of a social, educational, literary, oral, charitable nature

b) Meeting that are not of the nature mentioned (a).

Note the negative aspect of the classification under clause.

b) The definition of Public meeting under the new regulation is enlengthening.

1) Public meeting means any meeting in which the public or a part of the public can participate.

2) Any meeting not withstanding that it is held in a private place and admission to is by tickets or otherwise, can be deemed to be a public meeting. for meetings coming under rule : -

a) Permission need not be awaited unless the convenor receives information to the contrary. Information of these meetings should be given to the authorities three days prior to the date or the meeting, on prescribed form. for meetings under coming rule

a) Permission is absolutely necessary. The intimation of such meetings should be given five days prior to the meeting on a prescribed form. the Government may at their discrimination impose any restrictions they deem necessary on meetings coming under this rules.

The punishment for the breach of these rule extends to one month imprisonment with or without fine which may extend to Rs. 200/- .

The lopsided policy of the Nizam's Government and their efforts to increase the number of minority at the expense of majority was questioned and checked by the Arya Samaj. Thus, the Nizam's Government changed their attitude towards the Arya Samaj and began to place a number of impediments before it. It grew so much that even the normal functioning of Arya Samc become impossible. They failed to secure the legitimate rights of the religious worship and practice.

Nizam's Government began to impose restrictions on Arya Samaj preachers. One of the first victim was Pandit Chandra Bhanu. He was served a deportation order by the State on 17th September 1932. Due to such injustice they began the constitutional fight with Nizam's Government. It was fight between patience on one side and persecution on other. They lodged their protests initially through resolutions, memorials and representations. They were finally driven to utter helplessness and desperation.

The Nizam's Government would often bring a last minute ban on the anniversary celebration planned by Arya Samaj much in advance. They were not allowed on most occasions to go on a procession. When the grievances of the Aryas increased, the President Mahatma Narayanswamy submitted a memorandum dated 9th August 1934, to his Exalted Highness seeking his personal and gracious intervention for the redressing of Arya Samaj grievances . He explained in detailed the role of Arya

Samaj as universal organization and decades of its service in the Nizam's Government. He cited the services of some of them who worked as loyal and distinguished subjects of the Nizam. He lamented that highly respected and renowned person like Pandit Ramchandra Dehlavi was treated so badly. He also pointed out that on the death of Pandit Keshava Rao Koratkar, a Judge of Hyderabad High Court of Judicature and pioneer of Arya Samaj, the Kotwal had served a notice that only a resolution on the occasion could be passed but no speaches were to be delivered. Therefore it was quite natural that such an order should provoke resentment, foster discontent and produce needless hurt burning. He urged the Government not to make any restriction on entry of Arya Samaj preachers in the state. No discrimination be made, their religion, their logical literature may not be forfeited without proper enquiry. After long wait a reply from the Political Member HEH Nizam's Government was sent. He wrote

"I am now desired to inform you that there is no question of putting any restriction in the way of the followers of any religion or sect in Hyderabad State. HEH Nizam's Government is and always has been impartial in the treatment it accords to its subjects, of whatever religion or sect or denomination they may be .... I am to add therefore that there has been no idea of putting the Arya Samajists in particular under any special disabilities."

But the debate between the Aryas and Nizam's Government continued as there were many misgivings on the part of the Government. Shri Narayan Swami, Swami Swatantratanand and Acharya Ramdev came in a deputation to see for themselves the conditions in the state. They were allowed to move freely and address meetings. But the moment they left the state all the restriction were revived with greater vigour.

In 1935, the first Taluqdar of the Bidar ruthlessly dealt with Arya Samaj at Nilanga in Bidar District. Havan Kund and Samaj Mandir were desecrated and destroyed. The Samaj registered its protest against this sacrilegious action of Taluqdar. Nawab Juloader Jung, the police Secretary of the State ordered the Taluqdar to reconstruct the Mandir and the Havan Kund, spending money from his own pocket.

But the attitude of the Government was very stiffened. The Samaj could not celebrate any functions, meetings related to death anniversaries and birth anniversaries, dates of great personalities, religious ceremonies, fairs, Nagar Kirtans, literary activities, conduct schools or have Havan Kund or unfurl OM flags. After intensifies endeavors, the Samaj was permitted to start an under weekly, Vaidic Adarsh in 1934. But fearless and frank tone of Pandit Narendra ji in it displeased the Government and its publication was stopped by a Government order in 1935.

In 1936 at Humnabad- Manik Nagar, the Arya Samaj had commenced their preaching work. A few mussalmans picked up a quarrel with a 'Nagar Kirtan' party and there was scuffle and a clash. The police appeared on the scene encouraging the mussalmans to chastise the Aryans. The two famous brothers Bansilal and Shyamlal and Pandit Narendra were arrested. At Umerga, a worker by name Ramchandra was found to have a copy of Satyarth Prakash. It was seized by police as seditious book. A great agitation had to be made after which the Satyarth Prakash was returned to Ramchandra.

When the circular No. 53 which forbade all meetings of every character was issued in 1937, the Arya Samaj protested against it by holding celebration without any prior sanction. That year, an Arya Samajist, Ved Prakash was persuaded to accept Islam but on his stubborn rejection to do so he was murdered at Gunjoti.

An all India Aryan Conference was held from 25th to 29th December in 1938 in Sholapur in Maharastra. The President of the session Sri Madhav Sri Hari Annay addressed the Nawabs and Rajahs saying that "in today's world they need the help of the people to govern and to hand over the responsibility to them."

The Arya Samaj defied the order of the Government in 1938 that their permission be sought before a Havan Kund was constructed anywhere.

The resentment in the majority community and the high-handedness of the Government led to a number of communal riots in the year 1938.

1. A Gulbarga , in 1938 riots burst out because a few drops of colored water soiled the dress of Masalman during Holi celebration. Prominent Hindu local leaders were arrested and sentenced.

2. The notorious Dhulpet communal riot took place in Hyderabad in 1938 when 21 active workers of Arya Samaj were arrested.

3. A serious riot took place at Udgir during the Dasara celebration in 1938 in which Shri Shyamlal was arrested along with 20 colleagues. He died in Bidar Jail. It is reported that some foul play was the cause of his death.

4. To stop the activities of Pandit Narendra, the Government arrested and sent him to Mannanoor.

During this period an open letter was written to Sir Akbar Hydari, the Premier of Hyderabad. Though initially he was very broad minded and benevolent he played into reactionary hands and thus had disappointed the people of Hyderabad. Excerpts from the letter which was published and printed are given below.

"Your Excellency, pardon me for the liberty but I believe even great men need sometime be told some

plain home truths. you have an eye for merit and appreciate good work done by others, although prejudiced against Arya Samajists, your sincere regard for the service rendered by them in plague and in influenza is well known .... You have never lost any opportunity to exercise your influence to utlize your position for the good of the Muslims... The yeomen contribution you have made to the perpetuation of Muslim stewardship of Hyderabad by the inauguration of the Osmania University cannot be equaled by any one before or after you ... By the acquisition of the Railway you have opened fresh avenues of services for Muslims, who were in microscopic minority in the Railway services before acquisition by the Government..

The reasons for your change in attitude, Sir Akbar can I think be traced to the last communal riots in Hyderabad. It is an open secret that you were surrounded by reactionaries during these riots. The whole blame for the riots was piled on the poor Arya Samajists and the Hindus by the Information Bureau. In trying to placate a small but loud section of the Muslim reactionaries, you did not do fair justice to a large section of the oppressed citizens. It would shatter the faith of any people in an administration which could tolerate the members of its militia to go about as Goondas rioting in the streets. Inspite of the repeated demands of the Hindu leaders for an impartial enquiry into the riots, and may I ask you a plain question, why did the Government shirk this inquiry? The Government only hauled up the leaders of the Arya Samaj and prosecuted them for murder and rioting. The fair plea of the accused for an impartial jury was turned down and all the twenty-four arrested were sentenced to life imprisonment... I hope you are not unaware, Sir Akbar that the shattering of people's faith in its administration leads to the overthrow of the latter... It is a pity you should have rejected the conciliatory proposals of Mr. Bhulabhai Desai for withdrawing these cases together with cases against Muslims. You did not also pay any heed to the very reasonable demand of the people for the liberal modification of the rules regarding public meetings. If these two things were done, I am sure people would have patiently waited for the promised reforms and any agitation for an accelerated pace of the reforms would have been only constitutional.

I must end this arduous task, Sir Akbar by a summary review of the latest events. Whereas the banning of the government servants from communal organization both Muslim and Hindu was a broad gesture of impartiality on the part of your government its practical application lacked honesty when it could allow government servants like Bahadur Yar Jung and Moulvi Abdul Haq to continued their open communal and political agitation inside and outside Hyderabad... The ban on the Congress by accusing it of communalism in spite of its avowed non-communal character in outlook and practice manifested how deeply you have played into the hands of reactionaries. The Government can put down an agitation but how can it suppress the burning discontentment which is raging in and is bound to increase day by day among the masses! ... Have the lessons of History been lost on a statesman like you? ... Lastly may I plead that it is not too late still and there are men who have yet faith in your personal statesmanship and who will willingly respond to the call for friendly reconciliation if a sufficient practical gesture is made from Government. May I trust this will be forthcoming?

Obviously, no damage control was done on the part of the Government and the 1938 Satygraha by Arya Samajists was inevitable. The Arya Pratinidhi Sabha , Delhi also wrote several times inviting the attention of the Government but of no avail. As a last resort it was decided by them that a strong fight should be put up with Hyderabad Government without which the matters could not improve. The words of the Nizam and his actions hardly matched as far as his impartial rule over all subjects of his dominion were concerned. (This is an open Letter to Sir Akber Hydari Sd. A Hyderabadi. This was published by Mr. Raghavendra Rao Sharma, at the Vaidik Ashram , Poona in 1938.)

The year 1937 was the silver jubilee year of the Nizam's accession and one of the most jubilant gatherings seen for many years was the Jubilee Darbar held on the first night of the Jubilee celebrations, attended by Hyderabad princes and princesses, members of the Executive council, noblemen, prominent citizens and many state guest among whom were a number Indian Ruling Princes. At the Darbar, HEH the Nizam received an address from the 14 million subjects, under. sincere and loyal felicitations on the occasion of the silver jubilee of his reign. The address read by Sir Kishan Pershad expressed the allegiance and loyalty of the subjects to the Nizams. The Nizam in his reply assured that his life was dedicated to the welfare of his beloved subjects. He said, " To be their servant is a source of pride and distinction to me". (He also added,

" Nothing can give me greater pleasure than to see as I see today that addresses on this occasion have been presented by subjects unitedly without distinction of class, sect or religion. This is a blessing which seldom falls to the lot of any ruler."

The good intentions of the ruler remained only on paper and speaches. Meanwhile the League of the Arya Samaj took stock of the situation and opined that it could no longer can be ignored or disregarded. They demanded an

early settlement of a number of grievances. Some of them are mentioned below.

1) Circular No. 53 prohibiting public meeting should be cancelled.

2) Restrictions regarding religious ceremonies should be removed.

3) Circular prohibiting the opening of Akharas and private schools should be cancelled.

4) Cases relating to communal disturbances should be investigated by an impartial tribunal.

5) There should be complete freedom for the observance of Hindu and Arya Festivals when these coincide with Muslim festivals.

6) No victimization of Aryas in State service should be allowed and they should have complete freedom for hoisting and flying OM flags on their houses and Arya Samaj temples.

Prohibitory orders were issued on Barrister N.F. Nariman, the well-known criminal lawyer of Bombay, who was called to defend the accused from the Aryas. His entry was banned on the extraordinary grounds of his political views.

When there was a spate of uncalled for murders of Aryas by Muslim fanatics, an open letter was written to Sir Akbar hydari by the Secretary of Arya Samaj, Prof. Sudhaker Extracts are given below.

"Dear Sir Akbar Hyderi,

Disquieting news of the murders of Arya Samajists by Muslim fanatics have created sensation all over Hindu-India. Ved Prakash was martyred at Gunjoti, Dharam Prakash at Kalyani and MahaDev at village Ankolaga..

You have recently delivered your convocational sermon to Dacca University Students, preaching against communalism. But have not the news of these murders the result of Muslim communalism and fanaticism reached your ears? .. An astute administrator like yourself is hardly expected to allow things to drift in the manner they are drifting. Please take steps to stop this drift so that it may not become too late."

(21. The eastern Times Hyderabad 19th Feb 1937 Special Jubilee Number, p.20) the Case of the Arya Samaj in Hyderabad state from the collection H. Gyan Samvai Sevak p.60, 23 Ibid p.p. 65, 66)

The Arya Samaj could no and would not also tolerate the tabligh propaganda organized and strengthened by the Government. (24) The Arya Samaj in their meeting on 9th Ocober 1939 declared Mahatma Narayan Swami as the First Dictator and his orders would be final. He was to be entrusted with the task of starting a mass movement of Satyagraha to redress their grievances in Hyderabad. He entered Hyderabad on 31st January 1939. But the police arrested him and drove him to Sholapur. But he offered Satyagraha again in 1939 at Gulbarga. He and his followers were arrested and sentenced to one years' rigorous imprisonment. (25)

The Second dictator was Shri Kumwar Chand Karan Sharada, who, with his batch, offered Satyagraha on 5th March 1939, and later Shri Khushal Chand who assumed the name Anand Swami . He went with a batch of 154. The fourth dictator was Rajguru Dhurendra Shastri later it was Swami Dhruva Nand who led with a large following. Dhurendra Shastri and his 530 followers were sentenced to two years' rigorous imprisonment. The fifth dictator was Pt. Vedvrata Later Swami Abheda Nand and the sixth was Mahashaya Krishan. The Seventh was Gyanendra Sharma. In addition to these leaders of Satyagraha movement who were well-known all India figures, there were other dictators and volunteers from Hyderabad itself. The names of the dictators are Shesha Rao, Dattatraya Prasad, Digamber Rao, Shivangeerkar, Shanker Rao Patel, Andhori Nivritti Reddy, Ahmadpur, Digamber Rao Latker, Ganpat Rao Kethle, Kalam. About 12000 Satyagrahis were arrested of which 5000 were Hyderabadis. Pandit Vinayak Rao Vidyalankar was nominated as the eighth dictator. He was about to offer satyagraha with 8000 Hyderabdi Satyagrahis on he 21st of July 1939. But the Nizam's Government announced certain administrative reforms and hence the Satyagraha was suspended.

This was followed by a number of arrests of Arya Samaj leaders. Some of them were

1) On 5th March 1939 Kumwar Chandkaran Sharda along with 100 Satyagrahis was arrested in Gulbarga. He was later sentenced to one year rigorous imprisonment.

2) On 22nd March 1939, Kushalchand was arrested in the Gulbarga railway station along with 160 Satyagrahis. He was sentenced to 18 months imprisonment in Gulbarga prison.

3) On 4th April 1939 , Dhurendra Shastri along with 501 Satyagrahis was arrested.

More than 12,000 Satyagrahis were actively involved in the struggle with the Nizam's Government. Initially the Nizam's Government was contemplating coming to some understanding. But the leaders of 'Anjuman-Ittehadul-Muslimeen' prevented the government from doing so and the government had to retrace some of its steps.

Due to tremendous pressure exerted by the Satyagrahis, the government instructed the Aryan authorities to send a deputy with whom they would discuss and clarify the reforms to be introduced. Almost all the demands of Arya Samaj were conceded to. On 8th August 1939, the declaration was made that the Arya Satyagraha had been suspended. The years following the Satyagraha, the Arya Samaj decided to take up constructive work. They decided to setup educational institutions called

Keshava Memorial High School on 20th July, 1940 and the foundation stone was laid on 20th September in the same year by Sri Ghanashyam Singh Gupta. The organizers yearned to have Hindi as the medium of the instruction in the High School, but they could not achieve their objective till 1948.

Speaking in radio broadcast on 21 August 1989 Shri Brahmadatta Snatak on the Hyderabad Satyagraha he said, " The Satyagraha launched in 1939 was not against the Muslims but against the oppressive rule of the Nizam." He said in the Satyagraha, the Sikhs, Jains and even a few Muslims participated. He said that even Sardar Patel admitted that the 1938-39 Satyagraha spearheaded by Arya Samaj prepared the way for the accession of Hyderabad ten years later. I was a test of fire and the Arya Samaj came out victoriously.

This satyagraha has been considered an important landmark in the history of Hyderabad freedom struggle and the government in recognition of it has been honouring those who bravely participated in it by granting pensions to them.

१६ अप्रैल १९३८ को कुछ मुस्लिम गुण्डों की शरारत के कारण हैदराबाद नगर के धूलपेठ नामक मुहल्ले में साम्प्रदायिक दंगा फूट पड़ा। सम्पूर्ण नगर में अशान्ति फैल गयी। पं. विनायकराव जी के निवास-स्थान पर हज़ारों मुसलमानों ने धावा बोल दिया। हुकूमत ने वास्तविक दंगाइयों पर संगीन अभियोग चलाया, जो आर्यसमाजी कार्यकर्ता और आर्य समाज से स्नेह रखने वाले थे। इस अभियोग में आर्य प्रतिनिधि सभा ने पैरवी करने के लिए बम्बई के प्रसिद्ध वकील श्री के.एम. नरिमन को बुलाना चाहा, तो हैदराबाद की हुकूमत ने उनके राज्य में प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया। श्री भोलाभाई देसाई ने कुछ दिन पैरवी की, बाद में देहली के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री बृजबिहारी तव्वकुली को अयुिवतों की ओर से पैरवी के लिए नियुक्त किया गया, किन्तु अदालत से सभी अभियुक्तों को दण्ड दिया गया, विशेषतः सर्वश्री सोहनलाल जी, उमरावसिंह जी तथा देवीसिंह जी विशेष रुप से हुकूमत के कोप-भाजन बने।

दूसरा बलिदान :- २२ जून, १९३८ ई. को कल्याणी ज़िला बिदर के धर्मान्ध मुसलमानों ने वहाँ के एक उत्साही आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री धर्मप्रकाश की हत्या की। धर्मप्रकाश जी का अपराध यही था कि वे बड़ी वीरता तथा लगन के साथ आर्य समाज का कार्य कर रहे थे, जिसको वहाँ के धर्मान्ध मुसलमान सह न सके

उदगीर का दंगा तथा श्री श्यामलाल जी की हत्या :- १९३८ ई. में दशहरे के अवसर पर उदगीर ज़िला बिदर में भीषण दंगा हुआ। परम्परानुसार पुलिस ने आर्यसमाजियों को ही गिरफ़तार कर लिया, किन्तु इस दंगे में आर्यसमाज को बहुत बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी, अर्थात् आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान प्रं. श्यामलाल जी को उनके २० साथियों के साथ गिरफ़तार कर लिया गया और बिदर की जेल में १७ दिसम्बर, १९३८ को उन्हें विष देकर मारा गया। श्री श्यामलाल जी के निधिन से आर्य समाज की बड़ी क्षति हुई। इस हत्या के विरुद्ध भी संपूर्ण देश में रोष प्रकट किया दिया। पश्चात मुझे भी गिरफ़तार कर महबूबनगर जिले के मन्नानूर जेल भेज दिया। मन्नानूर को उस समय निजाम का कोला पानी कहा जाता था। वहां वास्तव में अंडमान जैसा बयंकर वातावरण भी था। मेरी गिरफ़तारी से सारे देश में रोष प्रकट किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने न अत्याचारों तथा अपने उचित अधिकारों की ओर निरन्तर हुकूमत का ध्यान आकर्षित करती रही, किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने भी स्वयं निज़ाम, उनके राजनैतिक विभाग के मन्त्री और अन्य उच्चाधिकारियों का ध्यान इन अत्याचारों की ओर आकर्षित करती रही, किन्तु अत्याचार और अन्याय तीव्र ही होते गये, कम नहीं हुए। अन्ततः इसके सिवा और कोई मार्ग ही नहीं रह गया कि संगठित रूप से हैदराबाद राज्य के मुकाबले की तैयारी की जाए।

आर्य रक्षा समिति का आन्दोलन :- अन्ततः आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली से परामर्श करके एक आर्य रक्षा-समिति की स्थापना की और हैदराबाद में सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया। २४ अक्तूबर, १९३८ ई.को श्री देवीलाल जी के नेतृत्व में आर्य समाज का पहला जत्था सत्याग्रह करके जेल गया, जिसको तीन वर्ष का सक्षम कारावास दिया गया।

हैदराबाद की हुकूमत के अत्याचारों के विरूद्ध सत्याग्रह का सर्वाधिकार सार्वदेशिक सभा देहली ने महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज को सौंप दिया था, किन्तु आर्य-जगत् की सम्मति प्राप्त करने के लिए स्वामी जी महाराज ने २९ दिसम्बर, १९३८ को शोलापुर में सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन का अधिवेशन आमन्त्रित किया जिसमें सर्वसम्मति से सत्याग्रह करने का निर्णय किया गया।

आर्य समाज का विराट सत्याग्रह :- आर्य समाज का सत्याग्रह किस शक्ति और तीव्र गति से चलेगा इसका अनुमान भी हैदराबाद की हुकूमत को नहीं हुआ था। केन्द्रीय सत्याग्रह-समिति की आवाज़ पर भारत के सम्पूर्ण प्रान्तों से जत्थे हैदराबाद की ओर चल पड़े। सम्पूर्ण देश में उत्साह का सागर उमड़ पड़ा। सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज निर्वाचित हुए। हुकूमत को सूचित करके स्वामी जी महाराज ने ३१ जनवरी, १९३९ को हैदराबाद नगर में प्रवेश किया किन्तु पुलिस ने उन्हें गिरफ़तार करके मोटर से शोलापुर भेज दिया, अतः स्वामी जी ने पुनः ४ फ़रवरी को २० सत्याग्रहियों के साथ गुलबर्गा में सत्याग्रह किया, जिन्हें एक-एक वर्ष का सश्रम कारावास का

दण्डदिया गया। दूसरे डिक्टेटर श्री कुंवर चांदकरण जी शारदा ५ मार्च को गुलबर्गा में गिरफ़तार कर लिये गये। तीसरे सर्वाधिकारी म. खुशहालचन्द जी

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने १५४ साथियों के साथ सत्याग्रह किया। चौथे सर्वाधिकारी पं. धुरेन्द्र शास्त्री स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज थे। इनके जेल जाने से पूर्व ही हैदराबाद की हुकूमत डांवाडोल होने लगी और उसने समझौते का प्रयत्न प्रारम्भ किया, किन्तु मुसलमानों की संस्था मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन के दबाव के कारण हुकूमत ने अपना प्रयत्न अधूरा छाड़ दिया। अतः सत्याग्रह पुनरपि पूरे वेग के साथ चल पड़ा और पं. धुरेन्द्र जी शास्त्री ने ५३० साथियों के साथ गुलबर्गा में सत्याग्रह करके दो-दो वर्ष का कारावास पाया। पाँचवें सर्वाधिकारी पं. वेदव्रत जी स्वामी अभेदानन्द जी महाराज, छठे सर्वाधिकारी म. कृष्ण जी तथा सातवें सर्वाधिकारी पं. ज्ञानेन्द्र जी ने क्रमशः सत्याग्रह किया। इन अखिल भारतीय ख्याति के नेताओं के अतिरिक्त, हैदराबाद राज्य के आर्यसमाजी नेताओं के डिक्टेटरशिप में भी बड़े-बड़े जत्थे जेल गये, जिनमें केवल हैदराबाद सत्याग्रहियों ने ही भाग लिया। इन में श्री शेषराव जी, श्री दत्तात्रयप्रसाद जी, श्री दिगम्बरराव जी शिवनगीकर लतूर, श्री शंकरराव जी पटेल, आन्धेरी, श्री निवर्ति रेड्डी जी, अहमदपूर, श्री दिगम्बराव जी लाठकर, श्री गणपतराव जी कथले, कलम के नाम उल्लेखनीय हैं। अब तक लगभग १२ हज़ार सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया था जिन में ५ हज़ार हैदराबादी सत्याग्रही थे। पं. विनायकराव जी विद्यालंकार आठवें सर्वाधिकारी निर्वाचित हुए। उन्होंने घोषणा की कि वे अपने साथ एक हज़ार केवल हैदराबादी सत्याग्रही ही ले जाएंगे। २१ जुलाई १९३९ को उन्हें सत्याग्रह करना था, किन्तु १७ जुलाई को हदराबाद की हुकूमत ने शासनसुधार की घोषणा कर दी।

पुलिस की उपस्थिति में मुसलमानों ने आक्रमण किये और निहत्थे सत्याग्रहियों को घायल किया, घायलों के औषधोपचार की समय पर कोई व्यवस्था नहीं की गयी, अनेक स्थानों पर सत्याग्रहियों को कई-कई घण्टों तक भूखा और प्यासा रखा गया, और मार-पीट तो साधारण बात थी। इन अत्याचारों का यह परिणाम हुआ कि सत्याग्रह की समाप्ति तक लगभग २३ आर्यसमाजियों का स्वर्गवास हो गया। अंत में इन शहीदों के रक्त ने रंग दिखाया और हैदराबाद की हुकूमत को झुकना पड़ा। यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है ि आर्य-सत्याग्रह को राजनैतिक दृष्टि से इतना महत्व प्राप्त हुआ कि इंग्लैण्ड की लोग सभा में भी इसके बार में प्रश्न उठे और भारत की ब्रिटिश सरकार को भी इसके शीघ्र समाप्त होने की आवश्यकता अनुभव होने लगी।

सत्याग्रह की समाप्ति तथा सफलाता :- हैदराबाद की हुकूमत की ओर से सुधारघोषणा होने के उपरान्त उस पर विचार करने के लिए सत्याग्रह को अस्थायी रुप से रोक दिया गया, और नागपुर में १४ तथा ५ जुलाई १९३९ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी में सुधारों पर गम्भीरता से विचार किया गया। सुधार में कुछ बातें सन्दिग्ध थीं, अतः उनके संबंध में हैदराबाद की हुकूमत से स्पष्टीकरण प्राप्त करने का निर्णय हुआ। हैदराबाद की हुकूमत ने पहले तो ऐसा स्पष्टीकरण देने से इनकार कर दिया, किन्तु जब सार्वदेशिक सभा स्पष्टीकरण पर अड़ गयी, तो हुकूमत ने सभा को अपना एक प्रतिनिधि भेजने के लिए कहा। इस पर सभा ने लाला देशबन्धु जी गुप्त को निज़ाम की हुकूमत से वार्तालाप के लिए भेजा। इस वार्तालाप के फलस्वरुप आर्य समाज की सभी माँगों को स्वीकार किया गया तथा हुकूमत ने आवश्यक स्पष्टीकरण कर दिया। इस पर ९ अगस्त १९३९ को सत्याग्रह को बन्द करने की जिस समय घोषणा की गयी, उस समय हैदराबाद की सीमाओं पर कुल ३५०० सत्याग्रही प्रतीक्षा कर रहे थे। सत्याग्रह के शिविर राज्य के चारों ओर स्थिपित किये गये थे, जिनमें विजयवाड़ा, शोलापुर, वार्शी, अहमदनगर, मनमाड़, पूसद और चाँदा के शिविर उल्लेखनीय हैं।

सत्याग्रह-काल में सत्याग्रहियों ने जिस धैर्य, शान्ति तथा अहिंसा वृत्ति को धारण किया था-और विशेषतः ऐसे अवसरों पर जब कि राज्य की पुलिस तथा धर्मान्ध मुसलमानों की ओर से उत्तेजित करने वाला दुर्व्यवहार किया जाता था-और सत्याग्रहियों ने जिस संयम का परिचय दिया, वह आर्य समाज की उच्च नैतिकता का परिचायक है। इसी नैतिक श्रेष्ठता ही का परिणाम है कि आर्य समाज का यह सत्याग्रह अत्यन्त सफल और अहिंसात्मक सत्याग्रह के इतिहास का एक उल्लेखनीय उदाहरण बन गया, अन्यथा भारत के बड़े-बड़े कर्णधार आर्य समाज के इस सत्याग्रह का परिणाम साम्प्रदायिक संघर्ष अथवा कटुता के रूप में प्रकट होने का अनुमान कर रहे थे।

लूट और अग्निकाण्ड :- हिन्दू प्रजा को आतंकित करने और किसी भी प्रकार की जागृति की रोकथाम करने के लिए लूट और अग्निकाण्ड का योजनाबद्ध कार्यक्रम मुसलमानों की ओर से किया जाने लगा। बिदर, जो जिले का स्थान है और उस समय एक कारोबारी केन्द्र भी था, सबसे पहले इस अग्निकाण्ड का शिकार बना। वहाँ के गंज को लूटा गया और बाद में आग लगा दी गयी। जो दुकानें जलीं, वह सब हिन्दुओं की थीं। इसके कुछ ही समय बाद गुलबर्गा जिले के गुरमटकल नामक स्थान पर बिदर की पुनरावृत्ति की गयी। दोनों स्थानों पर अपराधियों को छोड़ा गया और उल्टे ऐसे हिन्दुओं पर ही अभियोग चलाया गया, जिनकी इस अग्निकाण्ड में लाखों रुपयों की हानि हुई थी।

१९४१ में पं. विनायकराव जी को पूर्ववत् अध्यक्ष और मुझे मन्त्री चुना गया।

१९३६ से १९४१ तक पं. बंसीलाल जी ने ही इस पद को संभाला हुआ था।

१९३९ में किये हुए समझौते को दुर्लक्ष्य करके हुकूमत ने पूर्ववत् प्रतिबन्धों और बाधाओं को तीव्र कर दिया था। दामरगिद्दा जिला गुलबर्गा में "ओ३म" के झण्डे पर पाबन्दी लगा दी गयी। उमरी जिला नांदेड़ में पठानों ने गंगाराम, गणपतराव, दत्तात्रयराव नामक तीन व्यक्तियों की केवल इसलिए हत्या की, क्योंकि तीनों आर्य समाज के बड़े उत्साही कार्यकर्ता थे। ४ जून १९४१ को अलन्दी नामक स्थान के आर्यसमाज मन्दिर को समाप्त कर दिया गया। उसी वर्ष ३ सितम्बर को माडीं जिला बिदर के १४ आर्यसमाजियों पर, इस आधार पर कि वे प्रचार का कार्य करते हैं, अभियोग चलाया गया। अहमदपुर तथा चाकूर की आर्यसमाजी पाठशालाओं को बन्द कर दिया गया। साकोल के आर्य समाज को नोटिस दिया गया कि बिना आज्ञा हवन-कुण्ड की तैयारी, सरकारी आज्ञा का उल्लंघन समझा जाएगा। तात्पर्य यह कि जिलों, तालुकों और ग्रामों में स्थान-स्थान पर हैदराबाद की पुलिस ने आर्यसमाजियों के धार्मिक कार्यों और सामाजिक समारोहों पर प्रतिबन्ध लगाने शुरु किये। इस प्रकार हैदराबाद की हुकूमत के अत्याचार का तृतीय युग प्रारम्भ हो गया।

बात बड़ी खेदपूर्ण है कि हुकूमत ने बिना कारण ही आर्य समाज को अपने विरुद्ध एक दल माना, और मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन परोक्ष रुप में हुकूमत से मिल गयी। राज्य में मजलिस के प्रधान नवाब बहादुरयार जंग को द्वेषपूर्ण तथा उत्तेजक भाषणों की पूरी स्वतन्त्रता दे दी गयी। हुकूमत के पक्षपातपूर्ण व्यवहार से प्रोत्साहन पाकर जिलों में मुस्लिम गुण्डों ने आर्यसमाजियों पर खुल्लमखुल्ला आक्रमण करना आरम्भ किया। हुकूमत ने कभी भी आत्याचारियों पर हाथ नहीं डाला, उसने केवल आर्य समाज को तंग करना प्रारम्भ किया। राज्य से बाहर के आर्यसमाजी पत्रों का प्रवेश बन्द कर दिया गया, आर्य प्रतिनिधि सभा के पत्र को राज्य में छपने की अनुमति न मिलने के कारण उसे शोलापुर से मुद्रित तथा प्रकाशित किया जाता रहा, किन्तु उसे भी हुकूमत ने बन्द कर दिया। इसके विपरीत मुस्लिम पत्र निरंतर आर्य समाज पर, उसके धार्मिक विश्वासों पर अशिष्ट आक्रमण करते रहते थे। हुकूमत के इस दुर्व्यवहार के पीछे आर्य समाज को समाप्त करने का एकमात्र उद्देश्य था। किंतु हुकूमत की इस कठोरता के कारण आर्य समाज में दृढता और प्रतिकार-शक्ति बढ़ती गयी। वैदिक धर्म का प्रचार निरन्तर बढ़ता गया, जिलों में आर्य समाजों का कार्य फैलता गया और आर्य समाज के उत्सव, पर्व तथा अन्य समारोह धूमधाम से मनाये जाते रहे।

प्रथम आर्य सम्मेलनः- १९४२ से १९४८ का समय अत्यन्त संघर्षमय रहा। इस काल में हुकूमत का अत्याचार अपनी सीमा को पहुँच गया, और आर्य समाज को प्रत्येक अग्निपरीक्षा से हो कर उस अन्तिम द्वन्द्व के लिए तैयार होना पड़ा, जो हैदराबाद में जनतन्त्र तथा स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए हुआ। १९४२ में पं. विनायकराव जी की अध्यक्षता में बड़े ही उत्साह के साथ **उदगीर** में प्रथम आर्य सम्मेलन मनाया गया। इस सम्मेलन को मनाने का यत्न १९३४-३५ से चल रहा था, जब कि पं. श्यामलाल जी सभा के मन्त्री थे। १९४२ में सात-आठ वर्षों का प्रयत्न फल लाया। सम्मेलन का स्वागत मन्त्री मैं ही था। सम्मेलन १२ से १३ फ़रवरी १९४२ तक होता रहा, जिसमें २६ प्रस्ताव स्वीकृत हुए। इनमें से कुछ प्रस्तावों के द्वारा आर्य समाज की माँगों को दुहराते हुए हुकूमत पर इस बात का दबाव डाला गया कि उसने सत्याग्रह के समय जो समझौता किया था उसकी ओर से उपेक्षा की है और आर्यों पर राज्य में पुनः अत्याचार प्रारम्भ हो गया है। यदि इन अत्याचार और प्रतिबन्धों को समाप्त करके आर्य समाज की मांगों को पूरा नहीं किया गया, तो उसके फलस्वरुप उत्पन्न होने वाली विकट परिस्थिति का सम्पूर्ण दायित्व हुकूमत पर होगा, किन्तु हुकूमत ने अपने स्वभावानुसार इसकी भी उपेक्षा की।

औराद मे अग्निकाण्ड :- होली के अवसर पर औराद शहाजहानी ज़िला बिदर के कुछ धर्मान्ध मुसलमानों ने दंगा आरम्भ किया, बाज़ार में गोलियाँ चलायीं और जब दुकानें बन्द हो गयीं, तो मिट्टी का तेल डाल-डाल कर दुकानों में आग लगा दी गयी, एक हिन्दू की हत्या कर दी गयी। जलने वाली सभी दुकानें हिन्दुओं की थीं। इससे हिन्दुओं की बहुत बड़ी आर्थिक हानि हुई और बहुत-से हिन्दू घायल हुए। औराद के इन पीड़ितों की सहायता के लिए महात्मा गाँधी ने १,५००- रुपये सभा के पास भेजे तथा स्वयं सभा ने २००० रुपये व्यय किये। वहाँ के आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री देशबन्धु जी तथा उनके साथी गिरफ़तार किये गये, और उन्हें लम्बी-लम्बी सज़ाएँ मिलीं। इसी वर्ष चिंचोली और गुंजोटी के आर्यसमाजों के उत्सवों की आज्ञा नहीं दी गयी।

श्री शिवचन्द्र जी का बलिदान :- १० दिसम्बर १९४२ को गुलबर्गा में मुसलमानों ने हिन्दुओं की दुकानों और गोदामों को लूट लिया, जिससे उन्हें काफ़ी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी। नागरकर्नूल और हिंगोली के हिन्दुओं पर घातक आक्रमण हुए, किंतु पुलिस ने उल्टे आर्यसमाजियों पर ही अभियोग चलाया। इसी प्रकार जोगीपेठ और तेरखेड़ा में भी आर्यसमाजियों को बहुत सताया गया। ३ मार्च १९४२ को हुमनाबाद में होली के उपलक्ष्य में जुलूस निकला, जिसमें आर्य समाज के उपदेशक श्री शिवचन्द्र जी तथा उनके चार साथियों को मुसलमानों ने गोलियों का निशाना बना कर मार दिया। हुकूमत की ओर से इन हत्याओं, लूट-मार तथा अग्निकाण्ड को रोकने की कोई कोशिश नहीं की गई।

द्वितीय आर्य सम्मेलन :- १९४३ ई. में हैदराबाद स्टेट का दूसरा आर्य सम्मेलन पं. गणपतशास्त्री जी की अध्यक्षता में **निज़ामाबाद** में मनाया गया। इसमें भी

अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किये गये। जिनमें से एक प्रस्ताव के द्वारा त्रिवर्षीय कार्यक्रम तैयार किया गया, जिसके अनुसार राज्य में एक सौ पाठशालाएँ और २५ हज़ार स्वयंसेवकों की तैयारी की योजना बनायी गयी। एक प्रस्ताव पर दिये गये श्री दत्तात्रय प्रसाद जी के एक भाषणा को बहाना बना कर पुलिस ने उन पर एक अभियोग चलाया। इसी प्रकार मुझ पर भी आर्य समाज गुलबर्गा में दिये गये एक भाण के कारण एक केस चला, जिससे मुझे एक वर्ष का सश्रम कारावास का दण्ड मिला। इसी वर्ष गुरुकुल घटकेश्वर में उपदेशकों के लिए एक स्वाध्याय मण्डल भी चलाया गया। राज्य-भर में ३६ उत्सव और २९ स्थानों पर वेदसप्ताह मनाया गया।

तृतीय सम्मेलन :- १९४४ ई. में श्री राय सूरजचन्द्र जी की अध्यक्षता में **नारायणपेट** में तृतीय आर्य सम्मेलन मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष के जुलूम की आज्ञा नहीं दी गई। अनेक प्रस्तावों द्वारा आर्य समाज के साथ न्याय करने के लिए हुकूमत पर बल डाला गया। इस सम्मेलन के अन्तर्गत महिला सम्मेलन, आर्यकुमार सम्मेलन, उपदेशक सम्मेलन तथा मन्त्री सम्मेलन भी हुए।

इसी वर्ष सिन्ध की मुस्लिमलीगी मन्त्रि-मण्डल ने अपने द्वेष तथा संकोच वृत्ति का परिचय देते हुए ''सत्यार्थप्रकाश'' पर प्रतिवन्ध लगा दिया, जिसके कारण भारत के सभी अर्यसमाजी क्षेत्रों में रोष तथा खलबली पैदा हो गई। स्थान-स्थान पर सभाएँ हुई, जिनमें प्रतिवन्ध के प्रति विरोध प्रकट किया गया। हैदराबाद में भी आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस आन्दोलन की सफलता के लिए पूर्ण योग दिया।

दशहरे के अवसर पर इसी वर्ष निज़ामाबाद में एक साम्प्रदायिक दंगा हो गया। सभा ने हुकूमत सेमांग की कि इस दंगे की निष्पक्ष जाँच करवा कर अपराधियों की संख्या ३०० हो गई और पाठशालाओं तथा विद्यार्थी-वसतिगृहों की संख्या भी पर्याप्त बढ़ गई। सभा ने जनता की माँग को लक्ष्य में रखकर ''सत्यार्थप्रकाश'' का द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया।

उपदेशक विद्यालय :- १९४५ ई. में नलगोण्ड में एक उपदेशक विद्यालय की स्थापना की गई। इसमें वैदिक धर्म के प्रचारकों को तैयार किया जाता था। विद्यालय को आर्थिक दृष्टि से पुष्ट करने के लिए पं. भद्रदेव जी तथा मैने घूम-घूम कर सात हज़ार रुपया एकत्रित कर लिया। इस वर्ष २५ आर्यसमाजों ने वेद सप्ताह मनाया, और उत्सव भी बहुत स्थानों पर किये गये।

चतुर्थ आर्य सम्मेलन गुलबर्गा में व पुलिस का लज्जास्पद अत्याचार :- निज़ाम की हुकूमत की साम्प्रदायिक नीति और पुलिस के अत्याचारों को आर्य समाज ने जिस ढंग से प्रकट किया, उसके कारण निज़ाम की पुलिस ने आर्यसमाजियों से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर रखा था। अतः उसको अवसर मिल गया। २२ से २४ अप्रैल १९४५ को हैदराबाद स्टेट का चतुर्थ आर्य सम्मेलन गुलबर्गा में राजा नारायणलाल जी पित्ती की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर पुलिस ने एक अत्यन्त भीषण दंगा पैदा कर दिया। पुलिस ने सम्मेलन को असफल बनाने के लिए नाना प्रकार का उपद्रव खड़ा किया। इन उपद्रवों से तंग आकर सम्मेलन के कार्यकर्ता पिण्डाल से बहार जब पुलिस के उच्चाधिकारियों से वर्तालाप कर रहे थे कि अधिकारियों की उपस्थिति में पुलिस ने पं. विनायकराव जी, पं. गणपतशास्त्री जी, मुझ पर, और सभा के एक कर्मचारी श्री हीरालाल पर डण्डों से आक्रमण कर दिया। पं. विनायकराव जी, पं. गणपतशास्त्री जी और हीरालाल जी बुरी तरह घायल हो गये और मेरी टाँग ही तोड़ दी गई, सिर पर भी बुरी तरह घाव आये इसके साथ ही सम्पूर्ण नगर में दंगा फैल गया। सारी रात शहर में अशान्ति फैली रही। दूसरे दिन पिण्डाल से स्टेश्न को जाने वाले सभी आर्यसमाजियों का शहर में पुलिस की उपस्थिति में पीटा गया। इस भीषण दुर्घटना को आर्य समाज ने बड़ी शान्ति के साथ सहन किया। गुलबर्गा की इस दुर्घटना और आर्यों पर किये पुलिस के अत्याचारों के विरुद्ध चारों ओर से विरोध प्रदर्शित किया गया। जब हुकूमत की काफ़ी बदनामी हुई, तो उसने अपने कलंक को धोने के लिए जो कुछ किया, वह इतना ही कि एक सब इन्स्पेक्टर और चार कान्स्टेबलों को पदच्युत कर दिया।

मेरी दशा ऐसी हो गई कि बिस्तर से उठना और चलना भी कठिन हो गया। अतः सभा का मन्त्री श्री कृष्णदत्त जी को बनाया गया। सभा हुकूमत के इन अन्यायों से इताश नहीं हुई। उसने पूरी शक्ति से अपने कार्य को जारी रखा। १९३९ ई. में किये गये समझौते के अनुसार आर्य समाज के उन विद्वानों के प्रवेश का प्रयत्न प्रारम्भ किया, जिन पर हुकूमत ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। सभा के निरन्तर प्रयत्नों के बाद १९४६ ई. में श्री शिवचन्द्र जी, पं. चन्द्रभानु जी, पं. क्षितीशचन्द्र जी वेदालंकार आदि के प्रवेश पर से निषेधाज्ञा उठा ली गई।

पूर्वी बंगाल में साम्प्रदायिक दंगा प्रारम्भ हो चुका था, जिसमें वहां के हिन्दुओं की पर्याप्त जन-धन सम्बन्धी हानि हुई। बहुतों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया। इसके कारण सम्पूर्ण देश में रोष तथा सन्ताप फैल गया। चारों ओर से वहाँ के पीड़ितों की सहायता करने का प्रयत्न चला। सभा की ओर से २५ हज़ार रुपया पूर्वी बंगाल की सहायता में एकत्रित किया गया, और श्री गंगाराम जी तथा श्री बंसीलाल जी व्यास को नोआखाली में सेवाकार्य के लिए भेजा गया।

वरंगल में पाँचवाँ आर्य-सम्मेलन :- १९४६ में अभी अस्पताल में ही था कि हुकूमत ने मुझ पर भाषण-बन्दी का हुक्म लगा दिया तथा शहर छोड़ कर कहीं न जाने का भी बन्धन थोप दिया। गुलबर्गे के अत्याचार और नाना प्रकार के प्रतिबन्धों से हुकूमत को यह विश्वास हो गया था कि

आर्य समाज की कमर टूट गयी है, न्किंतु उसका यह अनुमान मिथ्या था। १९४६ **में वरंगल में पाँचवाँ आर्य-सम्मेलन** पुनः पं. विनायकराव जी की अध्यक्षता में ही मनाया गया। इस सम्मेलन में आर्य समाज ने जिस उत्साह और उमंग का परिचय दिया, उससे हुकूमत को उसके जीवन तथा शक्ति का परिचय मिल गया। सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। सम्मेलन के स्वागत मंत्री पदेन श्री कृष्णदत्त जी थे। सभा ने मुझ पर लगाये प्रतिबन्धों के विरुद्ध कार्यवाही की। फलस्वरूप मुझ पर से १९४६ में प्रतिबन्ध हटा लिया गया। हैदराबाद की जनता ने इस पर हार्दिक सन्तोष प्रकट करते हुए बड़े उत्साह के साथ मेरा स्वागत किया तथा एक बड़ी धनराशि भेंट की।

Sir Mirza Ismail assumed the Prime Minister ship of Hyderabad and a hope for a better situation was expected. Permission was granted to start a weekly, " Arya Bhanu". Many Arya Samajists languishing in jail for communal riots were released. A minister of such liberal views could not continue in Hyderabad. Circumstances so conspired that he had to submit his resignation and leave Hyderabad.

सत्याग्रह के बाद से सभा के लिए एक साप्ताहिक पत्र की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। भाग्यवश उसी वर्ष हैदराबाद के प्रधानमंत्री-पद पर सर मिर्ज़ा इस्माईल नियुक्त हो कर आये। न्होंने राज्य में साम्प्रदायिक सद्भावना उत्पन्न करने का यत्न किया। उसी के फलस्वरुप हुकूमत की नीति में परिवर्तन आया और सभा को ''आर्यभानु'' नामक एक हिन्दी साप्ताहिक पत्र को हैदराबाद से प्रकाशित करने की अनुमति मिली। यह राज्य में मुद्रित होने वाला सबसे पहला हिन्दी पत्र है। इसके सम्पादन-कार्य का भार पं. विनायकराव जी तथा श्री कृष्णदत्त जी पर डाला गया। इसी वर्ष एक और उल्लेखनीय बात यह हुई कि सांप्रदायिक दंगों के कारण जितने भी आर्य-हिन्दू लम्बी-लम्बी सज़ाएँ भुगत रहे थे, उन्हें मुक्त कर दिया गया। इसके कारण स्थिति के सुधरने की कुछ आशा बन रही थी कि मुसलमानों की ओर से सर मिर्ज़ा इस्माईल का घोर विरोध प्रारंभ हुआ और उन्हें अपने पद से त्याग-पत्र दे कर लौट जाना पड़ा।

On 15th August 1947, When India attained Independence, Hyderabad ,was trying to assert its independence. It was during this time that the sixth annual conference of Arya Samaj took place at Jalana. It passed a resolution that the Nizam should integrate his dominions with the Indian Union and immediately allow the formation of a responsible government.

During he period from 15th August 1947 to 17th September 1948, thousands of Hindus had left their houses and crossed into the Indian territory due to the Razakar menace. Arya Samaj had set up camps for such refugees in places like Sholapur, Pandarpur, Barsi, Bijapur, Umaarkhed, Buldhana, Amaravathi and Vijayawada and every possible help was given to them.

Pandit Vinayak Rao was the President of Lawyer's Protest Committee. He collected authentic information about the Razakar atrocities and sent a report to New Delhi and therefore was arrested. Swami Swatantra Nand ji worked as Field Marshal and accredited lieutenant of Mahatma Narayan Swami. He arranged and managed the Satyagraha camps most efficiently and with exemplary tact and perseverance.

When Hyderabad declared Independence, K. Joshi, printed pamphlet making clear the intentions of the majority community in Hyderabad. The extracts are as follows,

Hyderabad cannot suppress the democratic aspirations of the people any longer. In this age of democracy it is an admitted fact that sovereignty rests with the people. Hyderabad cannot be an exception to this rule..The people of Hyderabad cannot be politically isolated from the rest of India. Hyderabad groans under the heels of feudal bureaucracy today. It is politically backward and economically poor. The standard of literacy is very low. There is no freedom of speech in the state.. Responsible Government is the only panacea to these evils.

These are the people who laid down their lives fighting the oppressive rule of Nizam of Hyderabad. 1. Shyamlal 2. Ram 3. Mahadev Rao 4. Swami Kalyan Sen 5. Malkhan Singh 6. Dharma Prakash 7. Pandurang 8. Shanti Prakash 9. Lakshman Rao 10. Bhakta Arora 11. Nandu singh 12. Badan Singh 13. Chotelal 14. Fakir Chand 15. Bheem Rao 16. Arjun Singh 17. Baidyanath 18. Dayanand 19. Radhkrishna 20. Mahdev 21. Paramanand 22. Vishnu Bhagavanta 23. Satyanand 24. Vedprakash 25. Ramnath 26. Dharma Prakash 27. Purushotham 28. Venkat Rao 29. Matu Ram 30. Govind Rao 31. Rathi Ram 32. Tarachand 33 Ashrafi lal 34. Manik Rao 35. Mahadev 36. Satyanarayan 37 Brahmachary 38. Narasingh

For the first time after 48 years the Hyderabad Satyagrahis were honoured in an Aryan Conference in Ajmer. A large number of people gathered from different parts of India. Brahmadatt Snatak speaking on his occasion said,

2500 Satyagrahis were nominated by him for awarding them pension as freedom fighters. But only 50 out of the have started receiving pensions.

The account of Pandit Narendraji, one of the stalwarts of he Arya Samaj movement in his autobiography titled, 'Jeevan ki Dhoop Chaav' gives a vivid picture of the conditions in the Hyderabad state during Osman Ali Khan's rule.

१९४७ का वर्ष आरंभ हुआ, निज़ाम की हुकूमत ने एक निरंकुश फ़ासिस्ती सत्ता की भान्ति बहुसंख्यकों पर अत्याचार का चक्र चलाना प्रारंभ किया। इस समय तक आर्य समाज ने केवल एक शक्तिशाली संस्था थी अपितु उसने अपने कार्यो और प्रभाव के कारण तथा अपने त्याग और बलिदानों के बलबूते पर अपने लिए एक उच्च स्थान प्राप्त कर लिया था। हुकूमत के अत्याचारों ने उसके सुधारआन्दोलन को एक क्रान्तिकारी आन्दोलन में बदल दिया था। आर्य समाज ने आपत्तियों में भी अपने रचनात्मक कार्यो के द्वारा तथा समय-समय पर होने वाले हुकूमत के सांप्रदायिक पक्षपात का खुल्लमखुल्ला विरोध करके हिन्दू जनता में जागृति तथा नैतिक बल पैदा कर दिया था। आर्य समाज ने अपने आचरण से जनता पर यह प्रदर्शित कर दिया था कि वह संगठित और अनुशासित हो कर निज़ाम जैसी निरंकुश तथा अभिमानी शक्ति से अपने अधिकारों एवं स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकती है। आर्य समाज ने अपने सत्याग्रह में निज़ाम को नैतिक रुप से परास्त कर दिया था, और उसे अनपी माँगों को स्वीकार करने पर बाधित किया था। इस प्रकार आर्य समाज ने राज्य की समस्त स्वातंत्रप्रिय संगठनों के लिए, जिनमें हैदराबाद स्टेट कांग्रेस विशेष रुप से उल्लेखनीय है, अन्तिम संघर्ष के लिए क्षेत्र तैयार कर दिया।

निज़ाम को हिज़ मैजिस्टी बनने की आकांक्षा :- भारत-विभाजन के उपरान्त जब अंग्रेज सत्ता हस्तान्तरित करके देश से चले गये, तो निज़ाम की साम्प्रदायिकता को भड़कने का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। हैदराबाद भारत का एक अविच्छिन्न अंग था, अतः उसका पृथक या स्वतन्त्र रहने का कोई अर्थ ही नहीं था। जब १५ अगस्त १९४७ को वर्षो की दासता के पश्चात् भारत स्वतन्त्र हुआ, तो सम्पूर्ण देश में आशाओं और अभिलाषाओं का एक प्रकाश झलक पड़ा। किन्तु हैदराबाद राज्य पर कुछ समय तक अन्धकार और हैदराबादी जनता पर उदासी छा गयी, क्योंकि इस प्रदेश को भारत से सर्वथा पृथक रखने और फ़ासिस्ती सिद्धान्तों पर इसको एक स्वतन्त्र राजनीतिक इकाई के रूप में सार्वभौमसत्ता प्राप्त राज्य का स्वरूप देने की योजना बनने लगी। इसके साथ ही हिज़ इक्ज़ाल्टेड हाइनेस नवाब मीर उस्मान अली खां आसफ़जाह सप्तम ने "हिज़ मैजिस्टी" बनने की महत्वाकांक्षा में मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन से गठजोड़ किया, और १५ अगस्त १९४७ को हैदराबाद की स्वीधनता की घोषणा कर दी। मजलिस अत्तेहादुल मुसलमीन दीर्घ काल से हैदराबाद को एक इस्लामी राज्य और निज़ाम को अपनी स्वतन्त्र राजनीतिक सत्ता का प्रतीक समझती आयी थी। उसे अब स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ, और उसने अपनी शक्ति को बढ़ाने तथा अपने आपको अर्द्ध-सैनिक रुप में परिवर्तित करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। प्राचीन हैदराबाद के मानचित्र के अनुसार बरावर, उत्तरी सरकार तथा आंध्र के ज़िलों पर भी अपना अधिकार जतलाना आरम्भ किया। गोवा को पुर्तगाल कसे ख़रीदने का प्रयास होने लगा, संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता के स्वप्न देखे जाने लगे और अंग्रेजों की खुशामद करके ब्रिटिश कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स में सम्मिलित होने की योजना बनने लगी।

मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन का स्वप्न :- जनता निज़ाम सरकार की इस नीति के सर्वथा विपरीत थी। इस नीति को राज्य तथा राज्यवासियों के लिए घातक समझा जाने लगा। अतः जनता में "स्वतन्त्र हैदराबाद" के नारों से अशान्ति उत्पन्न हो गयी। बहुसंख्यक प्रजा के मत को कुचलकर निज़ाम सरकार ने जहाँ अपने उद्धेश्यकी प्राप्ति के लिए हाथ-पांव मारने शुरु किये, वहां मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन ने तीन-चार लाख रज़ाकारों (स्वयंसेवकों) की भर्ती करके तथा उन्हें कुछ सैनिक शिक्षा देकर चारों ओर लूटमार और आतंक फैला दिया। इनके इनके हौसले इतने बढ़ गये कि श्री क़ासिमरज़वी के नेतृत्व में भारत सरकार से सैनिक टक्कर लेने के स्वप्न देखने लग गये। इन्हें राज्य का पूरा सहयोग प्राप्त था। हुकूमत ने भी राज्य-भर में सेना और पुलिस का जाल बिछा दिया। राज्य की ओर से पुलिस, सेना और रज़ाकारों को इस बात की छुट्टी दे दी गयी थी कि हैदराबाद की स्वाधीनता का जो कोई विरोध करेगा, उसे गोली से उड़ा दिया जाए।

१९४७ ई. का आर्य समाज तथा अन्य सभी राष्ट्रीयताप्रिय संगठनों के लिए अत्यन्त कठिन समय था, क्योंकि निज़ाम सरकार राज्य की समस्त स्वाधीनता तथा लोकतन्त्र-प्रिय शक्तियों को पददलित करने का भीषण चक्र चला रही थी। यह जनते हुए कि सेना, पुलिस और रज़ाकारों की ओर से हत्याओं तथा लूट-मार की जा रही है, आर्य समाज ने "स्वाधीन हैदराबाद" नामक हैदराबाद की हुकूमत के आंदोलन का डट कर विरोध किया, और उसके विरुद्ध युद्ध करने में अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी। आर्य समाज ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में अपने इस विश्वास को प्रकट कर दिया कि हैदराबाद भारत का एक अंग बन कर सच्चे अर्थो में स्वतन्त्र और समृद्ध बन सकता है। आर्य समाज की इस घोषणा के साथ ही निज़ाम की पुलिस, सेना और रज़ाकारों की शक्ति और ध्यान आर्य समाज की ओर फिर गया।

गिरफ्तारियाँ और विद्यार्थियों की ओर से प्रदर्शन :- हैदराबाद स्टेट कांग्रेस ने राज्य की एक प्रतिनिधि राजनीतिक संस्था के रुप में जनता को अन्तिम संघर्ष के लिए तैयार करना प्रारम्भ कर दिया। इस संघर्ष में निज़ाम की हुकूमत के विरुद्ध मोर्चा लेने में, कांग्रेसी आन्दोलन में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भाग लिया और ३० जुलाई १९४७ को मेरे अतिरिक्त पं. दत्तात्रय प्रसाद जी, पं. गंगाराम जी, श्री वामनराव जी को पुलिस ने गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। मेरी गिरफ्तारी के विरोध में सहस्त्रों विद्यार्थियों ने सुलतान बाज़ार में एक वृहद् जुलूस निकाला। विद्यार्थियों में हुकूमत के विरुद्ध इतना रोष और क्षोभ था कि जुलूस तितर-बितर करने के लिए पुलिस द्वारा

किये गये लाठीचार्ज का भी परिणाम नहीं हुआ, विद्यार्थी निरन्तर नारे लगाते ही रहे। अन्ततः कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष श्री स्वामी रामानन्द जी को आकर उन्हें शान्त करने की चेष्टा करनी पड़ी।

रायकोड़ में फायरिंग :- ७ जून १९४७ में रायकोड़ जिला बिदर में पुलिस और रज़ाकारों ने मिल कर हिन्दुओं पर फायरिंग कर दी। परिणाम स्वरूप १४ हिन्दुओं की हत्या हुई और घायलों की संख्या इससे अधिक है। इसके सिवा १५४ दुकान और मकानों को जला कर भस्म कर दिया गया। जब इस हत्या और लूट का समाचार राज्य भर में फैल गया, तो जनता में अत्यन्त क्रोध तथा क्षोभ पैदा गया। आर्य समाज ने रायकोड़ वालों को आवश्यक सहायता पहुँचायी।

सेना और पुलिस के साथ-साथ इन रज़ाकारों ने यंत्र, तत्र सर्वत्र लूट-मार और रक्तपात फैलाना आरंभ किया। बीसियों ग्रामों को उजाड़ा गया, सेतियाँ भस्म की गयी, स्त्रियों के शरीर तक से आभूषण उतरवा लिं गए और उनके सतीत्व पर भी हाथ डाला गया तथा दुकानों और घरों में आग लगायी गयी। जब गिरफतारियों का सिलसिला चला तो विशेष रूप से आर्यसमाजियों को गिरफ्तार किया गया। हैदराबाद नगर तथा ज़िलों में सर्वत्र आर्य समाज के लगभग सभी कार्यकर्ता तथा अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्य समाज के मंदिरों पर आक्रमण हुए और ओम्-ध्वज को अपमानित किया गया। रज़ाकारों के इन अत्याचारों से आर्य समाज आतंकित नहीं हुआ, अपितु उसमें और अधिक दृढ़ता, वीरता तथा तत्परता पैदा हो गयी, और उसने इस बात का दृढ़ संकल्प कर लिया कि निज़ाम की फासिस्ती शक्ति को निर्मूल करके ही चैन लिया जाए

इस परिस्थिति में आर्य समाज ने हैदराबाद स्टेट कांग्रेस और अन्य राष्ट्रीय संगठनों से, जो हैदराबाद राज्य को भारतीय संघ में सम्मिलित कराने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे, एक प्रस्ताव द्वारा सहयोग देने का निश्चय किया था। सभा ने सभी आर्यसमाजियों को यह अनुमति दे दी कि वे जिस राजनीतिक संस्था को पसन्द करें, उसमें सम्मिलित हो कर हैदराबाद को निज़ाम के बन्धन से मुक्त कराने के आन्दोलन में पूर्ण योग दें। आर्य समाज के इस निश्चय और सहयोग से हैदराबाद स्टेट कांग्रेस को जो सहायता मिली उसको कांग्रेस के नेताओं ने एक से अधिक बार सार्वजनिक रुप में प्रकट किया है।

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का उत्साहपूर्ण आंदोलन आगे बढ़ता गया, किन्तु जब अनेक नेता जेलों में बन्द कर दिये गये और शेष कार्यकर्ताओं को राज्य के बाहर जा कर अपने आन्दोलन का संचालन और वहाँ की जनता का नैतिक सहयोग प्राप्त करना पड़ा, तो राज्य में इस कार्य को आगे बढ़ाने का दायित्व आर्य समाज पर आ पड़ा। आर्य समाज ने निज़ाम के विरुद्ध प्रत्येक मोर्चे पर लड़ने तथा जनता के उत्साह को ऊँचा उठाने का यत्न किया।

विद्यार्थी और जनता में उत्साह निरन्तर बढ़ता गया। हैदराबाद-दिवस था भारतीय ध्वज-दिवस पर विद्यार्थियों ने अपनी संगठन-शक्ति तथा सजीवता का जैसा परिचय दिया, उससे सरकारी-क्षेत्रों में खलबली मच गयी। निज़ाम की हुकूमत के विरुद्ध इस प्रकार के सभी प्रदर्शनों के संगठन और संचालन में आर्यसमाजियों ने पर्याप्त उत्साह बतलाया।

परकाल में रज़ाकारों और पुलिस की फायरिंग :- ३ सितम्बर को परकाल में ध्वजदिसव मनाया गया, तो पुलिस ने जनता के रक्त से होली खेली। परकाल में १५,००लोग जूलूस के रुप में जयघोषों के साथ सभा-स्थल की ओर जा रहे थे। मार्ग में पुलिस ने अन्धाधुन्ध फ़ायरिंग की, फलस्वरुप १५० आर्य-हिन्दुओं की हत्या हुई और लगभग २५० गिरफ्तार कर लिये गये।

ऐसी भीषण परिस्थिति में किसी संस्था के लिए सभा या उत्सव करना कठिन था, किन्तु आर्य समाज ने समय की भीषणता का ध्यान किये विना जालने में छठवें आर्य-सम्मेलन को आयोजित किया, जिसके अध्यक्ष श्री गोविन्दलाल जी पित्ती थे। इस सम्मेलन में हैदराबाद की तत्कालीन परिस्थिति की भयंकरता की ओर निज़ाम की हुकूमत का ध्यान आकर्षित करते हुए यह चुनौती दी थी कि यदि जनता की इच्छाओं को कुचला जाएगा, तो विकट परिस्थिति उपस्थित होगी, अतः निज़ाम सरकार को चाहिए कि वह भारत-संघ में सम्मिलित हो कर शीघ्र उत्तरदायी शासन की घोषणा कर दे। सम्मेलन ने जनता को हुकूमत के साथ असहयोग का आदेश दिया।

१९४८ का ओतेम आन्दोलन :- १९४८ का वर्ष अत्यधिक कठिन था, क्योंकि उसी वर्ष दो विचार-धाराओं में संघर्ष हो रहा था। इस संघर्ष के परिणाम का समय का समय समीप आ रहा था। निज़ाम की सेना, पुलिस और रज़ाकारों के अत्याचारों के प्रतिक्रियास्वरुप आर्य समाज ने भी अपना आन्दोलन तीव्र कर दिया। हैदराबाद स्टेट कांग्रेस को ग़ैर-क़ानूनी घोषित किया गया। हुकूमत ने प्रजातन्त्रवादी शक्तियों को दुर्बल करने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टी पर से प्रतिबन्ध हटा लिया, और उनसे गठजोड़ पैदा किया। यह भी एक विचित्र बात है कि जो दल अन्य संस्थाओं को प्रतिगामी कहता था, वह स्वयं निज़ाम जैसी फ़ासिस्ट शक्ति के साथ मिल गया, और जनता से विद्रोह करना प्रारंभ किया। निज़ाम सरकार, मजलिसे इत्तेहादुलमुसलमीन और कम्यूनिस्ट पार्टी के पारस्परिक सहयोग के उपरान्त भी जनता की शक्ति बढ़ती गयी और राज्य के अन्दर और बाहर अनेक मोर्चो पर निज़ाम सरकार को परास्त करने की योजना पर कार्य होता रहा।

राजनीतिक बंदियों की भूख-हडताल :- हैदराबाद की जेलों में राजनीतिक बंदियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया, जिसके प्रतिक्रियास्वरुप वरंगल, नान्देड़ औरंगाबाद और जनगांव आदि में राजनीतिक क़ैदियों ने भूख-हड़ताल कर दी।

भारत सरकार को निज़ाम और उनकी हुकूमत के सभी कार्यो के अनेक अवसर दिये ताकि विवादास्पद प्रश्न शान्तिपूर्वक हल हो जाएँ। जब इससे भी काम नहीं निकला, तो आर्थिक बन्धन डाले गये, न्किनु निज़ाम सरकार और रज़ाकारों के अत्याचार बढ़ते ही गये। सेना, पुलिस और रज़ाकारों से आतंकित हो कर सहस्त्रों हिन्दुओं को अपना घर-बार छोड़ राज्य से बाहर जाना पड़ा। आर्य समाज ने शोलापुर, पंढरपुर, वार्शी, बीजापुर, उमरखेड़, बुल्ढाना, अमरावती, विजयवाड़ा और पूना में इन सत्तर-पचहत्तर हज़ार हिन्दुओं के रहने तथा भोजनादि का प्रबन्ध अपने हाथों में ले कर स्थान-स्थान पर कैम्प खोल दिये। ये कैम्प पहले आर्यसमाजियों द्वारा संगठित सेवा समितियों द्वारा चलते थे किन्तु बाद में हैदराबाद स्टेट कांग्रेस और आर्य समाज के मिले-जुले प्रबन्ध में चलाये जाने लगे।

सीमा पर आर्य समाज की सेवाएँ :- हैदराबाद के विपत्तिग्रस्त हिन्दुओं के रहने आदि का प्रबन्ध शोलापुर में सर्वश्री मनोहरलाल जी, कृष्णदत्त जी, बंशीलाल जी व्यास, राजपाल जी ने अपने हाथों में लिया। बीजापुर में श्री श्यामसुन्दरजी, पंढरपुर में श्री डी.आर.दास जी और श्री दिगम्बरराव जी लाठकर प्रबन्ध करते रहे। इनके अतिरिक्त श्री गोपाल देवजी कल्याणी, श्री प्रशान्तकुमारजी, श्री कर्मवीर जी आदि भी इन आपदग्रस्तों की सेवा में सहयोग देते रहे। भारतीय क्षेत्र से घिरे हुए, हैदराबाद के बीसियों ग्रामों को स्वतन्त्र करने में आर्यसमाजी भी बराबर के भागीदार रहे। उस्मानाबाद की सीमा पर श्री शेषराव जो वाघमारे, वकील निलंगा, श्री रामचन्द्र जी लातूर, श्री गोविन्द नाईक जी निलंगा पर कार्य करते रहे। बरार की ओर हदगाँव तालुका की सीमा पर आर्य समाज उमरी के लगभग सभी कार्यकर्ता निज़ाम की सेना, पुलिस और रज़ाकारों का मुकाबला करते रहे। निज़ाम की निरंकुशता को समाप्त करने के लिए क्रान्तिकारी कार्यों में भी आर्यसमाजी युवक सबसे आगे रहे। श्री नारायणराव पवार, गण्डय्या, जगदीश इन तीन आर्यसमाजी युवकों ने जान की बाज़ी लगा कर निज़ाम की मोटर पर बम फेंकने का कार्यक्रम बनाया, जिसके परिणामस्वरुप नारायणराव और गण्डय्या को बीस-बीस वर्षों के कठिन कारावास का दण्ड दिया गया। इससे पूर्व ही २४ सितम्बर ४७ ई. को पोचमपल्ली में श्री ए. बालरेड्डी जी, उपमंत्री सभा को बम बनाने के कारखाने के साथ पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

पं. विनायकराव जी निज़ाम सरकार के हर वार का बड़ी दृढ़ता के साथ मुकाबला करते आये थे। रियासत के वकीलों ने आपकी अध्यक्षता में न्यायालयों का बहिष्कार किया, पुलिस और रज़ाकारों के अत्याचारों की रिपोर्टे तैयार कीं, और जब उन्होंने लायक़अली के झूठे प्रचार का अपने स्पष्ट तथा सत्य घटनाओं से परिपूर्ण वक्तव्य द्वारा भण्डा फोड़ दिया, तो उन्हें गिरफ्तारा करके जेल में बन्द कर दिया।

सीमा पर आर्यसमाजी कई मास तक आन्दोलन में भाग लेते रहे। उसके लिए पर्याप्त आर्थिक साधनों की आवश्यकता होती थी, जिसकी पूर्ति सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज तत्कालीन म. खुशहालचन्द्र जी ने की। जब तक आन्दोलन चलता रहा महात्मा जी मासिक दो हजार की सहायता दिलवाते रहे।

पुलिस कार्यवाही :- जब भारत सरकार हैदराबाद सरकार से पूर्णतः निराश हो गयी और किसी भी शान्तिपूर्ण उपाय को पाना असम्भव हो गया, तो अन्तिम उपाय शेष रह गया। निज़ाम ने मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन की आड़ में अपने निजी हित के लिए मुसलमानों को मूर्ख बनाने का यत्न किया, किन्तु अनन्तः जब इस तथ्य का अनुभव हुआ कि हैदराबाद की हुकूमत अपनी प्रत्येक सम्भवनीय शक्ति और बल के साथ भी भारत-संघ के मुकाबले में टिक नहीं सकती, तो उन्होंने रज़ाकारों की नज़र बचा कर अपने विशेष दूत नवाब जूनयार जंग को नई देहली भेजा, और अपने एक गुप्त पत्र में निज़ाम ने भारत सरकार से गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि उनके राज्य को मजलिस इत्तेहादुलमुसलमीन के रज़ाकारों से नजात दिलायी जाए। हैदराबाद में भारत की पुलिस-कार्यवाही का मार्ग साफ हो चुका था, अतः भारत सरकार की सेनाएँ १४ सितम्बर १९४७ को हैदराबाद राज्य में प्रविष्ट हो गयीं।

आसफ़जाही राज्य का अन्त :- निज़ाम ने राज्य के सेनापति को यह गुप्त आदेश दे दिया था कि वे हर स्थान पर राज्य की सेना को पीछे हटा लें। अतः इसी आदेश को कार्यान्वित किया गया और १७ सितम्बर १९४७ को भारत संघ की सेनाएं हैदराबाद नगर में घुसगयीं और सम्पूर्ण राज्य पर उनका अधिकार हो गया। मार्ग में जिन रज़ाकारों ने मार्ग रोकने का यत्न किया, मारे गये। इस प्रकार नवाब मीर उस्मान अली खां आसफ़जाह सप्तम की हुकूमत का सदा के लिए अन्त हो गया।

हैदराबाद में भारत सरकार की सेनाओं की सफलता वस्तुतः जनशक्ति और आर्यसमाज के आंदोलन की सफलता है। हैदराबाद राज्य में निज़ाम के ढाई सौ वर्ष की निरंकुशता के अंत के उपरान्त जनता की स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र का युग प्रारम्भ हुआ, और जनता अपने दिलों में नया उत्साह और अपने हाथों में नई शक्ति का अनुभव करने लगी।

मजलिस इत्तेहादुल मुसलमीन और उसके रज़ाकारों को उनकी उन्मत्त राजनीति तथा दुराचार का फल मिल चुका था, न्किनु यह विचित्र बात है कि इस सम्पूर्ण उपद्रव तथा अशांति के प्रेरक निज़ाम सरलता से बच कर निकल गये और यह जनता का दुर्भाग्य था कि वे राजप्रमुख बने हुए राज्य की जनता के सिरों पर उसकी इच्छा के सर्वथा प्रतिकूल बने हुए थे। आंध्र प्रदेश के उद्घाटन के पश्चात् राजप्रमुख पद को समाप्त कर दिया गया और निज़ाम भी हटा दिए गए।

స్వరాజ్య సంగ్రామములో ఆర్య సమాజము

-పం. ఇంద్ర విద్యా వాచస్పతి

క్రీ.శ. 1947 ఆగష్టు 15వ తేదితో పూర్తియైన స్వాధీనతా యజ్ఞము మహర్షి శ్రీ దయానంద సరస్వతీస్వామితో ప్రారంభమై గాంధి మహాత్ముని అంతిమ ఆహుతితో పూర్తియైనదని చెప్పుట అత్యుక్తి కానేరదు. గణతంత్ర రాజ్య ప్రాప్తితో పూర్తియైన రాజ్యక్రాంతికి విత్తనంవేసినవాడు దయానంద మహర్షి యనుటలోను సందేహ మావంతయు లేదు.

మహర్షి మూడు ఉపాయములతో భారతవాసుల హృదయము లందు పరాధీనత నుండి విడివడుటకు, రాజనైతిక స్వాధీనతను బొందుటకును అభిలాషను జనింపజేసెను. భారతవాసుల హృదయము లందు తమ దేశముకొఱకు, ధర్మము కఒరకు స్వాభిమానము నుత్పన్నము చేయుట మొదటి యుపాయము. మహర్షి కార్యక్షేత్రమున దిగునపుడు దేశము నందలి శిక్షిత సమాజము పాశ్చాత్య సభ్యత యందును, ఇంగ్లండు మీదగల భక్తి ప్రవాహము నందును పడి కొట్టుకు పోవుచుండెను. సంస్కరణ-అభిలాష దేశవాసులలో నక్కడక్కడ అంతకుముందే యుద్భవించెను. కాని అయ్యది దేశాసులకు టంగ్లీషుభాషకును, ఆంగ్లేయుల యాలోచనలకును భక్తులనుజేసి, ఆత్మసమ్మానము తగ్గింప జేయునదై యుండెను.

మహర్షి తన యువదేశముల మూలమున ఇతర దేశముల పరుగిడు భారతీయుల దృష్టులను స్వదేశాభిమానమువంకకు మరల్చె మహర్షి జగత్ ప్రసిద్ధమైన తన సత్యార్థప్రకాశమను గ్రంథమున వ్రాసి యున్నాడు. "ఈ యార్యావర్త దేశమునకుసమానమైన దేశః భూగోళమునందు మరి యొకటి లేదు. ఈ దేశము పారస్ మణి వంటి లోహమువంటి ఇతర దేశము లీ దేశమునుస్పృశించినంత మాత్రము సువర్ణమయములగును. అనగా ధనవంతము లగునని భావము" గ్రంథముననే మరియొక స్థలమున నిట్లు వ్రాసి యున్నాడు. "ఏ దేశ పదార్థముల వలన తమ దేహములు పుట్టినవో, పోషింపబడుచున్నవి ఇకముందునూ పోషింపబడునో ఆ దేశపు, ఉన్నతిని ఎల్లరు భక్తితో లిసిమెలిసి తను మనో ధనములతో నొనర్చవలయును"

ముచ్చున కిట నీరెండు ఉదాహరణములు వ్రాయబడినవి మహర్షి రచించి గ్రంథములలో స్వదేశాభిమానము ఎడనెడ నెంతగానో వర్ణించుట చూడనగును. భారతదేశవాసుల హృదయములందు మహనింపజూచిన స్వదేశాభిమాన సారమును సత్యార్థప్రకాశమున నందలి యేకాదు సముల్లాసము వ్రాయిన యీ వాక్యములను జదివి తెలిసికొన వచ్చును. "సృష్టిమొదలు ఐదువేల సంవత్సరముల పూర్వము వరకు ఆర్యుల సార్వభౌమ చక్రవర్తి రాజ్యము భూగోళమున నెల్లరిని మించి యుండెను. ఇతర దేశములందు చిన్న చిన్న సామంతరాజులుండెడివారు. కౌరవ పాండవ రాజ్యకాలమునకు ఈ దేశపు సార్వభౌమ చక్రవర్తి రాజ్యమునందే భూగోళపు ఇతర రాజులు అందరు సామంతరాజులుగా నుండెడివారు.

మానసిక దాసత

ఒకప్పుడీ దేశము శక్తిసంపన్నమై స్వాధీనమై యుండెడిదనియు, మరల సరిగా యత్నించినచో నీ దేశము స్వాధీనతా శికరము నందుకొనగలదనియు నీ దేశవాసులకు తెలుపవలసి యున్నది. ఇట్లు తెలిసికొని రాష్ట్ర స్వాధీనత కొఱకు ప్రయత్నించుటకు మొదటి యడుగు వేయవలయును. టదప ఏ కారణముల వలన మన యీ రాష్ట్రము పరాధీనమై పూర్వగౌరవమును పోగొట్టకొని యపమానిత మగుచున్నదు యీ కారణములను చూచిన మీదట, మానసిక దాసతయే యీ దేశముయొక్క ఆర్థిక, రాజనైతిక దాసతకు మూల కారణమని తెలియవచ్చెను. మహర్షి రోగస్వరూపమును గుర్తించి చతురవైద్యునివలె మొదట రోగపు మూల కారణమును దొలగింప నారింభించెను. అందుకనియే చెప్పవచ్చును. మహర్షి తన శాస్త్రీయములగు నాలోచనలతోను ఓజస్సుతో గూడిన వాణితోను శతాబ్దములనుండి మూతబడియున్న భారతీయుల ఆలోచనా సముద్రము నతి వేగముగా మధించి-తరిచి యందుండి అనా యాసము ఆలోచనాస్వాధీనత, కర్మల నొనర్చుటలో ప్రవృత్తియు ననెడి బహుముఖ్య రత్నముల నావిర్భవింప జేసెను. ఇయ్యది మహర్షి యొక్క సర్వాభిప్రాయములతో నేకీభవించని వారును అంగీకరింపక తప్పదు. మానసిక స్వాధీనత లేనివాడు సామాజిక స్వాధీనతకాని, అది లేనివాడు రాజనైతికస్వాధీనత కాని సంభవము కాదనుట యెల్ల రంగీకరించిన విషయమే ఇట్లు దయానంద మహర్షి భారతదేశవాసులకుస్వదేశమును గూర్చి భక్తిభావన రూపమను నమృతమును పానము జేయించుటయేకాక, వారి మానసిక పరాధనత యనెడి సంకెళ్ళను తెగనరికి రాష్ట్రమును స్వాధీనతా మార్గమున నడిపించిన వాడయ్యెను.

స్వరాజ్యపు రూపురేఖలు

మహర్షి యంతటితోం సంతుష్టుడు కాదయ్యె. అతడు స్వరాజ్యము యొక్క యథార్థ స్వరూపమును దేశము నెదుట నుంచెను. స్వరాజ్యప్రాప్తికి డెబ్బది యేండ్ల పూర్వమే మహర్షి తన సత్యార్థ ప్రకాశమనందు ప్రకటించిన స్వరాజ్య ఆదర్శమును జూచిన నెల్లరకు మహదాశ్చర్యము కలుగును. అప్పటి భారత శిక్షిత సమాజము కూడ ఆ యాదర్శముకెన్నో అమడ దూరమున వెనుకబడి యుండెను. సత్యార్థ ప్రకాశమున అష్టమ సముల్లాసమున

మహర్షి యిట్లు వ్రాసియున్నాడు.

"ఆర్యావర్తమునందును ఈ సమయమున ఆర్యుల అఖండ స్వతంత్ర స్వాధీన నిర్భయరాజ్యము లేదు. ఉన్న కొంచెము కూడ విదేశీయులు పాదాక్రాంతమై యున్నది. కొలది మంది రాజులు ఒకింత స్వతంత్రులు నున్నారు. దుర్దినములు వచ్చినపుడు దేశవాసు లనేక దుఃఖములు ననుభవింతురు. ఎవరెంత చేసినను స్వదేశీరాజ్యము అన్నింటికంటె ఉత్తమ మగును. లేక, మతమతాంతర ఆగ్రహరహితమై, స్వపర పక్షపాత శూన్యమైన ప్రజలమీద తండ్రివలె దయతో న్యాయముతో కూడిన విదేశీయులు రాజ్యముకూడ పూర్ణసుఖదాయకము కాదు"

పూర్ణస్వరాజ్యమునకు ఇంతకంటె మంచి వ్యాఖ్య యేమికాగలదు. సత్యార్థ ప్రకాశమునందు మహర్షి స్వరాజ్యమునకు చేసిన యీ వాక్య తరువాత పదియేండ్లకు "ఇండియన్ నేషనల్ కాంగ్రెస్" భారత జాతీయ కాంగ్రెసు స్థాపింపబడినది. ఆ కాంగ్రెసులో ముందువిదేశీయులు రాజ్యమున నౌకరీలు-ఉద్యోగములు మాత్రమే కోరబడినవి. తరువాత సనేక సంవత్సరముల వరకు ఇంగ్లండు ఛత్రచ్ఛాయలో ప్రతినిధి త్వాధికారము కొంతవరకు యాచింపబడినది. ఆతరువాత కాంగ్రెస్ ఔపనివేశిక స్వరాజ్యము తన ధ్యేయముగాచేసికొన్నది. తదుపరి క్రీ.శ. 1929లో రావి నదీతీరమున జరిగిన కాంగ్రెస్ సమావేశమున పూర్వ స్వరాజ్యము కోరబడినది. రాజనీతిజ్ఞుల మనిచెప్పుకొను కాంగ్రెసు నాయకులు ఇరువదియవ శతాబ్దపు ప్రథమ చరణానంతరమున ఆదర్శమునకు చేరగలిగిరో మహర్షి దయానంద స్వామి పందొమ్మిదవ శతాబ్దపు అంతిమ చరణ ప్రారంభముననే ఆ యాదర్శము నందుకొన గలిగిరి. మహర్షి వర్ణించిన స్వరాజ్యస్వరూపమునే నేడు రాజనీతిజ్ఞులు గణ రాజ్యమనుచున్నారు. ప్రజలచే రాజు నిర్వాచితుడు కావలయును. మంత్రుల సభచేత శాసనములు చేయబడవలయును. స్త్రీ పురుషులు రాజ్యమున సమానాధికారములు కలిగి యుండవలయును. ఈ మూల సిద్ధాంతములనే దేశము గణతంత్ర రాజ్యమును స్థాపించుటతో బాటు అంగీకరించినది. వీనినే మహర్షి తన గ్రంథములం దెన్నడో ప్రతిపాదించి యుండెను. కావున క్రీ.శ. 1947 ఆగష్టు 15న పూర్తి చేయబడిన స్వాధీనతా యజ్ఞము దయానంద మహర్షియే ప్రారంభిచాడనుట అన్ని విధముల సముచితమే.

శ్యామజీ కృష్ణవర్మా

శ్యామజీ కృష్ణవర్మా దయానందుని ముఖ్య శిష్యులలో నొక్కడు. అతడు కాఠియావాడ నివాసి. అతడు ఇంగ్లండు వెళ్లి బార్‌ఎట్ లా ప్యాసు అయి వచ్చినాడు. మహర్షికి మిక్కిలి విశ్వాస పాత్రుడు. మహర్షి పరోపకారిణీ సభను ప్రారంభించినపుడు శ్యామజీకృష్ణవర్మను ఆ సభకొక సభ్యునిగా జేసెను. మహర్షి స్వయముగా ఇంగ్లీషు భాషను బొత్తుగా నెరుగకున్నను భారతీయులకు విదేశీభాష-ఇంగ్లీషు మిక్కిలి అవసరమని యెంచెడివాడు. అతడీ విషయమును గూర్చి యూరపు విద్వాంసులతో పత్ర్యవహారము కూడ చేసి యుండెను. అందువలననే దయానంద స్వామి కృష్ణవర్మను విదేశములకు పంపి యతనిని భారతదేశమునకు మక్కిలి యుపయోగిగా జేయ ననువగు ఆలోచనలు అనేక పర్యాయములు ప్రకటించి యుండెను. స్వామి మరణానంతరము కృష్ణవర్మ ఇంగ్లాండు వెళ్ళి యక్కడ నివసించెను. అక్కడనే యుండి యతడు భారతదేశపు స్వాధీనతా సంగ్రామమునకు జేసిన బహుమూల్య సహాయము రాష్ట్రీయ ఆందోళనను గూర్చి వ్రాయు చరిత్రకారులకు బాబుగ తెలిసిన విషయమే- 1905లో వర్మ లండనునందు 'ఇండియా హౌస్' పేరుతో నొక కేంద్రమును స్థాపించెను. అందే ఇండియన్ హోమ్‌రూల్ సొసైటీకి అధ్యక్షుడుగా నుండెను. ఆ సొసైటీ పక్షాన 'ఇండియన్ సోషియాలజిస్టు' పేరుతో నొక మాసిక పత్రికకూడ ప్రకటింపబడుచుండెడిది. వర్మయే ఆ పత్రికకు సంపాదకుడుగా ఉండెను. ఆ పత్రిక మూల్యము ఒక్క అనామాత్రమే. దానియందురాజనీతికి గూర్తి ఎక్కువగా ప్రచారము చేయబడుచుండెడిది. ఆ పత్రిక ఇంగ్లండులో నుండు భారతీయులకు రాజనీతిని బోధించు ధర్మశాస్త్ర మయ్యెను. పలువురు భారతీయులు వర్మచే నొసంగబడు ఛాత్రవృత్తితో ఇంగ్లండులో విద్య నభ్యసించుచుండెడివారు. మదన్‌లాల్ ఢీంఘా అను నొక వ్యక్తి చే కర్జన్‌వాయలీ లండన్‌లో హత్యచేయబడుటచేత శ్యామజీవర్మ వంటి క్రాంతికారులయిన నాయకులు ఇంగ్లండులో నివసించుట బ్రిటిష్ ప్రభుత్వానికి రుచింపదయ్యె. కావున వర్మ ఇంగ్లండు విడిచి పారిస్ నగరమునకు వెళలవలసివచ్చెను. అటనుండియే రాష్ట్రీయ పందోళన నడుప సాగెను. లాలా హరదయాల్ ఎమ్.ఎ., భాయీ పరమానంద ప్రభృతులు ప్రముఖ క్రాంతికారులుగ ఇంగ్లండులో పరిగనిఇపబడు చుండెడివారు. అప్పుడు వీరికి శ్యామజీ కృష్ణవర్మనుండి సర్వవిధ సహకారములు లభించుచుండెను.

భిక్షావృత్తి కాదు

కాంగ్రెసు ప్రారంభింపబడిన కాలమున దాని వృత్తి 'భిక్షావృత్తి'గా నెంచబడుచుండెడిది. కారణమేమన కాంగ్రెస్ చేయు తీర్మానములలో విక్టోరియా మహారాణి చేయు ఘోషణా పత్రము ప్రశంసింపబడుచుండెడిది. హోదాల కొఱకు ప్రార్థనలు చేయబడుచుండెడివి. భారతీయుల కొఱకు రాజనైతిక అధికారములను సంపాదించుటయే కాంగ్రెస్ ఉదేదశమయి యుండెను. దయానంద మహర్షియొక్క పూర్ణప్రతినిధి సత్తాత్మక రాజ్యమునకు సంబంధించిన ఉపదేశములను వినిన వారి హృదయములు హోదాలను భిక్షగా ననుగ్రహించుడని యాచించుటకెట్లు సిద్ధములగును ? పనాడు కాంగ్రెసులో ప్రవేశించుటకు చరిత్రకు-సదవడికి-సంబందించిన పరీక్ష యేమియు నుండెడిదికాదు. ఇయ్యది ఆర్యజనులకు రుచించెడిది కాదు.

అందువలననే ఆర్యజనులు కాంగ్రెస్ విషయమున సామాన్యముగ నుపేక్షా భావము కలిగియుండేవారు. కాన, భారతదేశమునకు రాజనైతిక అధికారము నంపాదింపవలయు ననెడి కాంగ్రెస్ లక్ష్యము ఆర్య జనులను తనవంకకు ఆతకర్షింపకుండెదది కాదు. కావుననే వారిలో రాజనైతిక మనోవృత్తి కలవాదు ప్రారంభము నుండియు కాంగ్రెను కార్యకలాపములలో సహకరించుచునే యుండిరి. అందువలననే ప్రయాగలో జరిగిన కాంగ్రెను మహా నభలలో లాహెూర్ నివాసియైన లాలలజ్‌పతిరాయ్ అంబాలా నివాసియగు మురళీధరబాబు కాంగ్రెసు ప్రతినిధుల రూపమున పాల్గొనిరి. అనంతర వర్షమున కాంగ్రెస్‌ను లాహెూర్‌లో జరుపుటకు ఆహ్వానించిన ప్రముఖులలో లాజ్‌పత్‌రాయ్ ప్రభృథులను ఉండిరి. లాహెూర్‌లో జరిగిన కాంగ్రెస్ మహాసభ విశిష్టమైనదని చెప్పక తప్పదు. శ్రీ దాదాభాయినౌరోజీ బ్రిటిష్ పార్లమెంటుకు సదస్యుడైన తరువాత మొదటి మాటు భారతదేశమునకు వచ్చియుండెను. వారినిస్వాగతము చేయుటలోను, కాంగ్రెస్ అధివేశనమునకు నంబంధించి కార్యజాతమును నిర్వర్తించుటలోను పెక్కురు ఆర్య సామాజిక ప్రముఖులు పాలపంచుకొని యుండిరి. లాలాలాజపత్‌రాయ్, బక్షీ జయశ్రీరామ్, రాయ్ మూలరాజ్ ఎం.ఎ. మురళీధరబాబు మున్నగు ఆర్య సజ్జన ప్రముఖులు స్వాగత కార్యకారిణీ సమితికి సదస్యులై పనిచేసిరి.

వంగ విభజన తదుపరి

క్రీ.శ. 1906 వరకు దేశరాజకీయాలు పైన వర్ణించినట్లు మందకొడినడుచు చుండెడివి. లార్డుకర్జన్ వంగ విభజన చేయుట భారత రాజనీతి ప్రాణము పోసినట్లెయ్యెను వంగ భంగము వంగీయుల హృదయముల మిక్కిలి బాధ కలిగించెను. వారు నాడు చేసిన ఆర్తనాదము సమ భారతీయుల కన్నులను తెరిపించెను. దేశవాసులెల్లరు వాస్తవము దాస్యమును క అభిశాపముగా ననుభవింపసాగిరి. వంగ విభజనకు సంబంధిఙచిన ఆందోళనము దేశమునందంతట వ్యాపించెను. పంజాబ్‌లో నది యుగ్రరావము ధరించెను. అప్పటికేరాజనైతిక నేతృత్వము పూర్తిగా లాలాలజపత్‌రాయ్ గారి చేజిక్కెను. వారి ప్రభావశాలి భాషణలు సమ ప్రాంతమును ఆవేశ పూర్ణముచెసెను. అప్పటి వారి గర్జనల కారణముగా లాజపత్‌రాయ్ 'పంజాబు కేసరి' యయ్యెను. అతడు దయానంద మహా ముఖ్య శిష్యుడు. అందువలన ఆ పంజాబుకేసరి గర్జన ఆర్య సామాజికుల నెంతగానో ప్రభావితులను జేసెను. వంగవిచ్ఛేదము కారణము పంజాబ్‌లో జరిగిన ఆందోళనలో పాల్గొనినవారిలో బహుసంఖ్యాకులు ఆర్య సామాజికులే. లాలాహంసరాజు, సాహనీ మున్నగు ఆర్య సమాజ్ నాయకులే రావల్పిండిలో జరిగిన కాండలో నాయకులై యుండిరి. లాహెూర్‌కు నంబంధించిన రాష్ట్రీయ కార్యకర్తలలో అధికసంఖ్యాకుల ఆర్య సామాజికులే. నానాటికి వృద్ధిపొందుతున్న లాలాలాజపత్‌రాయ్ ప్రభావమునకు భయపడి ప్రభుత్వము అతనిని మాండలే కోటలో నిర్బంధించినది. అప్పుడే సమాజికుల పైనను, ఆర్య సామాజిక సంస్థల మీదను ప్రభుత్వపు క్రూర దృష్టి పడినది. అది ఆర్యసమాజికులకు కఠిన పరీక్షా సమయమయ్యెను. ప్రభుత్వపు టంతరంగ క్షేత్రములలో ప్రభావము మిక్కుట మయ్యెను. ప్రభుత్వపు కార్యాలయములలో చేయు ఆర్య సామాజికులు సమాజ సభ్యత్వతకు త్యాగ పత్రమియ్యకున్నచో వారిని ఉద్యోగము నుండి తొలగింపవలయునని ప్రభుత్వము నిర్ణయించెను. కొందరి ప్రమోషను (పదోన్నతు)లు అడ్డగింపబడెను. కొందరిని పదవులనుండి తొలగించుటయు జరిగెను.కాని, యే ఆర్యసావజికుడునుతన నౌకరీ పోవు నను భయముతో సమాజ సదస్యతకు త్యాగపత్రము నియ్యలేదని చెప్పుటకు మిక్కిలి సంతోషించుచున్నాము.

సత్యాగ్రహము ఆర్య సమాజము

రౌలట్ యాక్టునకు విరుద్ధముగా గాంధి మహాత్ముడు సత్యాగ్రహమునకు నంబంధించిన ఘోషణ చేసినప్పటి నుండి కాంగ్రెస్ యొక్కరెండవ యుగము ప్రారంభమైనది. సత్యాగ్రహమునకు మూల సిద్ధాంతములు రెండు ఒకటి సత్యము రెండవది అహింస. చరిత్ర మంచి నడవడి గలిగిన మనుష్యుడే పైరెండు సిద్ధాంతములను పాలింపగలుగును. ఈ యాలోచన పరంపర ఆర్య సమాజకులకు ప్రియమైనది. అదివారి జీవన సంబద్ధమగు ఆలోచనల కనుకూలమైనదియును. దాని ఫలితముగా అంతకు పూర్వము కాంగ్రెసు కరితినీతులను కఠోరముగా ఖండించిన శ్రద్ధానందస్వామి గాంధి మహాత్మునకు టెలిగ్రాం ద్వారమున "నేను సత్యాగ్రహ ప్రతిజ్ఞాపత్రము మీద సంతకముచేసితిని" అనితెలిపెను. శ్రద్ధానంద స్వామి సత్యాగ్రహము ససమ్మిళితుడగుట ఆర్య సావజికులకు సూచకమయ్యెను. దేశము నందంతట నుండు ఆర్య సామాజికులు సత్యాగ్రహ సేనలో చేరుటకు తమ పేర్లను వ్రాసి పంపిరి.సావజికులకుసత్యాగ్రహ మూల రూపము ధర్మానుకూలముగ ప్రకమగుటయే కాక గాంధి మహాత్ముని యున్నత జీవనముకూడ వారిని ఆకర్షించెను. సత్యాగ్రహమును ఘోషించినది. మొదలు పంజాబు మార్షల్‌లాకు అమృతసర్ కాంగ్రెసు మహాసభసమాప్తి వరకు గల విస్తృత చరిత్రను తిలకించినచో, వాటి ఉత్తర భారత స్వాధీనతాసంగ్రామమున పాల్గొనిన సైనికులలో నధికసంఖ్యాకులు ఆర్య సామాజికులుగా గోచరింతురు భిన్నభిన్న నగరములలో ఆర్య సమాజపు ప్రముఖులగు అధికారులెల్లరు ఇతరుల ముందుముందుకు వచ్చి వందోళనలో పాల్గొని యున్నారు. సత్యపాల్, శ్రీరామ భజదత్త ప్రభృతి నాయకులెల్లరు ఆర్య సమాజాకులే దాని పరిణామముగ పంజాబులో మార్షల్‌లా అమలు చేసినపుడుపంజాబుకు సంబంధించిన

నగరములందంతటను ఆర్య సామాజికుల సంకటముల పాలగుటయేం కాక సమాజమునకు చెందిన సంస్థలు ఇక్కట్లు పడకతప్పదయ్యె. అనేక ప్రముఖులైన ఆర్య సామాజికుల మార్షల్‌లా ప్రహారము జరుపబడెను. డి.ఎ.వి. కాలేజీ విద్యార్థులచే జరుపబడిన అత్యాచారములను ప్రభుత్వము యొక్కయు, కాంగ్రెసు యొక్కయు కమిటీలు చేసిన పరిశీలనలో చదివినపుడు పాఠకులు రోమాంచితులు కాకపోరు. హాస్టళ్ళలో నున్న విద్యార్థులు తెల్లజాతిపై కుల కాపలాలో ప్రక్కమట్టలు నెత్తిపై నుంచుకొని గ్రీష్మకాలపు మండుటెండలో రెండు మూడు మైళ్ళు నడచుటకు బాధ్యులు కావలసి వచ్చిరి. వారునడుచునపుడు ఏ మాత్రము నడక మందగించినను తెల్లవారితిట్లకు తుపాకీ పోట్లకుగురి యయ్యెడివారు. 'గుజరాం వాలా' యందు గురకుల పాఠశాల యుండెను. దాని మీదను మార్షల్ లా అధికారులకు దృష్టి పడెను. అతడు తన యధికారము నంతటిని ఉపయోగించి పాఠశాలను నష్టభ్రష్టము చేసెను. దేశమున ఇతర భాగవములందుగల ఆర్య సామాజికులును ముందుసత్యాగ్రహము నందును, తదుపరికాంగ్రెసు నకు తమ సహకారము నందింపసాగిరి.

క్రీ.శ. 1919 అంతమున అమృతసర్‌లో జరిగిన కాంగ్రెసు అధివేశనమునకు సంబంధించిన స్వాగతసమితి కార్యకలాపములను నిర్వర్తించిన వారిలో నూటికి 75 మంది ఆర్య సామాజికులే. స్వాగత సమితి అధ్యక్షపదవిని స్వీకరించిన శ్రద్ధానంద స్వామి ప్రభావ, పరిశ్రమల వలననే అమృతసర కాంగ్రెస్ మహాసభ అధివేశనములు సఫలమైనవని చెప్పక తప్పుగు. స్వాగతాధ్యక్షుడు తన భాషణమును రాష్ట్రభాషయైన హిందీభాషలో చదువుట కాంగ్రెస్ చరిత్రలో మొదటిసారి యని చెప్పవలయును. అదియును కాంగ్రెసుకు ఆర్య సమాజ మిచ్చిన మొదటి వర మనవచ్చును.

ఆర్య సామాజిక విప్లవకారులు

యూరపునందు విప్లవకారులను సమకూర్చుటలో శ్యామజీ కృష్ణవర్మ వహించిన ప్రముఖ భాగమును పూర్వమే వర్ణించి యున్నాము. భారతదేశమున నంతకు పూర్వమే విప్లవకారుల దళము జన్మించియుండెను. కొందరు విప్లవకారుల కార్యప్రణాళిక నంగీకరింపక పోవచ్చును. కాని ఆ విప్లవకారుల ఓజస్వంతమగు దేశభక్తిని, వారి అద్భుత సాహసమును భారతవాసులలో నెవ్వరును తిరస్కరింప జాలరు. స్వరాజ్య ప్రాప్తియందు వారొనర్చిన బలిదానము వలన నెంతయో సహాయము లభించిన దనుటలోను అవంతయు సందేహము లేదు.

ఆర్య సమాజ సిద్ధాంతముల ననుసరించి విప్లవాదులలో మొదటివాడు మదనలాల్ ధీంగడా. అతడు లండన్‌లో కర్నల్ వాయలీని హత్య చేసినవాడు. కోర్టులో యువకుడైన మదనలాల్ తన సమాధానము నిట్లు చెప్పి యున్నాడు. "నా వంటి నిర్ధనుడు, మూర్ఖయువభక్తుడునునైన పుత్రుని దగ్గర దేశమాత కర్పించుటకు నా దేహము నందలి రక్తమునకు మించి మరి యేమి యున్నది ? నాయీ రక్తముతోనే దేశమాత చరణము లందు శ్రద్ధాంజలి నర్పించుచున్నాను. భారతదేశమున నిప్పుడు నేర్పవలసిన శిక్షణ ఎట్లు మరణించవలయు ననునదితప్ప మరియొకటి లేదు. నేర్పవలసిన పద్ధతియు స్వయం మరణించుటయే. నేను మాటి మాటికి భారత దేశమున జన్మించి మాతృసేవలో ప్రాణముల నర్పించవలయుననియే నేను భగవంతుని ప్రార్థించుచున్నాడ; వందేమాతరమ్."

యువావస్థలో విదేశీయులలో ఆర్య సమాజ సిద్ధాంతములను ప్రచారము చేయనేగిన వారిలో భాయీ పరమానంద గారు కూడ ఒకరు. ఆయన పంజాబులో విప్లవవాదులలో ముఖ్యుడై ప్రభుత్వ క్రోధమునకు గురియై జన్మఖైదు ననుభవించుటకు అండమాన్ దీవులకు పంపబడెను. భాయీ బాలముకుంద్, భాయీ పరమానంద్ ఇద్దరు.... సోదరుల డి.ఎ.వి. కాలేజిలో బి.ఎ. పరీక్షలో ఉత్తీర్ణులైరి. 1910–11 సంవత్సరములలో పంజాబునందు ఏర్పడిన రాజనైతిక అశాంతిదువరము పలువురు నవయువకులను విప్లవవాదులుగా మార్చివైచెను. వారిలో భాయి బాలముకుంద్ కూడ నొక్కడు. లాహోర్ షడ్ యంత్ర కుట్ర–కేసులో నతడును పట్టుబడెను. దీనానాథుడను వ్యక్తి ప్రభుత్వము పక్షము వహించి సాక్ష్యము చెప్పినందున ఉరిశిక్షకు గురియైనవారిలో బాలముకుంద్ కూడ ఒకడైయుండెను. అతని బలిదానముతో సంబంధముగల మరియు సత్యసుందర బలిదానమునకు సంబంధించిన గాథ యొకటి యిట్లున్నది.

"భాయీ బాలముకుందుని నవ వివాహిత పత్ని తన భర్తను ఉరికంబము నెక్కించిన వార్తవినుటయే తడవుగాలేచి స్నానమొనర్చి క్రొత్త వస్త్రములను అభరణములను ధరించి వెళ్ళి యొక అరుగు మీద కూర్చుండెను. అట్లు కూర్చుండి వెంటనేతన ప్రాణములను త్యజించి తానుకూడ మాతృభూమి వేదిక మీద బలిదాన మొనర్చియుండెను.

ఈ దంగాలోనే మహాత్మా హంసరాజు యొక్క సుపుత్రుడు బలరాజు కూడ పట్టుకొనబడెను. ఇట్లే పలువురు ఆర్య సామాజికులు విప్లవవాదులను నెపమున పట్టుబడి దుర్భరజైలుశిక్షల ననుభవించిరి. ఎందరో ఉరిశిక్షలపాలయిరి.

క్రీ.శ. 1924–25లో ఉత్తరప్రదేశమున విప్లవవాదులకు సంబంధించిన సంఘ మొకటి బలమైనది యేర్పడెను. ఆ సంఘ మొనర్చిన అనేక ఘనకార్యములలో కాకోరి బందిపోటు కేసు ఒకటి మిక్కిలి ప్రసిద్ధ మైనది. ఆ దళమునకు ముఖ్యనాయకుడైన శ్రీ రామప్రసాద్ "బిస్మిల్" ప్రసిద్ధ ఆర్య సామాజికుడే. అతని సహచరుడైన గేందాలాల్ కూడ ఆర్య సమాజ సిద్ధాంతముల నంగీకరించువాడే. రామప్రసాద్ "బిస్మిల్" మాత్రము మిక్కిలి చిన్నవయస్సు నుండియే విప్లవవాదుల ఆలోచనలచే

ప్రభావితుడైయుండెను. అతడు ప్రభుత్వపు కార్యాలయముల మీదను, ట్రెజరీల మీదను జరిగిన అక్రమణలలో పాల్గొని యుండెను. చివరకు లక్నో సమీపమున కాకోరి స్థానమున జరిగిన భయంకరమైన బందిపోటు దొంగతనములో రామప్రసాద్ "బిస్మిల్" ఆ దళానికి ముఖ్యుడుగా పట్టుకొనబడెను. "బిస్మిల్ కవి కూడ. ఇది యతని కవితకు సంబంధించిన ఉపనామమే. అతడు జైలులో తరుచుగా పాడుకొను గీతములలో గల అంతిమ చరణములలో నొకదేశభక్తుని నిజమైన హృదయవేదన ప్రకటమగు చుండెడిది.

"అబ్ న పిఛలే వల్ వలే హైం, ఔర్ న
అరమానోంకీ భీడ్
ఏక్ మిటజానేకీ హసరత్ బస్ దిలే
బిస్మిల్ మే హై"

ఇప్పుడు బిస్మిల్ హృదయమున ఆ కోరికలు గానీ, భావములు కాని లేవు. చావవలెనను కోరిక మాత్రము మిగిలి యున్నదని భావము.

ఉరికంబము నెక్కుచు "బిస్మిల్" ఈ క్రింది గీతము పాడియుండెను.

"మాలిక్ తేరీ రజా రహే, ఔర్ తూ
హీ తూ రహే
బాకీ మైన రహూం, న మేరీ
అరజూరహే"

ఓ భగవన్! స్వామీ! నీ కోరిక మాత్రమే మిగులుగాక! నీవు మాత్రమే ఉందువు గాక! నేను కాని నా కోరిక గానీ ఉండ కుండు గాక!

గురుకుల శిక్షా ప్రణాళిక

రాష్ట్రీయ జాగృతి మూలమున లభించిన స్వరాజ్య ప్రాప్తిలో ఆర్య సమాజము ప్రారంభించిన గురుకుల ప్రణాళిక కూడ నొక గొప్ప సహకారమన వలయును. క్రీ.శ. 1900 సంవత్సరమున గుజరావా లాలో గురుకులము స్థాపింపబడెను. క్రీ.శ. 1902లో కాంగడీ గ్రామ సమీపమున గంగాతటమున ఆ గురుకులము శిక్షణాలయ రూపమున ప్రతిష్ఠితమయ్యెను. ప్రారంభముననే గురుకుల మూల సిద్ధాంతములు రాష్ట్రీయ భావనాత్మకము లైనవిగానే స్వీకరింపబడెను. ఆశ్రమమున విద్యార్థులు గురువుల సంరక్షణలో నుండుట గురుకుల శిక్షా ప్రణాళికకు ప్రథమము అవశ్యకమునైన అంగముగా నుండెను. వారి వేషభూషలు భారతదేశానికి సంబంధించినవై సాదాగా నుండవల యును. విద్యార్థుల కొనంగబడు ఆధునిక విషయములకు సంబంధించిన శిక్షణ అంతయు రాష్ట్రభాషయైన హిందీలో ఇయ్యబడెడిది. సంస్కృత వాఙ్మయము, ఆర్య ధర్మము ప్రతి విద్యార్థి యొక్క శిక్షణకు ముఖ్యాంగములై యుండెను. ఈ విశేషతయే యే జాతికైనను రాష్ట్ర నిర్మాణ శిక్షలో ముఖ్యముగా నుండదగినది. గురుకుల ములో నిది మొదటినుండియు నుండెడిది. కాంగడీ గురుకుల స్థాపన తరువాత దేశమున ననేకస్థలములందు గురుకుల ములు వెలసినవి. దయానంద మహర్షి తనచే రచింపబడిన గ్రంథములలో నిర్దేశించిన సిద్ధాంతములేగురుకులములలో నన్నింటియందును స్వీకరింపబడెను. క్రీ.శ. 1906 నుండి 1919 వరకు జరిగిన రాజనైతిక ఉత్థాన సమయము నందు రాష్ట్రీయ శిక్షామహత్త్వమును గుర్తించి భారతి ఆంగ్లేయ శిక్షణాలయములను బహిష్కరించి రాష్ట్రీయ శిక్షణాలయముల నారంభింప మొదలిడెను కాని అవి రాజనైతిక ఆందోళన ప్రబలినపుడవి శిక్షణాలయములుగ బాగుగ ప్రకాశించెడివి. పతన సమయమున నవియు శిథిలము లగుచుండెడివి. రాష్ట్రీయ శిణాలయములలో నూటికి తొంబది తొమ్మిది రాజనైతిక ఆందోళనకు సంబంధించిన ఉత్థాన పతనముల ననుస రించుచు లుప్తప్రాయము లయ్యెను. కాని గురకుల శిక్షణాలయములు మాత్రము రాజనైతిక ఆందోళన వలన నేర్పడు ఆఘాతపరంపరను నిరంతరము సహిం చుచు జీవించుటయేకాక క్రమవికాసమును సంపాదించుకొన గలిగినవి. అవి ప్రభుత్వముతో నెట్టి సంబంధము పెట్టుకొనక స్వతంత్రములై రాష్ట్రీయ శిక్షాదీపమును నిరంతరము ప్రజ్వలింపజేయుచుండెను. నేటి స్వాధీన భారత ప్రభుత్వ మీ సత్యము నంగీకరించినను అంగీకరింపకున్నను స్వరాజ్యము లభింపక మానదు. ప్రభుత్వ నాయకు లెల్లరు "గురుకులములకు సంబంధించిన నిజమైన రాష్ట్రీయ శిక్షణాలయము వాని యాధారభూత పద్ధతి మాత్రమే రాష్ట్రము యొక్క మానసిక దాస్యమునకు మందు" అని ముక్తకంఠ ముతో ఘోషించుచుండెడివారు.

సంఘసంస్కరణము

మనదేశపు నైతిక పతనమునకు ముఖ్యకారణము సాంఘిక దురాచారములే యనుట సర్వసంమత విషయము. పుట్టుకతో వచ్చు కులభేదములు, అస్పృశ్యతయనెడి భయంకర వ్యాధి, స్త్రీలు చదువరాదనుట వారియెడ సంఘము నందుగల నైచ్యభావము మున్నగు రోగ కీటాణువులు జాతిని ఎంతగా నిర్బలము చేసినవో చెప్పజాలము. జాతికి సంభవిం చిన ఈ రోగముల నివారణతో బాటు భారతజాతి స్వాధీనతను సమీపింప ప్రారంభించిన దనుటయునెల్లరికి తెలిసిన విషయమే. రాజ్యక్రాంతి అంతిమ స్థితికి చేరువయైనపుడు ఈ సాంఘిక రోగములు బొత్తిగా నశింపకపోయినను వాని మూల ములు మాత్రము తప్పక శిథిలములయి నవని స్పష్టము కాదొడగెను. జాతిపంక్తిభేద బంధనములను తొలగించుటయందును, అస్పృశ్యతాభూతమును పారదోలుట యందును, స్త్రీలను శిక్షితలనుజేసి వారికి సంఘమున సున్నత స్థానము నొసంగుట లోను ఆర్య సమాజమన్ని సంఘములకంటె ముందంజవేసిన తదనుటను ఆర్య సమాజ ఘోరవిరోధియు నంగీకరింపకపోడు. అర్వాచీన భారతమున మహర్షి దయానంద స్వామి ప్రథమ సంస్కర్తయై సాధారణ జనులలో కూడ సామాజిక జాగృతిని కలిగించెను. దయానంద స్వామి గాంధి మహాత్ముని కంటె ఆరువిదయేండ్లు ముందు సమాజ సంస్కరణ రూప మంగళాచరణము చేయని పక్షమున సత్యాగ్రహము సఫలమై ఉండెడిది కాదు. భారతదేశమున అధిక భాగములో సంఘ సంస్కరణ యోజనలను కార్యాన్వితము చేయు శ్రేయస్సు ఆర్య సమాజమున కియ్యక తప్పదు.

ఇరువదియవ శతాబ్దపు మొదటి నలువది సంవత్సరముల చరిత్రపై దృష్టి

సారించినచో ఉత్తర భారతమున నెల్ల ప్రాంతములందును ఆర్య సమాజ కార్యకర్తలు సంఘ సంస్కరణాగ్ర దూతలుగా మనకు కనిపింతురు. ఒకప్పుడు బడోదారాజ్యము శిక్షాప్రచారమునందును, సంఘసంస్కరణము నందును ముందంజవేసినట్లు అంగీకరింపబడుచుండెడిది. గాయక్వాడ సయాజీరావు మహారాజును సంస్కరణ వైపునకు ప్రేరణచేసిన శ్రేయస్సు వారి మానసిక గురువు నిత్యానంద స్వామి మహారాజునకు లభించెనని తజ్ఞులు చెప్పుదురు. ఆ నిత్యానంద స్వామికి సంబంధించిన సంస్కరణల, కేంద్రితము చేసిన మహానుభావుడు అమృతసర్‌కు చెందిన ఆర్య సమాజికుడైన రాజ్యరత్న పండిత ఆత్మారామ్ గారై యుండిరి. నిత్యానంద స్వామి, పండిత ఆత్మారామ్ ఇరువురును ఆర్య సమాజికులే. ఇట్లే ఎక్కడెక్కడ సంఘ సంస్కరణ దుర్ఘటమగుచుండెనో యటనట ఆర్య సమాజ కార్యకర్తలు మైదానమున దూకుచుండెడివారు.

స్వామి హత్యకు కారణము

సత్యాగ్రహ ప్రారంభ కాలములో అందు ఆర్య సామాజకులు అసాధారణ ఉత్సాహముతో పాల్గొనినట్లు ఈ వ్యాసము మొదట వ్రాసియుంటిని. ఆయాందోళనము వారికి ధార్మిక భావనతో ఓతప్రోతమై యున్నట్లు తోచి యట్లు చేసిరి. క్రీ.శ. 1922-23 సంవత్సరములో ఆయాందోళన శిథిలమైనందున నొక క్రొత్త పరిస్థితి యేర్పడినది. యూరపు మహా యుద్ధమున విజయము సాధించిన మిత్ర రాజ్యములు ఖిలాఫత్‌ను నాశనము చేసి భారతదేశపు ఖిలాఫత్ ఆందోళమునంతయు చేసరి. సాధారణ మహమ్మదీయులును ఖిలాఫత్‌పేరుతోనే కలిసి గాంధీ మహాత్ముని సత్యాగ్రహాందోళనము నందును పాల్గొనిరి. కాని ఖిలాఫత్ అంతము కాగానే మహిమ్మదీయులు కాంగ్రెసు నుంజి వైదొలలగిరి. కాని వారిలో సంఘీభావము దృఢపడెను. వారిపైమౌల్వీల ప్రధానత చరమ సీమ నందుకొనినది. ఈ పరిస్థితిలో భారత దేశమున సాంప్రదాయక సంఘర్షణ ప్రారంభమయ్యెను. మలబార్, ముల్తాన్ మున్నగు ప్రాంతములలో హిందువులపై భయంకరమైన ఆక్రమణులు జరిగెను. అప్పుడు జీవిత సంస్థయైన ఆర్య సమాజము శాంతిపూర్ణములైన ఉపాయములతో ఆ యాక్రమణలకు ప్రతిరోధమేర్పరుప లిగెను. దీనిని మొదట మహమ్మదీయ నాయకులు, వారి దృష్టితోనే జూచు రాజకీయ నాయకులు కొందరు ఆర్య సమాజము మీద దోషారోపణ జేయదొడగిరి. జైలు నుండి బయటపడిన మౌలానా మహమ్మద్ అలీ, మౌలానా షౌకత్ అలీ సోదరులు పైకి రాష్ట్రవాదులుగా కనబడుచు, హృదయములందు సంప్రదాయ వాదులైన మహమ్మదీయులకు నాయకులైరి వారుచెప్పిన మాటలను నమ్మి గాంధీ మహాత్ముడు కూడ ఆర్యసమాజమును దోషిగా నిశ్చయించెను. తన ఈ నిశ్చయమును మిక్కిలిగా త్వరపడి "యంగ్ ఇండియా"లో ప్రచురించెను. మహాత్ముని యా ఏక పక్షీయలేఖ ఆర్య సామాజికుల హృదయములకు మిక్కలి బాధకలిగించెను. ఆ లేఖ ద్వారాగాంధీ మహాత్ముడు వాస్తవముగ ఆర్య సమాజమునకు మిక్కిలి యన్యాయ మొనరించిన వాడయ్యెను. అందువలన నాయన తరువాత తన లేఖల మూలమున ఆదోషమును పరిమార్జనమును చేయుటకు యత్నించెను. కాని తన మొదటి లేఖవలన నాటిన కంటకములను దూరము చేయజాలక పోయెను. ఆ లేఖవలన ఏర్పడిన సుదూర పరిణామములలో మనము శ్రీ శ్రద్ధానంద స్వామి, రాజపాల్ మహాశయుల హత్యలు పరిగణింపవచ్చును.

ఆర్య సామాజికుల రాష్ట్రియ భావన మిక్కిలి గంభీరమైనది. కాని పక్షమున పైన వర్ణించిన ఘటనల పరిణామరూపమున ఆర్య సమాజ సదస్యులు రాష్ట్రియ ఆందోళనము నుండి విముఖులై యుండెడివారు. వారి రాష్ట్రీయత రాజకీయ నాయకుల సామయిక లేఖల మీద ఆధారపడినది కాదు. అది దయానంద మహర్షి ద్వారమున నేర్పడిన నిష్కలంక దేశభక్తిపై ఆధారపడినది. అందువలననే రాజనైతిక నాయకులలో కొందరి వ్యవహారముతో నసంతుష్టలయినను ఆర్య సామాజికులు స్వాధీనతా సంగ్రామము నుండి వేరుకాజాలక పోయిరి. వారు నిరంతరము పాతిక సంవత్సరముల వరకు జరిగిన యెల్లపోరాటము లందును గాంధీ మహాత్ముని నాయకత్వము నంగీకరించి సహకరించుచునే యుండిరి. దూర దృష్టిలేని రాజకీయ నాయకుల దుర్వ్యవహారము కారణముగ స్వాధీనతా యజ్ఞమున తనను ఆహుతి నొనర్చుటకు వెనుకంజ వేసిన ఆర్య సామాజికుని ఒక్కనినిగూడ నేనెరుగను. స్వరాజ్యమహిమ అంతిమ ఫల సమాప్తి వరకుదయానంద మహర్షి శిష్యులు తమ ధర్మముగా నుంచి సేవ యొక్క అగ్రిమ శ్రేణిలో ముందంజవేయుచునే యుండిరని దృఢముగా చెవీవీప్పవచ్చును.

నిజామ్‌ను ఖలీఫాగా నెంచుము

భారత దేశ స్వాతంత్ర్య ఘోషణానంతరము ఆర్య సామాజికుల అద్భుత దేశభక్తిని ప్రకటించుసమయము మరియొకటిసంభవించెను. రోపా ఖండమునకు సంబంధించిన దేశములు టర్కీఖలీపాను అంత నర్చు సమయమున భారతదశపు మహమ్మదీయులు హైదరాబాద్ నిజామ్‌ను ప్రపంచమున కంతటికి ఖలీఫాగా అంగీకరించుడని ఆంగ్లేయ ప్రభుత్వము నెదుట ఒక తీర్మానమును ప్రతిపాదించిరి. ఆ సమయమున నిజామ్ కూడ ఆతీర్మానమును ప్రతిఘటింపడయ్యె. అందువలన భారతదేశపు మహమ్మదీయులు, నిజామ్ ఇరువురు నీ విషయమున సంమతి కలిగిన వారైనట్లు స్పష్టమయ్యెను. అవకాశము లభించినచో హైదరాబాద్ శాసకుని పేరు భారతదేశమున ఉన్నత పథమున నలంకరింప జేయ జూచిరి. ఆంగ్లేయులు భారతదేశమును విడిచి పోయిన పిమ్మట వారిలో నిద్రించియున్న భూతము మేల్కొనెను. నిజామ్ అతని సహచరులు భారతమున నేరుగ స్వాతంత్ర్య పతాకమును ఎగురవేసిరి. దరిద్రులైన ప్రజల రక్తమును త్రాగి ప్రోగుచేసిన స్వర్ణభండార సహాయముతో నిజామ్

అకతాయులైన రజాకారుల సేననొక దానిని సమకూర్చెను. ఆ సేన హైదరాబాద్ రాజ్యమునందు నివసించు హిందువులను కొట్టి వారి ధనసంపదలను దోచుకొన నారంభించెను.

భారత ప్రభుత్వము నిజాం రాజ్యముపై పోలీసు చర్య ప్రారంభింపక పూర్వము ఆర్య సామాజికు లా సంస్థానమున ప్రాణము లను అరచేత నుంచుకొని రంగమున ప్రవేశింపకున్న పక్షమున ఆ రాజ్యమునం దలి హిందువుల దుర్దశ వర్ణింప నలవికాక యుండెడిది. ఆ కొలది సంకటమయ దినములలో ఆర్య నవయువకులు రజాకారుల దుండగముల నెదుర్కొని పరిస్థితి నెంతగానో కాపాడి యుండిరి.

హైదరాబాద్‌ను రజాకార్ శాసనము నుండి స్వతంత్రము చేయుటలో ఆర్య నవయువకులు చేసిన ప్రశంసనీయ కార్యములు చరిత్రలో ప్రకటింప బడకున్నను విస్మరణీయము లెన్నడును కాజాలవు.

నిష్కామ బలిదానము

భారతదేశ స్వాతంత్ర్యము కొఱకు ఆర్య సమాజికులొనర్చిన బలిదానములకు ప్రేరక కారణము స్వార్థ మెన్నడునుకాదు. అది కేవలము ధర్మము. వైదిక ధర్మియైన ఆర్యుడు నిత్యము నిట్లుదేవుని ప్రార్థించును. "అదినాః స్యామ శరదః శతమ్" దాస్యజీవనము-దీనజీవన మతని ధర్మమునకు ప్రతికూలము. ఇట్టి ధర్మముతోనే ప్రేరితులై అవసందలకు పాలైనను భీతచెందక నేటి వరకును కర్తవ్య పాలన మొనర్చుచునే యున్నారు. ఇక ముందును ఇట్లే ప్రవర్తింపగలరని ఆశించుచున్నాము. ఇంతవరకును ఉద్యోగాపేక్షతో గాని, పదవీ కాంక్షలతో గాని, ఆర్య సామాజికులు ప్రేరితులు కాలేదు. ఇక ముందును నిజమైన ఆర్యుడట్లు కాజాలడు. వారు స్వాధీనతను ధర్మముగా నెంచి యందులకు పోరాడిరి. భవిష్యత్తు నందును రాష్ట్రము సంకటము నెదుర్కొనవలసి వచ్చిన అట్టి విశుద్ధ ధార్మిక భావనచే ప్రేరితులై కార్యక్షేత్రమున ప్రవేశింతురని విశ్వసింపనగును. దయానంద మహర్షి అనుయాయులకు ఈ యాశయే శోభ నొసంగును.

ఆర్య సమాజం

ఆర్య సమాజ సిద్ధాంతాలలో స్వదేశీ ప్రేమ నిండి ఉంది. ఆర్య సిద్ధాంతములు, ఆర్య శిక్షణలు రెంటిలోను ప్రాచీన భారత యశస్సు గానము చేయబడినది. ఆ విధంగా వారి అనుయాయులలో రాష్ట్రీయ గౌరవ భావన జాగృతి చేయబడినది. ఈ శిక్షణ వలన వారి దేశ చరిత్రలో పరాభవ కథలే లేనట్లు తెలిసికొనగలరు. దేశభక్తి, రాజనీతి పర్యాయ వాచకాలు కావు. రాష్ట్రీయత దేశభక్తిలో ప్రవృత్తి కలిగియుండుట రాష్ట్రీయ గర్వభావనా జాగృతి స్వాభావిక పరిణామమే.

బ్లంట్
(జనగణన అధ్యక్షుడు), జనగణన నివేదిక 1911.
వాల్యూమ్ 15, పార్ట్ 1 చాప్టర్ 4, పేజి 135

सैलेन्ट हार्टएटाक (हृदयआघात) के बाद पुर्नजन्म पाने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना के प्रधान द्वारा सभा के तत्वावधान में अपनी आयु व स्वास्थ्य की कामना से अपने जन्म स्थान में आयोजित

द्वि-दिवसीय यजुर्वेदीय महायज्ञ में

आत्मीय निमन्त्रण

दि. १५, १६, अक्तूबर २०२२ शनिवार व रविवार प्रातः ९-३० से

स्थान : गुरुमठकल गाँव, बोरबण्डा ताण्डा

आशिर्वाद देने के लिए महात्मा व विद्वान भाग ले रहे है । **स्वामी रामदेव जी** के भाग लेने की सम्भावना है । आप सभी महानुभाव सादर आमंत्रित है ।

సైలెంట్ హార్ట్‌ఎటాక్ (గుండెపోటు) తదుపరి పునర్జన్మ పొందిన ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అధ్యక్షులైన శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారి ద్వారా సభ ఆధ్వర్యంలో ఆయుః ఆరోగ్యాన్ని కోరుతూ జన్మస్థానంలో ఏర్పాటు చేయబడిన

ద్విదివసీయ యజుర్వేదీయ మహాయజ్ఞమునకు

ఆత్మీయ ఆహ్వానము

తేది 15, 16 అక్టోబర్ 2022 శనివారము, ఆదివారము ఉ॥ 9-30 గం॥ల నుండి

స్థలము : గురుమిట్కల్, బోరబండ తాండ

యజ్ఞములో పాల్గొని ఆశీర్వదించుటకు మహాత్ములు, విద్వాంసులు పాల్గొనుచున్నారు. స్వామి రామ్‌దేవ్ గారు వచ్చే అవకాశం కూడ కలదు. అందరు పాల్గొనగలరని మనవి.

हारना आवश्यक हो जाता है
हरिवंशराय बच्चन

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपनों से हो !
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपने आप से हो ! !
मंजिले मिले, ये तो मुकद्दर की बात है
हम कोशिश ही न करे ये तो
गलत बात है
किसी ने बर्फ से पूछा कि,
आप इतने ठडे क्यू हो ?
बर्फ ने बडा अच्छा जवाब दिया
मेरा अतीत भी पानी मे
मेरा भविष्य भी पानी मे
फिर गरमी किस बात पे रखू?

స్వరాజ్య సందేశము-ఆర్య సమాజము

రచన : కళాప్రపూర్ణ పం. గోపదేవ్ శాస్త్రి

ధర్మ ఏవ హతో హన్తి, ధర్మో రక్షతి రక్షితః ।

తస్మాద్ధర్మో నహంతవ్యో మా నో ధర్మో హతోఽవధీత్ ॥

ధర్మహాని జీవనహాని, ధర్మ రక్షణజీవన రక్షణ. కావున ధర్మ హాని తగదు. హత ధర్మము మానవ జీవనమును హతము జేయకుండునుగాక.

ధర్మము చతుర్విధ పురుషార్థములలో మొదటిది. అధర్మ జీవనము పశు జీవన మనబడును. అందువలననే యొక కవి యిటు నుడివి యున్నాడు.

ఆహార నిద్రా భయ మైథునాని సామాన్య మేతత్ పశుభిర్నిరాణాం ।

ధర్మో హి తేషా మధికో విశేషః ధర్మేణ హీనాః పశుభిః సమానాః ॥

ఆహారము, నిద్ర, భయము, సంతానోత్పత్తి కనువగు క్రియము నను నీ నాలుగింటిలో మానవులకును నితర ప్రాణులకును నెట్టి భేదము లేదు. మానవులలో ధర్మమనున దొక్కటియే విశేషము. అది లేని మానవులు పశుతుల్యులని కవి యభిప్రాయము.

కావున ధర్మ పరిరక్షణ మానవ జీవన లక్ష్యములలో ప్రాథమిక మైనది. మానవులు జీవన నిర్వాహణమునకై అర్థకామములను సైత మర్థింతురు. అందువలన అవియును పురుషార్థములు-పురుషునిచే నర్థింప బడునవిగా లెక్కింపబడినవి. కాని, యవి ధర్మయుక్తము కానినాడు అనర్థములగును. ధర్మ పూర్వకములైన మోక్ష దాయకము లగును. కావుననే భారతీయులకు ధార్మిక జీవనము ప్రాణప్రదము ఋషులు, మునులు ధర్మమును మోక్షదాయకముగా నెంచి ధార్మికులైరి. అందువలననే కణాదుడు

"యతోఽభ్యుదయ నిఃశ్రేయస సిద్ధిః స ధర్మః"

అభ్యుదయ నిఃశ్రేయస సిద్ధికి సాధనము ధర్మమని చిత్రించి యున్నాడు.

నేడు విశ్వమానవులలో విజ్ఞాన కాంక్ష మిక్కుటముగా ఉన్నది. రష్యా, అమెరికా, ఇంగ్లాండు, జర్మనీ మొదలగు దేశము విజ్ఞాన క్షేత్రమున నెంతో అభివృద్ధిని సాధించినవి. అర్థ సంపాదనలో కూడ ఒక దేశమును మరియొక దేశము మించు చున్నది. మిక్కుటమగు ధనము ఉపయోగించి విజ్ఞాన రంగమున అనేకములగు చిత్ర విచిత్ర వస్తుజాతము ఆవిష్కరించు చున్నారా ఆ దేశవాసులు. సమీపములో ఉన్న గ్రహాంతరముకు కూడ పయనము చేయ ప్రయత్నించుచున్నారు. కాని ధర్మ దృష్టి మానవులలో క్షీణించినది. అర్థ దృష్టి పెరిగినది. జీవన మర్థమయ మగుచున్నది. అర్థముతో పాటు కోరికలు-కామనలు పెరుగుట సహజము, దాని ఫలితముగ మానవుడు భూతమున తృప్తినొందక గ్రహాంతర గమనమున కుద్యక్తుడగు చున్నాడు. ధర్మ విరహితములగు అర్థకామములు మానవునకు లోకము నందును మోక్షదాయకములు-సుఖ సాధనములు కావు. ఇయ్యది భారతేతర దేశవాసులు గుర్తించినట్లు కానరాదు.

ప్రస్తుత భారతదేశము కూడ ఇతర దేశముల అనుసరించుటలో తన శ్రేయస్సు గలదని యెంచుట దురదృష్టము. ధాన్యముల అభివృద్ధి ఒనర్చుటలో నేమి, భౌతిక విజ్ఞానము ఆకాంక్షించుటలో ఏమి, విద్యా విధానముల ఏర్పరచుటలో ఏమి, వస్తు సంపదను పెంచుటలో ఏమి, భారత నాయకులకు పాశ్చాత్య దేశానుకరణము పరమలక్ష్య మైనది. పరిపాలన పద్ధతియే అమెరికా, బ్రిటనుల అనునరించి రచియింపబడినది. మన నాయకులెల్లరు పాశ్చాత్య విద్యా విభూషితులగుటం జేసి వారంతకు మించి ఆలోచింప జాలకున్నారు. మౌలికత (స్వంత ఆలోచన) వారిలో పూజ్యం. ఆర్షదృష్టి ఇంతకంటెను సున్న. ఆలోచనలలోను, విధాన నిర్మాణములోను, నిశ్చిత సిద్ధాంతముల ఆచరించుటలోను, అన్నింటను పాశ్చాత్యానుకరణమే కాని భారతీయత అనునది దేశనాయకులందు కనిపింపకుండుట శోచనీయము. అందువలననే భారతీయులలో కూడా విద్యావంతులు నేడు ధర్మచింతన, ధర్మ చర్యలు, ధర్మాచరణము అన్నియు శ్రేయోదాయకములని ఎంచకపోగా అనర్థ దాయకములనియు ధర్మాచరణకు ప్రయత్నించుట వెనకకు పోవుటయనియు, ప్రగతి సాధనము కాదనియు నెంచు చున్నారు. బౌద్ధ, జైన, చారువాక (భౌతిక) క్రైస్తవ, మహమ్మదీయాది మతమతాంతరములనెడి వాగురు (వుచ్చు)లలో జిక్కి యధార్మికులై భారతీయులు జీవనలక్ష్యమునకు దూరులగుచున్న విచారింప కున్నారు. రాత్రింబవళ్ళు అర్థం, కామం తక్క వేరొక విషయమే వారికి గోచరింప కున్నది. అర్థకామములువలదని మా అభిప్రాయము గాదు. అర్థ కామములు పురుషార్థములలో ప్రాచీన భారతీయులు గణించియున్నారని ప్రప్రథమముననే నుడివి యున్నాముకదా ! కాని అర్థకామములు ధర్మయుక్తములు కావలెను. అట్లు కానినాడు అవి అనర్థములగు అనియు నటనే వచించి ఉన్నమాట మరువరాదు. ధర్మాపేతములైన (ధర్మములేని) అర్థకామములు పాశ్చాత్య దేశములలో నింతకు పూర్వము కలిగించినట్టియు, నిప్పుడు కలిగించుచున్నట్టియు ముందు కలిగింపనున్నట్టియు అనర్థములు విజ్ఞులకు కండ్లకు కట్టినట్లు కనబడుట లేదా ? అధర్మోపేతులైన వారి చేజిక్కిన

అణుబాంబుహిరోషిమా హత్యాకాండకు కారణము కాలేదా ? లక్షలాది మానవ ప్రాణులనుకూడా నామరహితం చేయ లేదా ? ఫ్రాన్సు దేశవాసుల అణుబాంబుల పరీక్షణలు ఈజిప్టువాసుల మొరలాలకించు చున్నవా ? ధర్మాపేతులైన తెల్లవారి శాసన కార్యముచే చేయు నీగ్రోల దూరణ హోమము నిత్యము పత్రికా ముఖమున చూచుట లేదా ? ధర్మాపేతమగు మత వైషమ్యము నిత్యకలహములకు దారీ తీయుట కనులార గాంచుట లేదా ? వీటి కన్నిటికి మూలము ధర్మముక్తముకాని యర్థకామముల ప్రబల్యము కాదా ! కాకున్న మరోక కారణమేమో విజ్ఞులు వివరింపగలరా ? కాబట్టి అర్థకామములు ధర్మ సంయుతములు కావలయు ననుటయే పై వాక్యముల అభిప్రాయము.

"ధర్మము అభ్యుదయ నిఃశ్రేయస్సులకు సాధనము" అను మహర్షి వాక్యము పూర్వమే ఉల్లేఖించియుంటిమి. అభ్యుదయ మిహ పరాభివృద్ధి, ఐహికాముష్మిక, సుఖ సంపదలకు తోడ్పుడునది ధర్మమగును. ఇట్లు సుఖ సంపదల అభివృద్ధి అందించుచు, దుఃఖలేశములేని సుఖము ఒనగూర్చుటయే దాని పరమావధి.

ఆ ధర్మమునుతెలుపునది వేదము, "వేదోఖిలో ధర్మమూలమ్" సమస్త వేదములు ధర్మమూలము, ధర్మసాధనమని మనువు వాక్యము, వేదములు మానవులకు ధర్మమున ప్రవృత్తి కల్గించుటకై సర్గారంభమున నీశ్వరునిచే ప్రసాదింపబడిన జ్ఞానరాశి. భారతదేశమున వేద ప్రచారము జరిగినంత కాలము దేశమున అనర్థములకు తావు లేకుండెను. అది సన్నగిల్లిన కొలది భారతదేశము దుఃఖముల పాలైనది. క్రమముగ పరాధీనమై ప్రపంచమున తన అస్తిత్వమునే కోల్పోయినట్లయినది. బహుకాల మిట్లు దురవస్థలపాలై చివరకు నవయుగ ప్రవర్తకులైన దయానంద మహర్షి ప్రభృతి మహా పురుషుల ప్రయత్న ఫలముగ నేడు మన మందరము స్వతంత్ర వాయుమండలమున తిరుగాడుచున్నాము. దేశ స్వాతంత్ర్యమునకు పాటుపడిన సంస్థలలో మహర్షి దయానంద స్థాపితమైన (ఆర్య సమాజము) "అగ్రగణ్యమనుట అసత్యము కాదు. దేశీయ నరేశులలో విజ్ఞాను కల్గించి, దేశ ప్రేమను వారి హృదయములలో నాటి, దేశ స్వాతంత్ర్యము కొరకు వారి నేకముకండని, ప్రప్రథమమున బోధించిన మహనీయుడు దయానందుడు. పారతంత్ర్య శృంఖలముల నుండి దేశమును విముక్తి ఒనర్చుటకై దేశ ప్రజలందరు స్వదేశ వస్తువులను వాడుట అవసరమని బోధించినవాడు దయానందుడే. దేశ విముక్తికి పరభాషను వదలి, స్వదేశ విద్యలను నేర్చుట ముఖ్యమని ఎంచి, గురుకులమును స్థాపించి, జాతీయ విద్యకు బీజములువేసినవాడు దయానందుడే. పారస్పరిక వివాదములను పరిష్కరించు కొనుటకు బ్రిటిష్ పద్ధతుల అవలబించు న్యాయస్థానముల కేగవలదని చెప్పి కోర్టులను బహిష్కరించిన మహనీయుడు దయానందుడే. భారతదేశమునకు రాష్ట్రభాష ఇంగ్లీషు కాకూడదనియు, దాని స్థానమును ఆర్య భాష (హిందీ) ఆక్రమించుకొనవలె ననియు ఉద్బోధించిన వాడు దయానందుడే. కులమమత వైషమ్యములు, జాతి భేదములు, అస్పృశ్యత వంటి యమానుషాచారములు భారత గౌరవమును కళంకిత మొనర్చిన వని ఎంచి వానినికూకటి వేరులతో పెరికి వేయ నిరంతరము దీక్ష వహించి కృషి ఒనర్చిన వాడు దయానందుడే. అవైదికములు అనార్షములునగు జడదేవతా పూజలు, అనేక దేవతా వాదములు, వ్యక్తిపూజలు అవతారవాదము. మానవుని ప్రగతికి ఆటంకములై అభ్యున్నతి నరికట్టి జడుల ఒనర్చినవని చెప్పి, వాని నిర్మూలమొనర్ప యత్నించుచు తుదకు అందులకే జీవనము అర్పించినవాడు దయానంద మహర్షియే. ఇవియేకాక ఇట్టి మహోన్నత లక్ష్యము అనేకములు సాధించుటకుగాను కాంగ్రెసు కంటే అనేక వర్షములముందు దయానందు డీదేశమున ఆర్య సమాజమును, ప్రజాస్వామ్య పద్ధతులపై స్థాపించి ఉన్నాడు. "స్వరాజ్యము నా జన్మ హక్కని" చెప్పిన లోకమాన్య బాలగంగాధర తిలకు కంటె పూర్వము స్వరాజ్య పదము ప్రప్రథమమున ఉచ్చరించిన మహనీయుడని చెప్పుకొనబడు దాదాభాయి నౌరోజీకంటె పూర్వమే.

"కోయీ కిత్‌నా హీ కరే పరంతూ జొ స్వదేశీయ రాజ్య హెూతా హై వహ సర్వోపరి ఉత్తం హెూతా హై ! అథవా, మత మతాంతర్ కే ఆగ్రహరహిత, అపనే సర్ పరాయే కా పక్షపాత శూన్య, పితా మాతాకే సమాన్ ప్రజాపర్ కృపా, న్యాయ్, ఔర్ దయా కే సాథ విదేశియోంకా రాజ్య భీ పూర్ణ సుఖదాయక నహీఁ హై"

"ఎవడెంత జేసినను స్వదేశీయ రాజ్యమే అన్నింటికి మించి ఉత్తమ మగను. మతమతాంతరముల నిర్బంధములేక, స్వపర పక్షపాత శూన్యమై తల్లిదండ్రుల బోలి ప్రజలను కృపతోను, దయతోను, న్యాయము తోను జూచునదైనను విదేశీయుల రాజ్యము పూర్ణసుఖమును ఒసంగజాలదు" అని ఎలుగెత్తి చాటుటయే కాక సత్యార్థ ప్రకాశమున నాపదముల అంకిత మొసర్చిన దివ్య ద్రష్ట దయానందుడు కాక మరి యెవడు ? ఇట్టి పవిత్ర ధర్మములను ప్రబోధించుటకే ఆ మహర్షి ఆర్య సమాజమును స్థాపించి ఉన్నాడు. ఈ పరమ ధర్మములను ప్రచారమొనర్చి, దేశాభ్యుద యమునకు పాటుపడి, ప్రవాస శిక్షలకు గురియైన పంజాబ్ కేసరి లాలా లజ్‌పత్ రాయ్ నీ దేశమునకు ప్రసాదించినది ఆర్య సమాజమే ! సర్వస్వమును త్యజించి గంగాతీరమున గురుకులమును స్థాపించి, జాతీయ విద్యా ప్రభోధమును ప్రాతిపదికగ నేర్పరచుటయేకాక జాతీయోద్యమమున బ్రిటిష్ వారొనర్చిన అత్యాచారములను సహింపజాలక ఢిల్లీ చాందిని చౌక్‌లో బ్రిటిష్ మిషన్‌గనుల ఎదురుగా రొమ్మువిరచి నిర్భయముగ నిలబడిన ధీర పురుషుడగు

శ్రద్ధానందుని దేశమునకు కానుకగా నిచ్చినది ఆర్య సమాజమే. మహా మేధావియైన గురుదత్త విద్యార్థిని, ధర్మప్రాణులైన పండిత లేఖరాముని, భగత్‌సింగ్ ప్రభృతి సాహసికులగు దేశభక్తులను, విజ్ఞాన వేత్తలను, సత్యనిష్ఠకలవారిని దేశమున కర్పించినది ఆర్య సమాజమే. విజ్ఞానము విరివిగా వ్యాపించిన ఈ రోజులలో కూడ విద్వాంసులకు తత్త్వవేత్తలకు, విభ్రమము కలిగించు వేద విజ్ఞానమును పునరుద్ధరించి లోకమున అందజేయు నిరంతర కృషి ఒనర్చినది ఆర్య సమాజమే. బాల్య వివాహములను నిషేధించి, ప్రౌఢ వివాహము ఆచరణీయములని బోధించు శారదా బిల్లును ప్రప్రథమమున ప్రవేశ పెట్టినది ఆర్య సమాజమే. ఇదియదియననేల దేశాభ్యుదయమునకై సర్వతోముఖమగు ఆందోళనల ప్రారంభించినది ఆర్య సమాజమనిన అతిశయోక్తి యావంతయు లేదు. నేడు రాష్ట్రపితయని దేశభక్తులు గుర్తించు గాంధీ మహాత్ముడు ఆర్య సమాజము ప్రారంభించిన ఉద్యములనే బలపరచినాడనిన విజ్ఞులాశ్చర్య పడరు. ఇట్టిది ఈ ఆర్య సమాజము, స్వరాజ్యము ప్రాప్తించి నందున ఇక ఈ ఆర్య సమాజ ప్రయోజన మేమి ? అనిసందేహింప పని లేదు. స్వరాజ్యము ప్రాప్తించిన విషయము వాస్తవమే. కాని ప్రజలలో స్వదేశప్రేమ అంకురించినట్లు కానరాదు. స్వార్థమును వీడి దేశాభ్యుదయమే తమ అభ్యుదయమని ప్రజ ఇంకను గుర్తింపకున్నారు. దేశమునగల విద్యావంతులు, ధనవంతులు, తమతమ విద్యా, ధనములు మూర్ఖులను, నిర్ధనులను మోసగింప వినియోగించుచున్నారే కాని వారి అభివృద్ధికి గాను వినియోగింపకున్నారు. కుల, మత కక్షలు పూర్వకము కంటె పెరుగుచున్నవి కాని, నశింపవయ్యె. పరదేశములు నేడు పూర్వము కంటె ఎక్కువ తమ ధనమును బుద్ధిని వినియోగించి దేశీయులను పెదదారులను పట్టించుచున్నారు. విమతస్థుల నొనర్చు చున్నారు. విజాతీయతను వారి హృదయమున అంకురింపజేయు చున్నారు. విద్యాదాన నెపముతో, చికిత్సావ్యాజముతో, ఆహార పదార్థముల నందజేయుచున్నామను సాకుతో బీద జనులలో, మూర్ఖులలో క్రైస్తవులు అరాష్ట్రీయ భావనలను రేకెత్తింప జేయుచున్నారు. ప్రజలలో, ప్రభుత్వములో నన్నిచోట్లను దేశ సంపదలు దుర్వినియోగం చేయబడుచున్నవి. విజ్ఞాన నెపముతో నాస్తికత్వము దిన దిన ప్రవర్ధమాన మగుచున్నది. నవ నాగరికత పేరుతో విజాతీయత భారతీయులలో విలువకు వచ్చుచున్నది. సాత్విక జీవనము నానాటికి సన్నగిల్లి కృత్రిమ జీవనము, కుటిల ప్రవర్తనలు, కులాచారము అగుచున్నవి. ఇట్టియెడ ఆర్య సమాజము చేయవలసిన ఎంతయో ఉన్నది. ఈ సమాజము ఇతర ప్రాంతములందు జేసిన పని అధికము. మన ఆంధ్రప్రదేశమున నీయది ప్రజలదృష్టి ఆకర్షింపకుండుటకు కారణ మూహింపజాలకున్నాము. ఆంధ్రులారంభశూరులని ప్రసిద్ధి. ఈ విషయమున నా సూక్తియు చరితార్థము కాదయ్యెను. మన గ్రామములలోను ఆహారమునకు కొరత లేదు. వస్త్రముల కభావము లేదు. చదువలకు న్యూనత లేదు. నాగరికతకు క్షతి లేదు. అన్ని ఉన్నవి కాని జీవనములో సౌందర్యము లేదు. జనులలో పరస్పర విశ్వాసం లేదు. జీవనము ధర్మబద్ధము కాదు. నిత్యజీవనములో శీలమునకు గాని, సత్ప్రవర్తనకు గాని తావు కాన్పింపదు. అందువలననే జీవన సౌఖ్యము అనుభవింపలేకున్నారు. కాబట్టి జీవన సౌఖ్యము నొనగూర్చన ఆర్య సమాజ ఎంతవరకు తోడ్పడునో బుద్ధిమంతులు ఆలోచింపుడు. సమాజ సిద్ధాంతములను సహాన భావములతో పరిశీలింపుడు. సత్యము అన్వేషింప బూనుడు. అవిద్యను తొలిగించి విద్యావ్యాప్తికి బూనుకొనుడు. దేశమును విజ్ఞానముతోబాటు, ధర్మాచరణలో శోభిల్ల జేయుదురు గాక.

THE ARYA SAMAJ

The Arya Samajic doctrine has a patriotic side. The Arya doctrine and Arya Education alike sing the glories of ancient India and by so doing arouse a feeling of national pride in its disciples who are made to feel that their country's history is not a tale of humiliation. Patriotism and politics are not synonymous, but the arousing of an interest in national affairs is the natural result of arousing national pride"

BLENT

(Census Commission)

Census Report of 1911,
Vol. XV, Part I, Chap. IV,
Page 135

...पृ. २ का शेष

ने सत्याग्रहियों को मनसा-वाचा-कर्मणा अहिंसा तथा सत्य को अपनाने का जो आदेश दिया था, उसका सत्याग्रहियों ने बहुत अच्छे ढंग से पालन किया।

यहाँ तक विशेष बात उल्लेखनीय है कि श्रीमती सुचेता जी ने महात्मा गाँधी से कहा कि आर्य समाज का जो सत्याग्रह चल रहा है, वह पूर्ण शान्तिमय नहीं है, उसमें हिंसा की मात्रा भी है। महात्मा गाँधी जी से जब श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त मिलने गए तो उनसे गाँधी जी ने उक्त बात की चर्चा की। गुप्त जी ने महात्मा जी से कुछ इस प्रकार कहा, "महात्मा जी, मैं कांग्रेस का कार्यकर्ता हूँ और आर्य समाज का भी। काँग्रेसी होते हुए और काँग्रेस-सम्बन्धी सत्याग्रह करते हुए मैंने यह स्पष्ट अनुभव किया है कि आर्य समाज का यह सत्याग्रह काँग्रेस के उन सत्याग्रहों से कई गुणा शान्तिमय है। मैंने कुछ ऐसे उदाहरण भी प्रस्तुत किए किससे मेरा कथन महात्मा जी को ठीक लगने लगा। मेरे कथन से महात्मा जी को पूर्ण सन्तोष हो गया और उन्होंने हमारे सत्याग्रह को अपना आशीर्वाद दिया।

शासन को झुकना पड़ा

हैदराबाद सत्याग्रह में आए जनता का लगभग दस लाख रुपया व्यय हुआ। इस पूरी राशि को श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त हैदराबाद शासन से वसूल करना चाहते थे। वे सर अकबर हैदरी, जो तत्कालीन निज़ाम शासन के मुख्यमन्त्री थे, उनसे स्वयं इस विषय में बात नहीं करना चाहते थे। शासन ने कुछ भी रक़म देना अस्वीकार कर दिया था।

श्री गुप्त जी दिनांक २४, २५ और २६-६-१९३९ को महात्मा गाँधी से मिले और उन्हें सारी बातें बतलाई, जिससे गाँधी जी पूर्णतः सन्तुष्ट हुए। महात्मा जी ने एक पत्र सर अकबर हैदरी को दिया अथवा टेलीफ़ोन पर कहा कि दस-पन्द्रह लाख रुपए देने में हैदराबाद के हिज़ एक्सीलेंसी हाईनेस (निज़ाम) कुछ गरीब नहीं हो जाएंगे, जब कि आर्य समाज के पास इतनी बड़ी रक़म ख़र्च करने की शक्ति नहीं है। महात्मा जी ने पर्याप्त कड़े शब्दों में यह बात कही थी। परिणामतः, हैदराबाद शासन को झुकना पड़ा और उसने लगभग पन्द्रह लाख रुपया आर्य समाज को दिया। इस राशि से न केवल सत्याग्रहियों के आने-जाने का ख़र्च ही पूरा हुआ, अपितु उनके व्यवसाय मेंजो हानि हुई उसका भी उन्हें आंशिक हर्जाना मिला।

सर अकबर हैदरी से बातचीत

भारत के प्रसिद्ध राजनैतिक नेता श्री देशबन्धु गुप्त हैदराबाद राज्य-सरकार से बातचीत करने के लिए हैदराबाद आए क्योंकि 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' का आग्रह था कि हैदराबाद के आर्य समाजियों की माँगों को सुधारों द्वारा पूर्ण करने के जो प्रयत्न किए जा रहे हैं, इस क्रम में कुछ बातों का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण होना चाहिए। श्री देशबन्धु जी ने प्रधानमन्त्री सर अकबर हैदरी से विस्तारपूर्वक बातचीत की। इस अवसर पर राजनैतिक विभाग के मन्त्री नवाब मेंहदीयारजंग, पुलिस-विभाग के मन्त्री श्री टासकर, ग्रहमन्त्रालय के सचिव जवाब अलीयावरजंग तथा डायरेक्टर-जनरल पुलिस श्री क्राफ्टन भी उपस्थित थे। इस समझौते की बातचीत के फलस्वरूप सारी बातों पर प्रकाश डाला गया तथा निज़ाम सरकार इस बात पर तैयार हो गई कि वह सभी सत्याग्रहियों तथा दूसरे आर्य बन्दियों को मुक्त कर देगी, उनके जुर्माने मुआफ़ कर दिए जाएंगे, जब्त की हुई सम्पत्ति लौटा दी जाएगी, जिन्हें नौकरियों से बिलग कर दिया गया है, पुनः उन्हें सेवाकार्य में ले लिया जाएगा।

हुमनाबाद में चार हत्याएँ

हुमनाबद में जुलूस के अवसर पर ३ मार्च को आक्रमण किया गया। 'इत्तेहादुल मुसलमीन' के कुछ शरारती सदस्यों ने आर्य समाजियों पर आक्रमण कर दिया जिसके कारण एक नवयुवक आर्य समाजी श्री शिवचन्द्र जी तथा उनके चार साथी श्री लक्ष्मण जी, श्री नरसिंहराव जी और श्री राव शहीद हो गए। श्री शिवचन्द्र जी लिंगायत-मत से सम्बन्ध रखते थे। उन्होंने मेरे एक भाषण से प्रभावित होकर वैदिक धर्म को स्वीकार कर लिया था। उन्होंने मेरे एक भाषण से प्रभावित होकर वैदिक धर्म को स्वीकार कर लिया था। इसके बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी और एक सच्चे धर्म-प्रचारक के रूप में रात-दिन वैदिक धर्म के प्रचार में रत रहे। शिवचन्द्र जी ने वैदिक धर्म के शत्रुओं का जिस निडरता, साहस तथा उत्साह के साथ सामना करते हुए आर्य समाज की सेवा की है, उसे भुलाया नहीं जा सकता। उनके बलिदान से मुझे जो दुःख हुआ, उसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है।

चिंचोली और गुंजोटी में वार्षिकोत्सवों की अनुमति नहीं दी गई थी। विजयदशमी के जुलूस पर प्रतिन्ध लगा दिया गया था। १० दिसम्बर १९४२ को गुलबर्गा में गोदामों तथा बाज़ार को लूटकर मुस्लिम गुण्डों ने आग लगा दी जिसके कारण हिन्दू व्यापारियों को बहुत हानि उठानी पड़ी। नागर कर्नूल में श्री बाबास्वामी और श्री साम्बामूर्ति पर आक्रमण किए गए। इस घटना की जाँच के लिए मैं नागर कर्नूल पहुँचा और एक व्यापारी के घर पर ठहरा। आवश्यक पूछताछ के लिए मैंने वहाँ दो दिन बिताए। पहले दिन रात के समय उस घर को अरबों तथा अन्य गुण्डों ने घेर लिया। इस घटना के अवसर पर 'आर्य समाज महबूबनगर' के अध्यक्ष श्री के. सिद्धिलिंगप्पा तथा श्री कनके मालप्पा जी मेरे साथ थे। आक्रमणकारी कई घंटों तक मुझे मार देने की योजना बनाते रहे, पर उन्हें सफलता न मिल सकी। मैं दूसरे दिन हैदराबाद लौट आया।

हिंगोली में गंगावीर जी पर गुण्डों ने आक्रमण किया, किन्तु आक्रमणकारियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के स्थान उलटा छः आर्य समाजियों का चालान कर दिया गया जोगीपेठ, मनीरखेड़ा तथा अन्यस्थानों पर विभिन्न बहानों के माध्यम से आर्य समाजियों को सताने और डराने के प्रयत्न किए जाते रहे। मुस्लिम गुण्डों के इन आक्रमणों तथा पुलिस के अत्याचारों की निज़ाम सरकार को पूरी जानकारी थी, किन्तु उसे कभी कोई कार्यवाही करने का साहस नहीं होता था। विपरीत इसके, 'समाज' के मार्ग में नाना प्रकार की कठिनाइयाँ उपस्थित करके इसे मिटा देने की चिन्ता में वह लगी रहती थी॥

ಓಂ

ಸೈಲೆಂಟ ಹರ್ಟ ಅಟ್ಯಾಕ್ (ಹೃದಯಾಘಾತ) ಆದ ನಂತರ ಪೂನರ ಜನ್ಮ ಪಡೆದವರು
ಆರ್ಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿ ಸಭಾ, ಆಂಧ್ರ ಪ್ರದೇಶ – ತೆಲಂಗಾಣದ ಪ್ರಧಾನರ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿ
ಸಭೆಯ ತತ್ವಾವಧಾನದಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ವಯಸ್ಸು ಹಾಗೂ ಆರೋಗ್ಯ ಕ್ಷೇಮಾಭಿವೃದ್ಧಿಗಾಗಿ ತಮ್ಮ ಜನ್ಮಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ
ಆಯೋಜಿಸಲಾಗಿರುವ

ದ್ವೀ ದಿವಸೀಯ ಯಜುರ್ವೇದಿಯ ಮಹಾಯಜ್ಞಕ್ಕೆ ಆಗಮಿಸಲು

ಆತ್ಮೀಯ ನಿಮಂತ್ರಣ

ದಿನಾಂಕ: 15, 16 ಅಕ್ಟೋಬರ್ 2022 ಶನಿವಾರ ಮತ್ತು ರವಿವಾರ
ಸ್ಥಾನ: ಗುರುಮಠಕಲ ಗ್ರಾಮ, ಬೋರಾಬಂಡಾ ತಾಂಡಾ.

ಗುರುಮಠಕಲ ಗ್ರಾಮ (ಕರ್ನಾಟಕ) ನಾರಾಯಣಪೇಠ ದಿಂದ 20 ಕಿ.ಮೀ. ದೂರದಲ್ಲಿದೆ. ಬೋರಾಬಂಡಾ ತಾಂಡಾ ಗುರುಮಠಕಲ್ ಗ್ರಾಮದಿಂದ, ಗುರುಮಠಕಲ್–ಯಾದಗೀರ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಗುರುಮಠಕಲದಿಂದ 4 ಕಿ.ಮೀ. ದೂರದಲ್ಲಿದೆ. ಗುರುಮಠಕಲ್ ಗ್ರಾಮಕ್ಕೆ ಪರಿಗಿ – ಕೊಡಂಗಲ ಮಂಡಲದ ಮಾರ್ಗವಾಗಿ ಆಗಮಿಸಬಹುದು ಅಥವಾ ನಾರಾಯಣಪೇಠ ದಿಂದ ಎಕ್ಸಪ್ರೆಸ ಮಾರ್ಗವಾಗಿ ಬರಬಹುದಾಗಿದೆ.

ಯಜುರ್ವೇದಿಕ ಮಹಾಯಜ್ಞ ದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿ ಆಶಿರ್ವಾದ ಕೊಡುವ ಸಲುವಾಗಿ ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ನಾಯಕರು, ಮಹಾತ್ಮರು ಹಾಗೂ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಭಾಗವಹಿಸುತ್ತಲಿದ್ದಾರೆ.

ಯಜ್ಞ ಬ್ರಹ್ಮಾ : ಆಚಾರ್ಯ ಸೋಮದೇವ ಶಾಸ್ತ್ರಿಜೀ ಮುಂಬಾಯಿ.
ವೇದ ಪಾಠ : ಗುರುಕುಲ ಓಡಿಚೆಡ ಹಾಗೂ ಗುರುಕುಲ ಮಲಕಪೇಟದ ವಿದ್ಯಾರ್ಥಿಗಳು
ಮುಖ್ಯ ಅತಿಥಿಗಳು : ಸ್ವಾಮಿ ಪ್ರಣವಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿಜೀ, ದೆಹಲಿ.
ವಿಶಿಷ್ಟ ಅತಿಥಿಗಳು : ಸ್ವಾಮಿ ಆರ್ಯವೇಶಜೀ, ದೆಹಲಿ.
ಅತಿಥಿಗಳು : ಸ್ವಾಮಿ ಬ್ರಹ್ಮಾನಂದ ಸರಸ್ವತಿ ಜೀ, ಪಾತಾ ರಾಜಪೇಟ, ಕಾಮರೇಡ್ಡಿ
ಆಚಾರ್ಯ ಉದಯನ ಜೀ, ಗುರುಕುಲ ಓಡಿಚೆಡ, ಸಿದ್ದಿಪೇಟ
ಆಚಾರ್ಯ ಧನಂಜಯ ಜೀ, ಗುರುಕುಲ ಪೌಂಧಾ, ದೇಹರಾದೂನ.
ಸ್ವಾಮಿ ಆದಿತ್ಯಾವೇಶಜೀ, ದೆಹಲಿ
ಸುಶ್ರೀ ಸಹೋದರಿ ಪ್ರವೇಶ ಜೀ, ದೆಹಲಿ
ಸುಶ್ರೀ ಸಹೋದರಿ ಪೂನಮ ಜೀ, ದೆಹಲಿ

ಶ್ರೀ ವಿಠ್ಠಲರಾವ ಆರ್ಯಜೀ ರವರ ಕರೆಯ ಮೇರೆಗೆ ಅನೇಕ ವಿದ್ವಾನರು, ಆಚಾರ್ಯರು, ಪ್ರಮುಖ ಮಹಾನುಭಾವರು ಹಾಗೂ ಆರ್ಯಬಂಧುಗಳು ದ್ವೀ–ದಿವಸೀಯ ಮಹಾಯಜ್ಞ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೋಳ್ಳಲು ಆಗಮಿಸುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಆದ್ದರಿಂದ ತಮ್ಮೆಲ್ಲರಿಗೆ ವಿನಂತಿಸಿಕೊಳ್ಳುವುದೇನೆಂದರೆ ಈ ನಮ್ಮ ನಿಮಂತ್ರಣವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿ ಮಹಾಯಜ್ಞ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸಂಖ್ಯೆಯಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಗೊಳಿಸಬೇಕೆಂದು ವಿನಂತಿ.

ಇಂತಿ ತಮ್ಮ : ಶ್ರೀ ವಿಠ್ಠಲರಾವ ಆರ್ಯ
ಪ್ರಧಾನರು, ಆರ್ಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿ ಸಭಾ, ಆಂಧ್ರ ಪ್ರದೇಶ, ತೆಲಂಗಾಣ ಹಾಗೂ ಮಹಾಮಂತ್ರಿ
ಸಾರ್ವದೇಶಿಕ ಆರ್ಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿ ಸಭಾ,
ನವ ದೆಹಲಿ.

श्राद्ध और तर्पण का वैदिक व्यावाहारिक स्वरूप

- संकलनकर्ता-पुरोहित आचार्य विष्णुपद शास्त्री
(एम.ए.बी.एड)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में श्राद्ध और तपर्ण का वैदिक स्वरूप बताते हुए जो लिखा है उसका सरल भाव यह है कि पितृयज्ञ के दो भेद है। एक श्रद्धा दूसरा तपर्ण।

जिस क्रिया से आचरण व्यवहार या भावना से सत्य को ग्रहण किया जाएं उसे श्रद्धा कहते हैं। वैदिक कर्तव्य कर्मों के करने में जो निष्टा है, आस्था विश्वास है वह श्रद्धा हैं। इस श्रद्धा के भाव से युक्त होकर जो पितर-जन अर्थात् जिन्होंने जन्म दिया, पाला पोसा, पढ़ा लिखाकर बड़ा किया उन में माता पिता बड़े भाई, बहन, दादा, दादी और ज्ञान देने वाले विद्वान अध्यापक गुरुजन आदि जो वर्तमान में जीवित हैं, उन सबकी सेवा-सुश्रुषा, भोजन, वस्त्र, धन और समय से स्नेह पूर्वक करनेका नाम श्राद्ध है।

श्राद्ध जीवितों का ही होता है। मरे स्वजनों का नहीं। क्योंकि मरने पर आत्मा हमारे कर्मानुसार, चौरासी लाख योनियों में से किसी शरीर में चला जाता है, और पुराने शरीर को स्वजन श्मशान में जला देते है और शरीर जिन पंचतत्वों से ईश्वर ने बनाया था, वह उन्हीं पंचतत्वों में जलकर ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार अपने पांच भौतिक कारणों में विलीन हो जाता है। अंव उसके कोई भी कभी भी कही भी किसी भी प्रकार से नहीं मिल सकता इसलिए जो मर चुके हैं उनके नाम से किसी भी व्यक्ति पण्डित पुजारी को धन, अन्न वस्त्र, जूते, चम्पले और दूध आदि देते हैं वे उनके पास कुछ भी नहीं पहुँचता है। उनके नाम से सब दूसरे अज्ञानी अवैदिक कर्मकांड करने वाले पण्डे पुजारी लोग खा जाते है, यह एक शास्त्र तर्क युक्ति कसौटी और कॉमन सेन्स, समझदारी के विपरित काम है इसलिए नहीं करना चाहिए और श्रद्धा पूर्वक अपने निर्माण में योगदान देने वाले जो भी उपकारक माता-पिता, दादा-दादी, गुरुजन और विद्वान हैं उनकी सेवा करनी चाहिए। हमेशा न की मात्र वर्ष में एक बार १५ दिन तक।

"मातृदेवो भव। पितृदेव भव"

अर्थात् हमारे माता-पिता देव हैं। उन्होंने हमे जन्म दिया है। हमारा लालन पालन किया है। हमें पढाया लिखा है। हम नग्न थे उन्होंने हमारा तन ढाका है। हमारे निर्माण में हजारों कष्ट दुःख सहे हैं और अपने सुखों का त्याग हमारे लिए किया है। इस लिए हमें उनके जीवित रहते उनकी खूब सेवा सुश्रुषा करनी चाहिए कभी भी उनकी आँखों में आंसू नही आने देना चाहिए। यही सच्चा श्राद्ध है। अपने प्रयासों से उन्हें भोजन आदि से सदैव तृप्त करना प्रसन्न रखना है उसे ही तर्पण कहते हैं। क्योंकि एक पिता ही पूरी दुनियाँ में ऐसा इंसान है जो सारी दुनियाँ से तो जीतना चाहता है पर अपने बच्चों से हारना चाहता है। माँ से बढकर धरती पर बच्चों के निर्माण में उनके लालन पालन में कष्ट उठाने वाला व्यक्ति नहीं है। इसलिए इनके जीवित रहते श्रद्धा पूर्वक की जाने वाली पूर्ण सेवा का नाम श्राद्ध है और जो श्रद्धा से वे तृप्त होते है आँखों में खुशी के आंसु लिए जब वे आशीर्वाद देते है। माथा चूमते हैं उस तृप्ती का नाम ही वास्तविक तर्पण है।

Shravani photos of Nalagonda Arya Samaj

నిస్తేజం నుంచి.. ఉత్తేజం వైపు!

నిజాం రాజ్యంలో ప్రజలు నిరక్షరాస్యులు. అసఫ్‌జాహీల శాసనాల అమలు మినహా అప్పటి పౌరులకు వేరే గత్యంతరం లేదు. ఎలాంటి హక్కులు తెలియవు. బానిసత్వమే బతుకుగా జీవించేవారు. వెట్టిచాకిరిని విధిగా నిర్వహించేవారు. ఆ దశలో జరిగిన కొన్ని సంఘటనలు వారిలో చైతన్యాన్ని కలిగించాయి. తమ అభిప్రాయాలను వ్యక్తం చేసే వీలు కల్పించాయి. స్వదేశీ భావన బలపడేందుకు దోహదపడ్డాయి. నిస్తేజం నుంచి ఉత్తేజం వైపు నడిపించాయి. అందుకు కృషి చేసిన కొందరు నాయకులు రాజ్య బహిష్కరణకు గురయ్యారు. ఆ వివరాలను పోటీ పరీక్షార్థులు తెలుసుకోవాలి.

తెలంగాణలో ప్రజాచైతన్య వ్యాప్తి

అసఫ్‌జాహీల కాలంలో తెలంగాణ బాగా వెనుకబడి ఉండేది. ప్రజలకు ఎలాంటి హక్కులు ఉండేవి కావు. గ్రామాల్లో మక్తేదారులు, పట్టేదారులు అనే భూస్వాములు సర్వాధిపత్యం వహించేవారు. బేగార్, వెట్టిచాకిరి అనే పేర్లతో బానిసత్వం సర్వసామాన్యంగా అమల్లో ఉండేది. అనాటి అక్షరాస్యత 3.3% మాత్రమే.

చందా రైల్వే పథకం

చందా రైల్వే పథకం సందర్భంగా 1883లో హైదరాబాద్ రాజ్య ప్రజల్లో మొదటిసారిగా ప్రజాభిప్రాయం వ్యక్తమైంది. అప్పటికే హైదరాబాద్ నుంచి వాడి వరకు ఉన్న రైలు మార్గాన్ని చందా (మహారాష్ట్ర) వరకు పొడిగించాలని సిద్ధం చేసిన ప్రణాళికే చందా రైల్వే పథకం. దీనివల్ల ఖజానాపై అధిక భారం పడుతుంది. పైగా కొత్త ప్రయోజనాలు ఏమీ లేవు. అందుకే దీన్ని రహస్యంగా ఉంచారు. 1883లో చందా రైల్వే ప్రణాళిక బయటపడింది. దీని గురించి ప్రజల్లో చైతన్యం కలిగించడానికి ముగ్గురు వ్యక్తులు విశేష కృషి చేశారు. అఘోరనాథ చటోపాధ్యాయ, ముల్లా అబ్దుల్ ఖయ్యూం, రెవెన్యూ అధికారి దస్తూర్‌జీ జామాజీ హోసంగ్ తదితరులు నిజాం రాజ్యంలో స్వదేశీ భావనకు మొదటిసారిగా బీజం వేశారు. రైల్వే పథకం వివరాలను ప్రజలకు తెలిపి వారి అంగీకారం తీసుకోవాలని కోరారు. చందా రైల్వే స్కీం వ్యవహారాల కమిటీ పేరుతో ఒక పౌర సంఘాన్ని ఏర్పాటు చేశారు. దీంతో ప్రభుత్వం అఘోరనాథ చటోపాధ్యాయను బల వంతంగా తీసుకెళ్లి షోలాపూర్‌లో విడిచిపెట్టింది. ఈ విధంగా నిజాం రాజ్యం నుంచి బహిష్కరణకు గురైన మొదటి వ్యక్తి అఘోరనాథ చటోపాధ్యాయ. 1883, మే 22న దస్తూర్‌జీ జామాజీ హోసంగ్‌ను రాజ్య బహిష్కారం చేసి పుణెకు పంపారు. చందా రైల్వే స్కీం వ్యవహారంలో 18 మంది నిజాం ప్రభుత్వ ఆగ్రహానికి గురయ్యారని దస్తగిర్ ఖాన్ తన స్వీయచరిత్రలో తెలిపారు. ఈ ఉద్యమాన్ని హైదరాబాద్ రికార్డు, షౌకత్ ఉల్ ఇస్లాం లాంటి పత్రికలు ప్రచారం చేశాయి.

కాంగ్రెస్ ప్రభావం

తెలంగాణ సామాజిక, సాంస్కృతిక చరిత్ర

1885లో ఎ.ఒ.హ్యూమ్ అనే బ్రిటిష్ రిటైర్డ్ ఐసీఎస్ అధికారి భారత జాతీయ కాంగ్రెస్‌ను స్థాపించాడు. దీని ప్రథమ సమావేశం అదే ఏడాది బొంబాయిలో ఉమేష్ చంద్ర బెనర్జీ అధ్యక్షతన జరిగింది. ఉత్తర భారతదేశం నుంచి వచ్చి హైదరాబాద్‌లో పనిచేస్తున్న ముస్లిం అధికారులు కాంగ్రెస్ ఏర్పాటును వ్యతిరేకించారు. వీరిపై అలీగఢ్ ఉద్యమానికి చెందిన సర్ సయ్యద్ అహ్మద్‌ఖాన్ ప్రభావం ఉండేది. జాతీయ కాంగ్రెస్ ఏర్పాటును ఆహ్వానించిన వారిలో ముల్లా అబ్దుల్ ఖయ్యూం, అఘోరనాథ చటోపాధ్యాయ లాంటి ప్రముఖులు ఉన్నారు. నిజాం రాజ్యం నుంచి భారత జాతీయ కాంగ్రెస్‌లో చేరిన మొదటి సభ్యుడు ముల్లా అబ్దుల్ ఖయ్యూం. 1888, అక్టోబరు 18న సికింద్రాబాద్ హెడ్ పోలీస్‌స్టేషన్ ఎదుట కాంగ్రెస్ బహిరంగ సభ జరిగింది. రెండు వేల మంది హాజరయ్యారు. ఈ సమావేశానికి బి.కృష్ణ అయ్యంగార్ అధ్యక్షత వహించగా రామచంద్ర పిళ్లే, ఐ.పోరాట్జీ, సెనాయ్, హరీ సజ్జన్ లాల్, ముత్యాల రామన్న పాల్గొన్నారు. అలహాబాద్‌లో జరిగే జాతీయ కాంగ్రెస్ సమావేశాలకు హైదరాబాద్ నుంచి ప్రతినిధులను పంపించాలని ఈ సభలో తీర్మానించారు. 1889లో చాదర్‌ఘాట్ మెథడిస్ట్ ఎపిస్కోపల్ చర్చికి చెందిన మిస్టర్ గిల్డర్ 'క్రైస్తవ మిషనరీలు-రాజకీయాలు' అనే శీర్షికతో 'ది పయనీర్' పత్రికలో వ్యాసం రాశారు. క్రైస్తవులు కాంగ్రెస్‌కు అనుకూలంగా వ్యవహరించాలని అందులో కోరారు.

ఆర్య సమాజం

ఆర్య సమాజాన్ని 1875లో దయానంద సరస్వతి బొంబాయిలో స్థాపించారు. హైదరాబాద్ రాజ్యంలోని మొదటి ఆర్యసమాజ శాఖను బీడ్ జిల్లా ధారూర్‌లో 1891లో ఏర్పాటు చేశారు. స్వామి దయానంద సరస్వతి హైదరాబాద్ వచ్చి తన ప్రసంగాల ద్వారా ప్రజల్లో చైతన్యం కలిగించారు. ఫలితంగా హైదరాబాద్ నగరంలో 1892లో ఆర్య సమాజ శాఖ మొదలైంది. దీని అధ్యక్షుడు కామతా ప్రసాద్, కార్యదర్శి లక్ష్మణ దాసు. మొదటి ఆర్య సమాజ సమావేశం కంద స్వామి తోటలో జరిగింది. దయానంద సరస్వతి రచించిన సత్యార్థ ప్రకాశిక గ్రంథాన్ని ఆదిపూడి సోమనాథరావు తెలుగులోకి అనువదించారు. సత్యార్థ ప్రకాశిక ఆర్యసమాజానికి ప్రామాణిక గ్రంథం. అఘోరనాథ చటోపాధ్యాయ, కెప్టెన్ సూర్య ప్రతాప్‌జీ, రామకృష్ణ ప్రసాద్‌జీ, పండిత కృష్ణదత్, కేశవరావు కోరాట్కర్, దామోదర్ సాత్వలేకర్, వినాయకరావు విద్యాలంకార్, చందులాల్ ఆర్య లాంటి ప్రముఖులు ఆర్య సమాజాన్ని ఆదరించారు. పండిత బాలకృష్ణ నిత్యానంద బ్రహ్మచారి ప్రచార దాటికి ప్రభుత్వం గుండెల్లో రైళ్లు పరిగెత్తాయి. ప్రభుత్వం ఆర్యసమాజాన్ని అడ్డుకోవడానికి సనాతన ధర్మ మండలిని ఏర్పాటు చేసింది. 1894లో పండిత బాలకృష్ణ నిత్యానంద బ్రహ్మచారిని రాజ్యం నుంచి బహిష్కరించింది.

ఆర్యసమాజం కులాలతో నిమిత్తం లేకుండా ప్రజల్లో నెలకొని ఉన్న మూఢ విశ్వాసాలను తొలగించి వారిని సంస్కరించి హిందూ సమాజాన్ని ఏకం చేసింది.

కార్యకలాపాలు: 1929లో హైదరాబాద్ రాజ్యంలోని కర్ణాటక ప్రాంతంలో 'దీన్‌దార్' ఉద్యమం ప్రారంభమైంది. సిద్దిక్ దీన్‌దార్ అనే ముస్లిం మతస్థుడు తాను లింగాయతుల దేవుడైన చెన్నబసవేశ్వరుడి అవతారమని, ప్రజలంతా ఇస్లాం మతాన్ని అనుసరించాలని బోధించాడు. 'సర్వరే ఆలం' అనే పుస్తకం రాసి, అందులో హిందూదేవతలను అవహేళన చేశాడు. హైదరాబాద్ సంస్థానం వెలుపల నుంచి రామచంద్ర దెహ్లవి, చంద్రభాను లాంటివారు రాజ్యంలో తిరిగి దీన్‌దార్ చేస్తున్న ఈ దుష్ప్రచారాన్ని ఖండించేవారు. అయితే ప్రభుత్వం ఆర్యసమాజం నిర్వహిస్తున్న వేదిక్ ఆదర్శ పత్రికతో పాటు ఆ నాయకులు ఎలాంటి సమావేశాలు జరపకుండా నిషేధం విధించింది. సత్యార్థ ప్రకాశిక గ్రంథం ప్రతులను ప్రభుత్వం స్వాధీనం చేసుకొని నాయకులైన పండిత నరేంద్రజీ, శ్యామ్‌లాల్ వంటివారిని 1938-40లో అరెస్టు చేసి మన్ననూరు జైలులో నిర్బంధించింది. దీంతో రాజ్యంలోని గుల్బర్గా, హుమ్నాబాద్, ఉద్గీర్‌లలో అల్లర్లు జరిగాయి.

అంజుమన్ ఇత్తేహాదుల్ ముస్లిమీన్ అధ్యక్షుడు బహదూర్‌యార్‌జంగ్ ఒక రహస్య సర్క్యులర్ ద్వారా దళితులను ముస్లిం మతంలోకి మార్చాలని ప్రయత్నించాడు. తపాలా శాఖలో పనిచేసే వి.వెంకటస్వామి ద్వారా విషయం తెలుసుకున్న నరేంద్రజీ, శంకరరెడ్డి, బలదేవ్‌సింగ్ లాంటి ఆర్యసమాజ నాయకులు పండిత చంద్రపాల్ సహకారంతో ఇస్లాం మతం పుచ్చుకున్న దాదాపు 10 వేల మందిని శుద్ధి కార్యక్రమం ద్వారా తిరిగి హిందూ మతంలోకి మార్చారు. నిజాంకు గుణపాఠం నేర్పడానికి దేశం మొత్తం నుంచి ఆర్యసమాజ నాయకులు హైదరాబాద్‌కు వచ్చి సత్యాగ్రహోద్యమం చేయాలని నిర్ణయించుకున్నారు. 1938, అక్టోబరు 24న హైదరాబాద్‌లో సత్యాగ్రహోద్యమానికి నాయకుడిగా మహాత్మ నారాయణస్వామిని నిర్ణయించారు. కానీ ప్రభుత్వం ఆయనను అరెస్టు చేసింది. 1939, జనవరి 25న దేశవ్యాప్తంగా హైదరాబాద్ దినం నిర్వహించారు. ఈ సత్యాగ్రహంలో 12 వేల మంది పాల్గొన్నారు. దానికి ఎని

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-09-2022 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To, श्री प्रधान, मन्त्री ज्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-१
delhi_sabha/yahoo.com

విజయదశమి ఊరేగింపు

1938-39లో నైజాం ప్రభుత్వపు అత్యాచారాలకు వ్యతిరేకంగా మరియు తన అధికారాలను సాధించుటకై విజయవంతంగా నిర్వహించబడిన

ఆర్య సత్యాగ్రహము

తదుపరి ప్రారంభింపబడిన దసరా జులూస్ వైభవోపేతంగా ఈ సంవత్సరము కూడ

స్వామి బ్రహ్మానంద సరస్వతి

ఆచార్యులు ఆర్ష గురుకుల్, పాత రాజంపేట్, కామారెడ్డి గారి నేతృత్వంలో తేది 5-10-2022 బుధవారము నాడు సా॥ 4.00 గం॥ల నుండి ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్ నుండి ప్రారంభమగును. ఈ ఊరేగింపు కిషన్‌గంజ్ నుండి ఆర్య సమాజము సుల్తాన్ బజార్ వరకు నిర్వహింపబడును. ఈ ఊరేగింపులో నగర ద్వయానికి సంబంధించిన మహానుభావులందరూ అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని ఊరేగింపును విజయవంతం చేయగలరని కోరుచున్నాము. ఆర్య సమాజ సంస్థలు అధిక సంఖ్య వాహనాలలో జనాన్ని, ఆర్య బంధువుల్ని కిషన్‌గంజ్‌కు తీసుకు రాగలరని ప్రత్యేకంగా కోరుచున్నాము.

భవదీయులు

విఠల్ రావు ఆర్య — ప్రధాన్ సభ
వెంకటరఘురాములు — మంత్రి సభ
ఠాకుర్ లక్ష్మణ్ సింగ్ — ఉపప్రధాన్ సభ,
గోవింద ప్రసాద్ ఉపాధ్యాయ — అధ్యక్షులు, ఆర్య సమాజ్, కిషన్‌గంజ్
బ్రిజ్‌గోపాల్ తివారి - మంత్రి ఆర్య సమాజ్, కిషన్‌గంజ్

సంయోజకులు

ముఖ్య సంయోజకులు : **శ్రీ వైద్యనాథ్**, ఆర్య సమాజము, యాకుత్‌పుర
సహ సంయోజకులు : **శ్రీ అశోక్ కుమార్ శ్రీవాస్తవ్, పం. వేదసింధు, శ్రీ విజయేంద్ర గారు, శ్రీ అర్జున్ కుమార్ శ్రీ జయస్వాల్ గారు, శ్రీ పి. సుధాకర్ గారు, శ్రీ పి. సత్యనారాయణ గారు, శ్రీ ఠాకుర్ దినేశ్ సింగ్ గారు**

ఆర్య బంధువులందరూ అధిక సంఖ్యలో పాల్గొనరని మనవి

विजयदशमी जुलूस

निज़ाम राज्य के द्वारा किए जारहे अत्याचारों के खिलाफ़ अपने नागरिक एवं धार्मिक अधिकारों के लिए आर्य समाज द्वारा १९३८-३९ में चलाए गए

आर्य सत्याग्रह

में विजय पाने तक आर्य समाज संघर्ष करते रहा। सत्याग्रह में विजय पाने के बाद विजय के प्रतीक के रूप में विजयदशमी जुलूस हैदराबाद में प्रारम्भ किया गया। इसी परम्परा में इस वर्ष भी आर्य समाज किशनगंज से ५ अक्टूबर २०२२, बुधवार के दिन सायं ४-०० बजे से

आर्ष गुरुकुल पात राजमपेट, कामारेड्डी के

आचार्य श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी

के नेतृत्व में निकाला जाएगा। यह जुलूस आर्य समाज किशनगंज से आर्य समाज सुल्तान बाज़ार तक जाएगा और वहाँ पर भारी आम सभा में परिवर्तित होगा। सभी आर्य समाजों व आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारे तथा अधिक संख्या में वाहनों के द्वारा लोगों को जुलूस में भाग लेने के लिए लेते आएं। सभी महानुभावों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर जुलूस को सफल बनाएं।

निवेदक

विठ्ठल राव आर्य — प्रधान सभा
वेंकटरघुरामुलु — मंत्री सभा
ठा. लक्ष्मण सिंह — उप प्रधान सभा
गोविंद प्रसाद उपाध्याय — प्रधान आ.स. किशनगंज
बृजगोपाल तिवारी, मंत्री आ.स. किशनगंज

प्रधान संयोजक-**श्री वैद्यनाथ**, याकुतपुरा
सहसंयोजक गण-**अशोक कुमार श्रीवास्तव, पं. वेदसिन्धु, श्री विजयेन्द्र, श्री अर्जुन कुमार जायस्वाल, श्री पी. सुधाकर, श्री पी. सत्यनारायण, श्री ठा. दिनेश सिंह**

सभी महानुभाव अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030